

॥ श्रीहरि ॥

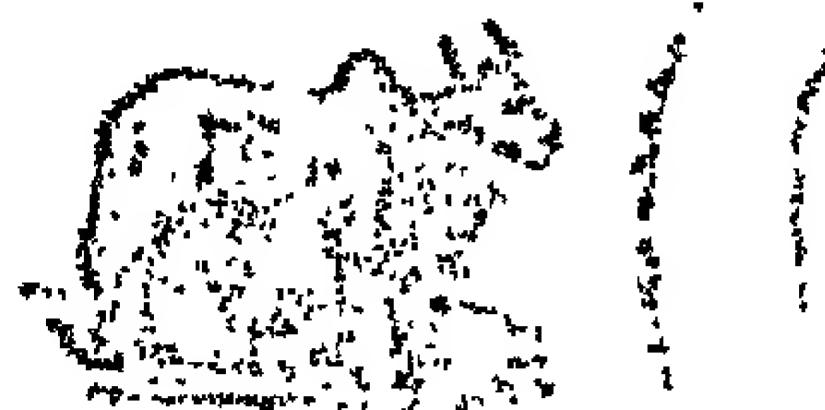
श्रीनाथजीकी प्राकट्य वार्ता

(गोकुलमि श्रीदिव्यामी महामंडप) दृष्टव्य

लूर

श्रीमद्भगवान्विजीका हिन्दू संस्कृत लेखन कार्यक्रम
द्वि० श्री १०५ श्रीदामोदरलालगोपे श्रीदेवी,

श्रीनाथदाराधीश विशाविलालि श्रीखट्टी
तिलक श्री १०८ श्रीगोविन्दलालगी
महाराजकी आशासु



श्रीनाथदारा (विद्यार्थि भागते).

श्रीसुदर्शन यलवालमे दृष्टव्यामी प्रभिष्ठ गोकुल
शा प्राकट्य श्रीनाथदाराधीशकी आदा दिना गोदे दर्हि इदे

सन्नात १९७६

॥ श्रीनाथजी ॥



सरितं प्रत्यहन्तं नहन्तं सीमु चोदनम् ॥
घनच्छटं पीतपटं नहं मन्मुक्तं उमः ॥२॥

॥ श्रीलद्वादशभान्नार्यजी ॥



श्री महाप्रभुजी ।

कृष्णदेव राजा कीमभामें पधारे तानमयको यह चित्र है

—. —. —.

मीमांसाद्वितीयपि विविधिनं वर्तते भास्तव्यं

वेषां कापि सुव्याप्तिर्विनामि विवृतिर्विवाहकः गुरुम् ॥

ग्रन्थाः सन्ति चैवः तुलाः सुव्याप्तिर्विवाहकाः ॥

इन् श्रीपृष्ठपथप्रकाशनपरामिताः अवृद्धमात्रा इति ॥ ३ ॥



श्रीलाभद्रारके द्वाकेत महाशाजनका

वंशावली.

- १ श्रीज्ञानायंजी महाप्रभुजी (श्रीवहूभाजायंजी)
- २ श्रीगुमांडिजी (श्रीविठ्ठलायंजी)
- ३ श्रीगिरिधरजी.
- ४ श्रीदासांदरजी.
- ५ श्रीविठरायंजी.
- ६ श्रीगिरिधारीजी.
- ७ श्रीवडेडाऊजी.
- ८ श्रीविठ्ठलेशजी.
- ९ श्रीगोपधनेशजी.
- १० श्रीवडेगिरिधारीजी.
- ११ श्रीदाऊजी.
- १२ श्रीगोपित्तली.
- १३ श्रीगिरिधारीजी.
- १४ श्रीनांदधनदासजी.
- १५ चिः श्रीदासांदरलालजी.

अनुक्रमणिका.

| नंदर. | काल विषय, | पृष्ठ. |
|-------|--|--------|
| १ | लवंशुजको प्राकृत्य. | ३—४ |
| २ | श्रीलक्ष्मारविंद प्राकृत्य. | ४ |
| ३ | दुर्दशाज चरित्र. | ४—५ |
| ४ | सद्गुरुपांडिके प्रति साक्षात् जाना, | ५—६ |
| ५ | सद्गुरुपांडिके वर आय इच्छांत कहितो, | ६—७ |
| ६ | सद्गुरुपांडिके लिरक्तें एक गाय जावेकी जाना, | ७ |
| ७ | सद्गुरुपांडिके लिरक्तें गाय करवेकी वर्सदातको साक्षात् जाना, | ७—८ |
| ८ | गोडिया नाथचान्द प्रति साक्षात् जाना, | ८—९ |
| ९ | एक दूष्टीके बजवासीको जानना, | ९ |
| १० | एक सनकपुराके बजवासीको जानना, | ९—१० |
| ११ | श्रीनाथजीके रक्षार्थी चार ल्युहनको प्राकृत्य, | १० |
| १२ | श्रीजाचार्यजीको श्रीनाथजी ज्ञारखंडें श्रीगिरिराज पधार सेवा प्रगट करवेकी जाना करने, | १०—११ |
| १३ | श्रीजाचार्यजीको बज पधारनो तथा श्रीविश्रान्त घाटपेकी धन्त्रकावा दूर करनी, | ११—१२ |
| १४ | श्रीनाथजी नहाप्रसुको श्रीगिरिराज पधारनो जोर श्रीनाथजी कहाँ प्रगट सबे हैं सो त्वो जनो, | १२—१३ |
| १५ | श्रीजाचार्यजीको श्रीगिरिराजपे पधारनो जोर श्रीनाथजीमुँ मिलवे जोर प्रगट करनो, | १३—१४ |
| १६ | श्रीनाथजीकी जानानुसार श्रीजाचार्यजी पाट केठायें तथा सेवाको- नकार दांवें पृथ्वीपरिकाकूं पवारे, | १४ |
| १७ | भास्तुदेही गयो गूवरी, | १५—१६ |
| १८ | गोदवरीकी लेलो नूजरी | १६ |

| नंबर. | लाग विषय. | रुप. |
|-------|---|-------|
| २९ | अडीगढ़ो प्रजवासी गोमत खाल. | २५ |
| ३० | आगरेके ब्राह्मणों छोरा. | १३-१४ |
| ३१ | सखातरको मांडलिया पड़ि | २२-२३ |
| ३२ | टोडके घंतों चतुरताना नामह एवं भगवदगीत. | २४ |
| ३३ | पूर्णमल क्षत्रियों मंदिर वनवायिष्ठी स्त्रियों एवं शशा. | २५ |
| ३४ | पूर्णमल क्षत्रियों प्रज आइनों. | २५ |
| ३५ | हीरामणी उन्नाहुं मंदिर वनवायिष्ठी स्त्रियों शशा. | २२-२३ |
| ३६ | श्रीजीके नवीन मंदिरों आरंभ. | २२-२३ |
| ३७ | श्रीजीको नवीन मंदिरमें पाटेत्तुष. | २२-२३ |
| ३८ | श्रीजीको नवीन मंदिरमें भंडान. | २२-२३ |
| ३९ | श्रीनाथजीके लिये श्रीआचार्यजी लक्ष्मी शुकरी हीठी उन्नाये और एक गाय भंडान. | २४-२५ |
| ४० | श्रीनाथजीको गोविन्द कुड़े पथारनो. | २५ |
| ४१ | श्रीनाथजी वंगालीनकी लेयामें अप्रसर भये और विनाशित होना. | २५ |
| ४२ | श्रीआचार्यजीके महाप्रभुनको स्वभाव पथारनो. | २२-२३ |
| ४३ | श्रीआचार्यजीके पथम पुत्र आगोरीसाम्यजीको गाड़ी विशेषों. | २५ |
| ४४ | श्रीपुहणोउमजी स्वभाव पथार. | २५ |
| ४५ | श्रीगंगानाथजी स्वभाव पथार. | २५ |
| ४६ | श्रीगुरुद्विजलो गारो विशेषों और देवतानाहु राज दुर्गे विशेष सेवाने गमनों. | २५ |
| ४७ | श्रीबीकी भाजानुभाव गोदेन्द्र श्रीशत्रुघ्नी शत्रुघ्नी विशेष विशेष शेष विशेष. | २२-२३ |
| ४८ | पंडित वारकर्णसुरी क्षमित्रिनाथजीके कर्तव्य नोट. | २५ |
| ४९ | वारकर्णसुरी श्रीर विशेष विशेष राज विशेष विशेष श्रीनाथजीके नोट. | २२-२३ |
| ५० | वारकर्णसुरी श्रीनाथजीके वाराण्य इरोन भवे श्रीर विशेष विशेष. | २२-२३ |

| नंबर. | नाम विषय. | पृष्ठ. |
|-------|--|--------|
| ४१ | माधवेन्द्रपुरीके परलोक भैयेकी वार्ता पश्च मास पीछे सुनके श्रीगुसाईजी खेद किये. | २९-३० |
| ४२ | माधवेन्द्रपुरीको जीवन चरित्र. | ३०-३१ |
| ४३ | अष्ट सखा वर्णन | ३१ |
| ४४ | काशीके एक नागर ब्राह्मणकी वार्ता. | ३१-३२ |
| ४५ | सब ब्रजवासीनने मिल श्रिजिकूँ गाय भेट कीनी. | ३२ |
| ४६ | श्रीगुसाईजीने श्रीनाथजीके खरच आदि प्रमाण वांध्यौ. | ३२ |
| ४७ | ब्रजवासीनकी दहेंडी बंद तथा चलू करवो. | ३३-३४ |
| ४८ | श्रीगुसाईजीने गायनके खिरक बनवाये और चार ग्वाल रखें. | ३४ |
| ४९ | श्रीजीने गोपीवल्लभमें आठ लड्डुवा चुराय ग्वालतकूँ वाटे. | ३४-३५ |
| ५० | श्रीनाथजी चावलके खेतके रखवारेकूँ दो लड्डुवा दिये. | ३५ |
| ५१ | श्रीनाथजीके राजभोगमें ब्रजवासीनकी दहेंडी नहीं आई जासुः- आप सुवर्ण कटोरा गूजरीके घर धरके दही आरोगे. | ३५-३६ |
| ५२ | श्रीनाथजी रूपाके कटोरासें दहीभात आरोगे. | ३६-३७ |
| ५३ | श्रीनाथजी श्याम ढाकपे छाक आरोगे. | ३७ |
| ५४ | श्रीजी श्रीगुसाईजीकी घर मथुरा पधारे श्रीगुसाईजी सर्वस्व अर्पण किये तहां होरी खेलके पांछे गिरिराज पधारे. | ३७-३८ |
| ५५ | श्रीजीको होरी खेलवौ. | ३८ |
| ५६ | श्रीजीको श्रीगिरिराज पधारवो तथा श्रीगुसाईजीसुँ मिलवौ. | ३८-३९ |
| ५७ | श्रीजीके कक्षयको टूक डारमें उरझरहो. | ३९-४० |
| ५८ | श्रीजी छोटे बागाकूँ छोटो स्वरूप धरिके अंगकार किये. | ४० |
| ५९ | श्रीजी रूपमंजरीके संग चोपड़ खेले. | ४०-४१ |
| ६० | आकबर पात्थाहकी वेगम बीबी ताज़. | ४१ |
| ६१ | श्रीनाथजी अटारी ढूवायनेकी आज्ञा किये, | ४२ |
| ६२ | कल्याण जोतिषीकी कथा तथा श्रीगिरिधारीजीको श्रीमथुरेशजीके स्वरूपमें लीन हेवो. | ४२-४३ |
| ६३ | श्रीदामोदरजी गादी विराजे. | ४३ |

| नंबर. | माम विषय. | पृष्ठ. |
|-------|---|--------|
| ६४ | कटार पांधवेको शृंगार. | ४४ |
| ६५ | भैया वंधुनके झाडेमें श्रीविठुलरायजीको आगरे पधारनो, श्रीजीसुं विनती करवो, श्रीजीकी आज्ञा तथा पात्साहकोभी श्रीजीकी आज्ञा प्रमाण झगडो चुकायवो. | ४४-४५ |
| ६६ | श्रीविठुलरायजी श्रीजीको टिपारेको शृंगार किये. | ४५ |
| ६७ | श्रीजीकूँ श्रीगिरिधरजी वसन्त खिलाये और ढोल भुलाये. | ४५-४६ |
| ६८ | श्रीगोकुलनाथजी श्रीजीकूँ फाग तथा वसन्त खिलाये. | ४६ |
| ६९ | श्रीगुसाईजीतो मेवाडके रास्ता होयके द्वारका पधारनो ओर सिंहाड नामक स्थलमें श्रीजीके पधारवेकी भविष्य वाणी आज्ञा करनी ओर राणाजी तथा राणीजी आदिको सेवक करने. | ४६-४७ |
| ७० | श्रीजीको नित्य मेवाड पधारवो ओर अजबकुंवरीसो चौपड खेलवो तथा मेवाड पधारवेको नियम करवो. | ४७-४८ |
| ७१ | श्रीनाथजीने मेवाड पधारवेकी सुषिकर एक असुरको श्रीगिरिराजते उठाय देवेका प्रेरणा कीनी. | ४९ |
| ७२ | देशाधिपतिने एक हलकारा श्रीजीद्वार पठायो. | ४९ |
| ७३ | श्रीगिरिधारीजीके लीलामें पधारवेआदिको संक्षेप वृत्तान्त. | ४९-५० |
| ७४ | लीलामें पधारे श्रीगिरिधारीजी श्रीगोविंदजीको श्रीजीकी आज्ञा नुसार मेवाड पधारवेको सविस्तर वृत्तान्त आज्ञा किये. | ५०-५१ |
| ७५ | श्रीगिरिराजसुं श्रीनाथजी मेवाड पधारवेको पहिले आगरे पधारे. | ५१-५२ |
| ७६ | दो जलधारिया सेवा ओर सभाको अलौकिक पराक्रम. | ५२-५३ |
| ७७ | अठारमी वेर पात्साहकी फोज्ज श्रीगिरिराज आई महजित बनवाई. | ५३ |
| ७८ | श्रीजी आगरे पधारे ताको सविस्तर वृत्तान्त. | ५३-५४ |
| ७९ | श्रीनवनीतप्रियजीको आगरे पधराये ताको सविस्तर वृत्तान्त. | ५४-५५ |
| ८० | श्रीगोविंदली देशाधिपतिके हलकारैनकूँ आज्ञा किये ओर गुस अन्न-कूटको उत्सव आगरेमें कर आगे पधारे. | ५५ |
| ८१ | श्रीनाथजीको दंडोतघाटमें पधारनो. | ५५-५६ |
| ८२ | हलकारानने श्रीजीके आगरे पधारवे आदिकी खबर दीनी. | ५६ |

| नंबर. | नाम विषय. | पृष्ठ |
|-------|--|-------|
| ८३ | म्लेच्छ श्रीजीके पाढ़े गयो. | ६६-६० |
| ८४ | कृष्णपुर पधारवेके लियें गंगावाईके प्रति श्रीनाथजीकी आज्ञा. | ६० |
| ८५ | श्रीगुंसाईजी श्रीबालकृष्णजीकूं वरदान दियो. | ६०-६१ |
| ८६ | गुंसाईजीके वरदानसूं ब्रजरायज्ञी श्रीजीको संवा सत्ताईस दिन किये. ६१-६२ | ६१-६२ |
| ८७ | श्रीब्रजरायज्ञीकूं आये ज्ञान श्रीजी गंगावाईको आज्ञा किये- | ६२ |
| ८८ | श्रीजीकी आज्ञा गंगावाईने श्रीगोविंदजीसाँ कही. | ६२ |
| ८९ | श्रीगोविंदजीको विप्रयोग भयो ताको वृत्तान्त. | ६३ |
| ९० | अद्वाईसमै दिन श्रीगोविंदजीने श्रीब्रजरायज्ञीकूं निकासे. | ६४-६५ |
| ९१ | श्रीनाथजी मेवाड तक प्रवासमै केसे पधारे ताको वर्णन. | ६६-६७ |
| ९२ | दंडोतीघाटसूं श्रीनाथजी कोटा तथा बूंदी पधारे. | ६७ |
| ९३ | श्रीनाथजी जोधपुर पधारवेकूं कोटा बूंदीसूं पुष्करजी पधारे. | ६७-६८ |
| ९४ | श्रीनाथजी जोधपुर पधारवेकूं पुष्करजीसूं कृष्णगढ़ पधारे. | ६८-७० |
| ९५ | श्रीजी मारवाड़ पधारत पेंडेमै वीमलपुरके वेरागीकूं दर्शन दीने. | ७०-७४ |
| ९६ | श्रीजी जोधपुर पधार चापासेनमै चातुर्मास विराजे. | ७४ |
| ९७ | श्रीगोविंदजी उदयपुर पधार राणाजी श्रीराजसिंहजीसूं श्रीजीके मेवाडमै विराजवेको निश्चय किये. | ७५ |
| ९८ | श्रीजी मेवाडमै पधारे ताको सविस्तर वृत्तान्त. | ७५-७७ |
| ९९ | पात्थाहने श्रीजीके मेवाड निशाजवेके समाचार सुनके महाराणा श्रीराजसिंहजीपे चढाई कीनी. | ७८ |
| १०० | जब बादशाह और राणाजीकी फोजके डेरा रायसागर और नाहारमगरेपे गये तब श्रीजी आस बाटरा पधारे. | ७८-८० |
| १०१ | पात्थाहको मेवाडसूं द्वारका जायवेको सविस्तर वृत्तान्त. | ८०-८२ |
| १०२ | श्रीपुरुषोत्तमजी महाराज श्रीजीकूं जडाऊ मोजा थारण करवाये. | ८२-८९ |
| १०३ | श्रीगोविंदनाथजीको शृंगार श्रीवल्लभजीके पुत्र श्रीब्रजनाथजी किये. | ८९-८७ |
| १०४ | श्रीजी गोविंददास चैप्पावके द्वारा सूरजपोर करवायवे किये. | ८७-८९ |
| १०५ | श्रीजी गोपालदास भंडारीको दर्शन देके लीलामै असीक्यर किये. | ८९-९० |
| १०६ | श्रीनाथजीके सेवक माधवदास देसाई. | ९०-९१ |

॥ श्रीगोवर्धनधरो जयति ॥

॥ श्रीगोवर्धननाथस्योद्घववार्ता ॥

अर्थात्

॥ श्रीनाथजीकी प्राकट्यवार्ता ॥

अब श्रीगोवर्धननाथजी के प्रागट्यको प्रकार तथा प्रगट होयके जो जो चरित्र भूमिलोकमें कीने सो श्रीगोकुलनाथजीके वच-
नामृतादिक समूहनमें तें उद्धार करिके न्यारे लिखत हैं ॥

अब नित्य लीलामें श्रीगोवर्धननाथजी श्रीगिरिराज पर्वतकी कन्दुरमें अनेक भक्त सहित अखंड विराजमान हैं। तहाँ श्रीआचार्यजी महाप्रभु सदा सर्वदा सेवा करत हैं। जब दैवीजीवनके उद्धारार्थ भगवद् आज्ञा तें धरणिसण्डलमें प्रादुर्भूत भये, तब आपके सर्वस्व श्रीगोवर्धननाथजी हूँ को अखिल लीला सामग्री सहित ब्रजमें प्रादु-

भर्ति भयो । तामे प्रभाण तथा दर्शनको माहात्म्य गर्गसंहिताके
गिरिराज खण्डमे—

॥ श्लोकः ॥

येन रूपेण कृष्णेन, धृतो गोवर्धनो गिरिः ॥
तद्रूपं चिद्रूपं तत्र राजन् शृङ्गारमण्डले ॥ १ ॥

अब्दाश्वतुः सहस्राणि तथा पञ्च शतानि च ॥
गतास्तत्र कल्पेरादौ क्षेत्रे शृङ्गारमण्डले ॥ २ ॥

गिरिराजगुहामध्यात्सर्वेषां पश्यतां नृप ॥
स्वतः सिद्धं च तद्रूपं हरेः प्रादुर्भविष्यति ॥ ३ ॥

श्रीनाथं देवदमनं तं बद्धिष्यन्ति सज्जनाः ॥
गिरिराजगिरौ राजन् सदा लीलां करोति यः ॥ ४ ॥

ये करिष्यन्ति नेत्राभ्यां तस्य रूपस्य दर्शनम् ॥
ते कृतार्था भविष्यन्ति श्रीगिरेन्द्रे कल्पे जनाः ॥ ५ ॥

जगन्नाथो रङ्गनाथो द्वारकानाथ एव च ॥
बद्रीनाथश्वतुप्कोणे भारतस्य अपि वर्तते ॥ ६ ॥

मध्ये गोवर्धनस्यापि नाथोर्यं वर्तते नृप ॥
पवित्रे भारते वर्षे पञ्च नाथाः सुरेश्वराः ॥ ७ ॥

सद्धर्ममण्डपस्तम्भा आर्तित्राणपरायणाः ॥
तेषां हु दर्शनं कृत्वा नरो नारायणो भवेत् ॥ ८ ॥

चतुर्णा भुवि नाथानां कृत्वा यात्रां नरः सुधीः ॥
न पश्येदेवदमनं न स यात्रा फलं लभेत् ॥ ९ ॥

श्रीनाथं देवदमनं पश्येद्वोवर्धने गिरौ ॥
चतुर्णा भुवि नाथानां यात्रायाश्च फलं लभेत् ॥ १० ॥ इत्युक्तम् ॥

॥ ऊर्ध्वभुजाको प्राकट्य ॥

संवत् १४६६ श्रावण वदी तृतीया आदित्यवार सूर्य उद्दयके कालमें थ्रवण नक्षत्रमें श्रीगोविर्धननाथजीकी ऊर्ध्व भुजाको प्रागट्य भयो ता समय भूमिसंडलमें बडो संगल भयो ॥

एक आन्योरके ब्रजवासीको गौ गमन भयो ताको अन्वेषण करिवे वो श्रीगोविर्धन पर्वत पें गयो । तहाँ मिती श्रावण सुदी नागपंचमी संवत् १४६६ के दिन वाको श्रीगोविर्धननाथजीकी ऊर्ध्व-भुजा को दर्शन भयो । षोडश दिन पर्यंत काहूकूँ दर्शन न भयो तब वानें विचार कियो जो यह कौतुक अबताईं श्रीगिरिराजमें कबहू देख्यो नाहीं हतो । ऐसें कहिकैं दस पांच ब्रजवासिनकूँ बुलाय लायो, उन सबननें ऊर्ध्व भुजाको दर्शन कियो सो दर्शन करिकैं बडे आश्र्यकों प्राप्त भये । तब सबननें सिलि अनुमान कियो जो कोऊ देवता श्रीगिरिराजमें प्रगट भयो है । तहाँ एक वृद्ध ब्रजवासी हतो तानें यह कह्यो जब सात दिन ताईं श्रीकृष्णने श्रीगिरिराज उठायो ओर जब मेहकी वृष्टि होय चुकी तब भूमिमें स्थापन कियो ता समय सब ब्रजवासिनने मिलिकैं भुजाको पूजन कियो सोई भुजा यह है । आप कंदरानमें ठाई हैं ऊर्ध्वभुजाको दर्शन आपनकों दीनो है; ताते निकासवेको विचार तुम सति करो अपनी ही इच्छा तें कोई समय पायकैं आप ही प्रगट होयगे तहाँ ताईं सब या ऊर्ध्वभुजाको दर्शन करो ॥

ऐसें कहिकैं उन ब्रजवासीनने दुर्घ मगायकैं ऊर्ध्वभुजाको स्थान करवाये अक्षत पुष्प, चंदन ओर तुलसी सूं भुजाको पूजन

करत भये और दधि फल मगायके भुजाको भोग धरत भये । नागपंचमीके दिनां भुजाको दर्शन भयो तातें नागपंचमीके दिनां प्रति वर्ष दस बीस सहस्र ब्रजवासीनको मेला जुरतो और काहूकुं ब्रजमें काहू वस्तुकी कामना होती तो भुजाको दुर्घटको स्नान मानते तो वाकी कामना सिद्ध होती तातें संपूर्ण ब्रजमें श्रीनाथ-जीकी भुजाकी महिमा बहोत प्रगट भई काहूकी गाय जाती रहै काहूके पुत्र न होय, काहूकुं शरीरकी आर्ति होय, काहूकुंदूध दहीकी वृद्धि न होय, तो भुजाकी मानता करें तो वाको सर्व कार्य सिद्ध होय ऐसे चरित्र प्रत्येक लिखें तो विस्तार बहोत होय । या प्रकारसों संवत् १५३५ पर्यन्त ब्रजमें भुजा पुजी ॥

॥ श्रीमुखारविन्द प्राकृत्य ॥

पीछे फिरके संवत् १५३५ वैशाख वदी ११ बृहस्पतिवारके दिन शतभिषा नक्षत्र मध्यान्ह काल अभिजित नक्षत्रमें श्रीगोवर्धननाथजीको मुखारविन्द प्रगट भयो । ताही लभ ताही दिन श्रीमदाचार्यजीको प्रादुर्भाव आग्नेकुंडतें भयो और श्रीकृष्णावतारके ब्रजवासी सब ब्रजमंडलमें जहां तहां मनुष्यकुलनमें प्रगट भये तिन सुं अब कीडा करेंगे ॥

॥ दुर्घटपान चरित्र ॥

ओर आन्धोरमें माणिकचंद और सदूदू पांडे दो ब्रजवासी हते तिनके एक सहस्र गाय सदां रहतीं, तामें एक गाय श्रीनन्दरायजीकी गायनके कुलकी हती ताको नाम धूमर सो सब दिवस

गायनमें रहै घड़ी चार दिन पिछिलो रहै ता ब्रिरियाँ सब गायनके समूहमेंतैं न्यारी छांटिके और श्रीगिरिजाजके ऊपर चढ़िहैं श्रोनाथ-जीके श्रीमुखारविन्दके ऊपर स्तन करिके दुध स्वेसो दुध आप अरोगे और प्रातः काल ब्राह्म मुहूर्त होय ता समय फेर दूध स्वत श्रीमुखारविन्दमें करि आवे । या प्रकार छः महिना पर्यंत ऐसेहीं दुध आप अरोगे परंतु काहू ब्रजवासीकों ज्ञान न भयो सो एक दिन माणिकचंद और सद्दू पांडे गायको दूध स्वल्प देखिके गायके पीछे पीछे चले गये और यह सब अलौकिक प्रकार देख दण्डवत् करी ॥

॥ सद्दू पांडिके प्रति साक्षात् आशा ॥

सद्दू पांडिकों साक्षात् श्रीजीके दर्शन भये और श्रीगोवर्धन-नाथजी साक्षात् आशा किए “जो मैं यहाँ श्रीगोवर्धन पर्वतमें रहूं हूं, देवदमन मेरो नामहै; लीलातर करके इन्द्रदमन, देवदमन, और नागदमन, ये तीनो मेरेही नाम हैं; सात दिन ताँई इन्द्रकी वृष्टिको स्तंभन कीनो, ता पाँछे सापराध इन्द्र गतगर्व होयके पांथन पड़यो तब अभयदान दीनो और इन्द्रके गर्वकूँ दूरकियो ताँते मेरो नाम इन्द्रदमन है । और कालीनामको दमन कीनो याते नागदमन मेरो नाम है । और नाग मत्त हस्तीको नाम है ताते कुवलयापीडिको दमन कीनो तथा भक्तनके मन मातंगको दमन करिके मुष्टि गत करके श्रीहस्तकूँ कटिष्ठे स्थापन कीनो है ताते मेरो नाम नागदमन है । अतएव आपके चरणारविन्दके विषें अंकुशको चिह्न है अंकुश बिना हस्तीको दमन न होय । देवदमन मेरो नाम है सो याकारणले

जो अखिल देवताको दृमन कीनो श्रीकृष्णावतारमें अष्टलोकपालनकुं शिक्षा कीनी इन्द्र, कुबेर, चन्द्रमा, वायु, वरुण, सूर्य, यम, अग्नि, ब्रह्मा, शिव, और काम, ये देवता सुख्य हैं ताते इन देवताको दृमन कीनो ताते सेरो नाम देवदृमन है इन्द्रको शिक्षा कीनी सो तो श्रीगोवर्धनधारण करिके। और परिजातापहरण करिके। और शंखचूड वध करिके निधि कुबेरको सोपी और शिक्षा कीनी जो तू निधिकी रक्षा सावधानी सूं कर्यो कर। और शिवको दृमन उखा प्रसङ्गमें कीनो। और ब्रह्माको दृमन तो बछहरण लीलामें अनेक रूप धारिके कीनो। और वरुणको दृमन करिके श्रीनिन्दरायजीको मोचन कीनो और सूर्यकुं दृमन करिके छः पुत्र श्रीदेवकीजीको दिये और यमको दृमन करिके शुरुपुत्रको लाये। और वायुको दृमन तो इन्द्रके संग भयो श्रीगोवर्धन धारण कीनो वा समयमें अनेक प्रकार करिके वायु वृष्टि भई परत्तु सबनको स्तंभन करिके सब वृजकी रक्षा कीनी। और चन्द्रमाको दृमन तो मन रूपो चन्द्रमा प्रगट करिके कीनो। और कामदेवको दृमन तो रासोत्सव कीडा करिके कीनो ऐसे सब देवतानको दृमन कीनो ताते सेरो नाम देवदृमन है ” याप्रकार सूं सहूं पांडे सो श्रीनाथजी साजात् आप आज्ञा किये जो तेरी गायको दूध में नित्य परिवत हों सो आज तें मोक्षो याही गायको दूध डुहिके दोऊ विरियां च्याय जायोकरि। तब सहूं पांडेनें साष्टांग ढंडवत करिके कही “ अवश्य ॥ ”

॥ सहूं पांडेको घर आय दृत्तांत कहिवो ॥

ऐसे कहिके सहूं पांडे नीचे आन्योरमें आये स्त्री भवानी

और बेटी नरोके आगे सब वृत्तांत सविस्तर कह्यो और उनकुं कह्यो “तुम दोऊ खिरियां श्रीगोवर्धननाथजीकुं दूध प्याय आयो करो”। तादिन तें नित्यनरो और भवानी दूध लैके श्रीगिरिराज ऊपर जायके श्रीनाथजीकों दूध आरोगाय आवें

॥ सद्गु पांडेके खिरिकमें एक गाय आवेकी आज्ञा ॥

सो ऐसें करित कोईक काल पीछें वह गाय सूकि गई तब और गायको दूध लैके सद्गु पाडे आरोगावन गये तब श्रीनाथजी आज्ञा किये “जो जेतो श्रीनन्दरायजीकी गायनके कुलकी गाय हो तो ता कोदूध आरोगो सो गाय तो एक दूसरी हूहै या ब्रजमें सो कालि तेरे खिरिकमें आवेगी। जहाँ ताँई पहिली गाय व्यावे तहाँताँई या गायको दूध दुहिके हमकुं प्याय जैयो नित्य प्रति ॥ ”

॥ सद्गु पांडेके खिरिकमें गाय करवेकी धर्मदासको साक्षात् आज्ञा ॥

और जमनावतौ गाममें एक धर्मदास ब्रजवासी हतो सो बड़े भगवत् भक्त हतो सो कुंभनदासको काका लगतहतो और चतुरानगाको शिष्य हतो बाके दोयसें चारसें गाय हती तामें एक गाय श्रीनन्दरायजीके कुलकी हती सो गायनके लेहेडेमेसुं न्यारी होयके श्रीनाथजीके श्रीमुखारविन्दमें दूध सविके वहाँही बैठि रही और घर न गई तब धर्मदासग्वालकुं चिन्ता भई आप कुंभ नदासकुं संगलेय हूंडितेकुं निकसे, ता समय कुंभनदास वर्षदशके हते। श्रीगिरिराजके ऊपर दूंडिते दूंडिते श्रीनाथजीके पास गाय हते। श्रीगिरिराजके ऊपर दूंडिते दूंडिते श्रीनाथजीके पास गाय हती तहाँ देखी घर लैजायवेके लिये अनेक उपायकर्नि परंतु

वह न चली तब श्रीनाथजी साक्षात् आज्ञा किए “ अरे धर्मदास यह तुं गाय सद्दूपांडेके खिरकमें करदे याको दूध में आरोग्यगो यह महतकुलकी गाय है ” और कुंभनदासजीसों श्रीनाथजी साक्षात् आज्ञा किये “ अरे कुंभनदास तू नित्य मेरेपास खेलिवेको आयो करि ” । इसो महा मधुर वाक्य सुनिके उन धर्मदास और कुंभनदासजीकूं मूर्छा आई । एकमुहूर्त पर्यंत । पीछे जागे तब परिक्रमा दीनी और साष्टांग दंडवत् करिके श्रीनाथजीकी आज्ञानुसार वह गाय सद्दू पांडेके खिरकमें करदीनी और अपने घर गये और तादिनसों कुंभनदासजी श्रीनाथजीके पास नित्य खेलवेकूं आवते ॥

॥ गौडिया माधवानन्द प्रति साक्षात् आज्ञा ॥

ऐसे करत एक गौडिया माधवानन्द श्रीगिरिराजकी परिक्रमाकूं आयो सो सद्दू पांडेके यहां एक चेतरा हतो तापै रह्यो सो उन ब्रजवासीनके संगसूं वाकूं श्रीनाथजीके दर्शन भये सो दर्शन करिके वो बहुत प्रसन्न भयो वैष्णव भावनीक हतो चित्तमें यह विचार कियो शुष्क भिक्षा मांग करिके अपने हाथ पासिके रसोई सिद्ध करि श्रीनाथजीको भोग धरिके लैनी । पाछे वह सेवा करन लाग्यो । बनमेसूं गुंजा बीन लावे ताके हार बनायके श्रीनाथजीकूं पहिरावे चांदिका बनमेसूं लायके श्रीनाथजीकूं धरावे सो जब वाने रसोई करिके भोग धन्यो तब श्रीनाथजी आज्ञा किये में तो जब श्रीआचार्यजी आप पधारि अपने खहस्त सों रसोई सिद्ध करिके मोकों अन्नप्राशन करावेंगे तब भोजन करूंगो तहां ताई दूधहीको पानकरि रहूंगो और तेरो जो भोग धरिवेको तथा

शृङ्गार कारिंबको मनोरथ है तो तू पृथ्वी परिक्रमा कर आव, तहां ताँई श्रीआचार्यजी आप पधारेंगे और हमकूं पाट बैठावेंगे तब तोकों सेवामें राखेंगे तहां ताँई हम यहां वृजवासीनमें खेलेंगे यह सुनिके माधवेन्द्रपुरी समयकी प्रतीक्षा करिके पृथ्वी प्रदक्षिणा किये । ऐसें संवत् १५४९ ताँई श्रीनाथजी वृजवासीनको दूध दही आरोगे कबहूं कुंभनदासजीको संग लैके माखन चोरीकूं वृजवासीनके घर पधारे ॥

॥ एक पूँछरीके वृजवासीकी मानता ॥

एक पूँछरीमें वृजवासी हतो तानें देवदमनकी मानता करी जो मेरे बेटाको विवाह होयगो तो मैं या देवदमनको सवामन दूध सवामन दही अरोगाऊंगो सो वाके बेटाको विवाह तत्काल भयो तब वाने सवामन दूध सवामन दही सर्पन कीनो । सो यह बात सुनिके वृजमें देवदमनकी मानता बहुत बढी ॥

॥ एक भवनपुराके वृजवासीकी मानता ॥

एक दिनां एक भवनपुराको वृजवासी हतो वाकी गाय घनेमें खोय गई तहां एक सिंह रहत हतो ताकी चिन्तासूं वाने श्रीदेव-दमनकी मानता करी जो मेरी गाय सिंह नाहीं मरेगो तो या गायको दूध मैं श्रीदेवदमनकूं आरोगाऊंगो जहां ताँई यह दूध देयगी ताहां ताँई । ता पाछे रात्रिकूं वा गायकूं सिंह मिल्यो परन्तु पराभव न करि सक्यो । श्रीजीने भुजा पसारी काँन पकारिके गाय खिरकमें कर दीनी । सो सबेरे वह वृजवासी गाय देखके बहुत प्रसन्न भयो और कह्यो जो यह गाय श्रीदेवदमननें बचाई है पाछे दूध दही पहोंचायवे लग्यो और कुंभनदासजीसों श्रीनाथजी आज्ञा कीने कुंभन। मेरी बांह दूखत है सो दाबदे गायको कान पकारिके

खिरीकमें कर दीनी है ताते अब श्रीगिरिराजके आसपास सब
वृजवासी तथा गाय सब श्रीकृष्णवत्तारकी प्रगट भई हैं तिनसे
आप कीड़ा करनलगे । काहूको दूध अरोगे काहूको दही अरोगे
और काहूके घरकी चौरी करि करि दूध दही अरोगि आवें ॥

॥ श्रीनाथजीके रक्षार्थ चार व्युहनको प्रागट्य ॥

और श्रीनाथजीकी रक्षा करनकों चार व्युहनकोप्रागट्य श्री-
गिरिराजमें आपके संगही भयोहै । जो संकर्षण कुँडमेंतें श्रीसंकर्षण
देवको प्रागट्य भयो, गोविन्द कुँडमेंतें श्रीगोविन्ददेवजीको प्रागट्य
भयो और दानवाटीऊपर श्रीदानीरायजीको प्रागट्य भयो । और
श्रीकुँडमेंतें श्रीहरिदेवजीको प्रागट्य भयो ये चारोंदेव संकर्षण
वासुदेव प्रयुम्न और अनिरुद्धात्मक हैं और सदां श्रीनाथजीके
संग रक्षार्थ रहत हैं ॥ इनकी सेवा मतांतरमें के वैष्णव करत
हैं, मध्यमें श्रीपुरुषोत्तम रूप आप विराजत हैं ताहीतें आपकी
सेवा करवेके लिये श्रीपुरुषोत्तमरूप श्रीआचार्यजी प्रगट भये ।
श्रीपुरुषोत्तमके स्वरूपकों श्रीपुरुषोत्तम होय सोही जानें याही तें
श्रीमद्भगवत्गीताके दशमाध्यायमें अर्जुनको वाक्य है

“ न हि ते भगवन् व्यक्ति विदुर्देवा न दानवाः ॥

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम ” ॥

श्रीआचार्यजीकों श्रीनाथजी भारखंडमें श्रीगिरिराज पधार सेवा प्रगट करवेकी
आज्ञा कीने ॥

जब वौम संवत् १५४९ फाल्गुन सुदी ११ बृहस्पतिवारके दिना श्रीआ-
में तो जब श्रीनाथजी भारखंडमें आज्ञा किये “ हम श्रीगोविर्द्धनधर
सिद्ध करिके मोक्षाजकी कन्दरामें विराजें हैं सो तुमको विदित हैं य-
ताईं दूधहीको पानके पुनः दूसरो चिन्ह है तहांताईं ग्रन्थ कोई ३ पुस्तकमें नहीं है ।

हाँके ब्रजके ब्रजवासीनकों हमारें दर्शन भये हैं सो हमको प्रगट करवेको विचार करेहैं परंतु हम तुम्हारी प्रतीक्षा करेहैं सो आप बेग मेरी सेवाको यहाँ पधारो और श्रीकृष्णावतारके समयके जीव यहाँ ब्रजमें आये हैं तिनको शरण लैके सेवक करो तब हम तिनके संग कीड़ा करेंगे ” श्रीहरिदासवर्यके ऊपर मेरो मिलाप होयगो.

भीमाचार्यजीको ब्रज पधारनो तथा श्रीविश्रान्तघाटपैकी यन्त्रबाधा दूर करनी

तब श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा तत्काण भारखंडमें राखि-
के और आप ब्रजमें पधारे सो प्रथम श्रीमथुराजी आये सो उजागर
चौबेके घर बिराजे + “श्रीयमुना स्नानके लिये विश्रान्तघाट चल-
वे लगे तब उजागर चौबे तथा दूसरे लोकननें कह्यो श्रीमहाराज
विश्रान्तघाट पर तो पांच दिन तें बड़ो उपद्रव है सो सुनके
आपने पूछ्यो कहा उपद्रव है तब सबने वृत्तान्त पूर्वक
कह्यो प्रथम दिल्लीतें बादशाहको कामदार रुस्तमअली आयो हतो
ताको उपहास यहाँके चौबे लोकनने कियो सो रुष होयकें दिल्लीतें
एक यन्त्र सिद्ध करके पठायो है सो विश्रान्तघाटको नाका रोकके
तहाँ यन्त्र टांगके यवन बैठे हैं जो हिंदू ताक नीचे
तें आवे जाय है ताकी शिखा कटके ढाढ़ी होय जाय है ताके
भयते स्नान सबको दोय दिनते बंद है सो सुनके आप बोले
तीर्थपर आयके तीर्थतें विमुख होयकें यहाँ ते जानो उचित नहीं
तातें हम तो स्नानकेलिये चले हैं यन्त्रबाधा हमको नहीं होयगी
औरभी जिनको स्नान करनो होय सो हमारे संग चलें सो

आप जनसमुदाय सहित आयके सुखपूर्वक स्नान कियो और श्रीय-
मुनाजीको पूजन यथाविधि करके तहाँ ते पधारें यन्त्र बाधा कोईको

+ “ या चिन्हसुं लेके यन्त्रबंधनकी समस्त यह बार्ता कोई २ पुस्तकमें नहीं है ये
बार्ता समाप्त भए १३ पृष्ठमें फिर ऐसोही चिन्ह करो है.

नहीं भई आपके गये पीछे फिर पूर्ववत् बाधा होन लगी एताहाश प्रभाव देखके उजागर चौबे आदि सबने बिनती करी “याको उपाय आप कोई करें जामें यन्त्र यहांते उठे प्रजा सब दुखी हैं। यह बच्चन सबके सुनके आपको करुणा आई सो एक कागद लिख यन्त्रको मिस करके आपने सेवक वसुदेवदास और कृष्णदासकों दिल्ली पठाये और कहो तुम दोउजने दिल्लीके सदर द्वारपर राजमार्गमें यह कागद टांगके तहां बैठ रहो तुमारी खबर पृथ्वीपति बादशाहके पास जब होयगी तब याको न्याय होयगो। सो दोऊ जने जायके तैसैही कियो सो जाके नीचे ते यवन जो आवे जाय तिनकी डाढ़ी भरके गिर पड़े और चोटी होय जाय। सो यह खबर लोधी सिकन्दर बादशाहके पास पहुंची जो दो हिन्दू फकीरने आयके यह उपद्रव कियो है सो सुनके बादशाहने दोऊनको बुलायके पूछ्यो तब दोऊनने अरज की हजुर पृथ्वीपती हाकम हैं हिन्दु मुसलमान दोनों आपकी प्रजा हैं सो या प्रकारको उपद्रव प्रथम हजुरके कामदार रुस्तमअलीने मथुरामें सात दिन ते कियो है तातें प्रजा दुखी देखके हमारे श्रीगुरुचरणने हम दोनोंको यहां पठाये हैं जामें हजुर तक खबर पहुंचे सो सुनके लोधी सिकन्दर बादशाहने तत्काण रुस्तमअलीको बुलायके सब वृत्तांत पूछके कहो पहिले कस्तर तेरा है तेने क्या जाना हिन्दूमें ऐसा करामातीकीर नहीं होगा सो अब आंखोंसे देख और अपना यन्त्र जलदी मगायले कभी किसीके मङ्गलपर निगाह मत करना या प्रकार रुस्तमअलीको कहिके फिर दोनों सेवकनकों कहो जब मथुराते यन्त्र आय जाय तब तुमभी अपना यन्त्र उठायके जलदी चले जाना और अपने गुरुकों हमारी बंझी कहना।

या प्रकार विश्रांत घाट पर ते यवनके यन्त्रको उठायके किर तहाँ
ते आप गिरिराजको पधारे,

श्रीआचार्यजी महाप्रभुको श्रीगिरिराज पधारनो और श्रीनाथजी
वहाँ प्रगट भये हैं सो खोजनोः

श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीमथुराते सब सेवकनको संग लैके श्रीगो-
वर्धनकी तरहटीमें आन्योरमें सदू पांडेके घरके आगे चोतराऊपर
पधारके विराजे । + तब अनेक ब्रजवासी लोग इर्शन करके जाने
जो येबडे महापुरुष हैं सो ऐसो तेजःपुरुज मनुहयनमें नहीं होय
है । पाछे सदू पांडेने आयके बिनती कीनी जो स्वामी कछु
भोजन करेंगे तब कृष्णदास मेघनने कही जो आप तो सेवक
दिना कम्हूको कछु लेत नाहीं । जब कृष्णदास मेघनने सदू पांडे
सो नाहीं करी ताहीं समय श्रीगोवर्धननाथजी श्रीगोवर्धन पर्वत ऊपर
तें श्रीआचार्यजीकूं सुनायवेके लिये टेर कीनी अरी नरो दूध
लाव + तब नरो बोली जो आज तो हमारे पाहुने आये हैं तब
श्रीनाथजीने कही जो पाहुने तो आये तो भली भई परंतु मोकों तो
दूध लाव तब नरोने कही जो अबारही लाल ॥ लाई । तब एक
बेला भरिके वह लेगई । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे जो
दमला कछु सुन्यो तब दामोदरदासने कही जो महाराज सुन्यो
तो सही पर समझयो नहीं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे जा
बोलसुं + भारखंडमें आज्ञा करी हती सोही यह बोलेहे

+ इहाँ और पुस्तकनमें कछूपाठभेदहे पर प्रसंग एकहीहे ।

+ इहाँ सुं आगे नरोकी कितनीक वार्ता अन्य पुस्तकनमें गईहे पर ये वार्ता
परम प्रामाणिक होयवेसुं इहाँ राखीहै ।

श्रीनाथजी यहां ही प्रगट भये हैं । सवारे ऊपर चलेंगे सो इतनेमें नरो श्रीनाथजीकों दूध प्यायके पीछी आई, ताकुं देखके श्रीआचार्यजी महाप्रभुने कही जो यामें कछु बच्यो है तब नरोने कही रंचक है तब श्रीआचार्यजीने कही जो हमको दै तब नरोने कही जो महाराज घरमें बहुत है जितनो बहिये तितनो लीजिये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुने कही जो औरतो हमकुं नाहीं बहिये । तब सद्दू पांडेने सेवक करवे की बिनती कीनी और श्रीआचार्यजी महाप्रभुने नाम सुनायो और सेवक कीने तब इनको सब अंगीकारकीनो । पाछे रात्रको सब सेवक वृजवासी सद्दू पांडे और माणिकचंड पांडे आदि श्रीआचार्यजी महाप्रभुको दंडबदू करिके सन्मुख बैठे तासमय श्रीआचार्यजी महाप्रभुने पूछी जो यहां पर्वत में श्रीदेवमन कोन प्रकार करिके प्रगट भये हैं सो वार्ता कहो तब सद्दू पांडेने कही महाराज आप सब जानत ही हो और हम सुं पूछत हो तब आपने आज्ञा कीनी कहो तब सद्दू पांडेने श्रीनाथजीके प्रागट्यके प्रकारकी वार्ता कही सो सुनिके श्रीआचार्यजीको हङ्दिय भरि आयो ॥

॥ श्रीआचार्यजीको धीगिरिराजपै पधारनो और श्रीनाथजीसुं मिलवो और प्रगट करवो ॥

दूसरे दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु सब सेवकन सहित अति डर्सुं श्रीगिरिराज पै पधारे सो थोड़ी सी दूर श्रीनाथजीहू अति इराखिके साम्ही पधारके मिले ऐसें परस्पर मिलके बडे प्रसन्न भये- ताही तें गोपालदासजी गायेहैं-

“ इरखते साझा आविया श्रीगोवर्धन उद्धरण ” इत्यादि ।

॥ श्रीनाथजीकी आज्ञानुसार भीआचार्यजी पाठ बेठायके तथा
सेवाको प्रकार बांधके पृथ्वी परिक्रमाकूं पधारे ॥

श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों श्रीनाथजी आज्ञा किये जो
मोकों पाठ बैठाओ और मेरी सेवाको प्रकार प्रगट करो सेवा विना
पुष्टि मारगमें अंगीकार न होय तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु
नने एक छोटो सो मंदिर सिद्धि करवायो सो ता मंदिरमें श्रीनाथ-
जीको पाठ बेठाये । और अप्सरा कुंडके पास एक गुफा हर्ती
सो तहां रामदासजी भगवदीय रहते सो श्रीआचार्यजीकूं पधारे
जानिकें सेवक भये सो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु रामदासजीके
आज्ञा किये जो तुम श्रीनाथजीकी सेवा करो तब रामदास
जीने कही जो महाराज में तो कछु समझत नांही सो सेवा
कैसे कर्ह मेनें तो कबहु सेवा करी नांही तब श्रीनाथजीकी
इच्छा जानकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने रामदासजीसिंहों कही जो
तुमकों श्रीनाथजी सिखावेंगे । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने
मोरकी चंद्रिकानको मुकुट सिद्धि करवायो तब श्रीआचार्यजी
महाप्रभुनने श्रीनाथजीकी सेवा और शृंगार करिकें रामदासजी
कों बताये और कह्यो जो तुम नित्य मवारे गोविन्द कुंडके ऊपर
जायकें स्नान करिकें जलको पत्र भरि लायो करो और श्रीनाथ-
जीकों स्नान कराय अंगवस्त्र करिकें जैसें हमने शृंगार कर्यो है
सो ता प्रमाण करियो और गुंजा चन्द्रिकाको धारण
नित्य करें और जो कछु भगवद् इच्छाते आय प्राप्ति
होय सो सिद्ध करिकें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पियो और तासों तु

१ यह श्रीआचार्यजी तथा रामदासजीको संवाद कितने पुस्तकमें संक्षेपसं है-

तेरो निर्वाह करियो और दूध दही मांखन आदि तो ये व्रजवासी भोग धरत हैं। पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु सदृश पांडे आदि व्रजवासीन सो आज्ञा किये जो यह श्रीगोवर्द्धननाथजी मेरो सर्वस्व हैं सो इनकी सेवामें तुम तत्पर रहियो और उपद्रव होय तो सावधान रहियो और जा भाँति श्रीनाथजी प्रसन्न रहें सो करियो। या प्रकार कहिके श्रीआचार्यजी महाप्रभु पृथ्वी परिक्रमा करिवेकुं पधारं और जा दिन श्रीनाथजीको श्रीआचार्यजीने स्वहस्तसों पाक सिद्ध करके समर्पेता दिन श्रीनाथजी अन्नप्राशन कीने तहां ताँड़ दूध दही ही आरोगे। अब तो ता दिनसुं व्रजवासीनके पास सुं छाक छिड़ाय आरोगन लागे ॥

॥ गांठ्योलीकी पाथो गूजरी ॥

एक पाथो नामक गूजरी गांठ्योली की अपने पुत्रके लिये छाक ले जात हती तामेसुं बलात्कारसुं दोय रोटी श्रीनाथजी छिड़ायके आरोगे ॥

॥ गोवर्द्धनकी × खेमो गूजरी ॥

ऐसें ही एक खेमो गूजरी गोवर्द्धनकी दही बेचवेकों जात हती सो दान घाटीके ऊपर श्रीदेवदमन मिले दहीको दान मांग्यो सो बाने दीनो और आज्ञा किये दहीतो हम लूट खायगे नहीं तो दोय रोटी और दही भातकी नित्य एक छाक पहोंचाय जायवो करि। जब वह दही बेचवेकुं जाय तब नित्य एक छाक पहली संग धरि लेजाय सो आप आरोगें और जादिना नहीं धरि लेजाय तादिना वाको दही लूट खाय ॥

* कितनेक पुस्तकमें खेमोगूजरीको नाम नहीं है और याकी सब वार्ता पाथो गूजरीके संग ही है।

॥ अडींगको ब्रजवासी गोपाल ग्वाल ॥

और एक अडींगको ब्रजवासी गोपाल ग्वाल हतो वाको अडींगके घनेमें श्रीदेवदमनको दर्शन भयो वाकों आज्ञा किये जो तूं मोकों दूध और रोटी ल्यायदे तब वानें गाय बनमेही दुहिके दूध आरोगायो और वह वेझरीकी रोटी अपने खायवेके लिये लायो हतो सोऊँ दीनी सोऊँ आप आरोगे और गोपाल ग्वालकों आज्ञा दीनी जो तूं मेरे दर्शनकूं नित्य अयो कर वाकूं स्वरूपासक्ति भई जो शंगारंक दर्शनकूं नित्य आवे ता बिरियाँ शख्स खोलिवेको अनुसन्धान न रहै तासुं आदमीसों कहि राख्यो जो तूं मेरे शख्स वा बिरियाँ खोल लियो करि और जब दंडवत् करे तब गदगद कंठ होयके प्रेमके आंसूनकी धारा चले तासुं झगा सब भीज जाय और दोय आदमी पकरिके वाकूं नीचे लावें तब श्रीगिरिराजपै तें उतरें।

॥ आगरेके ब्राह्मणको छोरा ॥

और आगरेमें जाय एक ब्राह्मणको छोरा हतो, ताकों श्रीदेवदमन स्वभमें दर्शन दीने और आज्ञा किए में ब्रजको ठाकुर हूं तू श्रीगिरिराज अश्यके मेरे दर्शनकर ॥ तब सवारेही वा ब्राह्मणके लडिकाने अर बहोत कीनी जो मोकों ब्रजके श्रीठाकुरजीके दर्शन करवाओ । तब वाके पिताने सब ब्रजके ठाकुर हते तिनके दर्शन करवाये परंतु वा लडिकाके चित्तकूं स्वस्थता न भई तब श्रीनाथजीके दर्शन करवाये तब लडिकाने कही याही श्रीठाकुर श्रीनाथजीके दर्शन दीने हते । सो श्रीनाथजी वाकी बांह पकड़के जीने मौकों दर्शन दीने हते । और वाको पिताहूं सदेहसों अपनी गोपमंडलीमें स्थापन कीने । और वाको पिताहूं दर्शन करिके जो बहोतही प्रसन्न भयो वह माध्वसंप्रदायको

वैष्णव हतो ताते वाको ज्ञान भयो जो जहाँकी वस्तु हती तहा
गई चित्तको समाधान करिके अपने घर गयो कछु आग्रह वाने
कीनो नहीं । ता पाछे वह ब्रह्मण बङ्गो वैष्णव भयो वाकी छप्पय भ-
क्तिमालमे हैं प्रेमनिधि मिश्र वाको नाम हतो । ऐसे ऐसे श्रीठाकुर
जीने ब्रजबासीनसो अनेक चरित्र और कौतुक करे ॥

॥ संखीतराको मांडलिया पांडे ॥

एक संखीतरामे मांडलिया पांडे हतो वाके बेटाकी बहु ज्ञा-
दिना घरमे आई ताही दिना वाकी भैस खोयगई ॥ तब वाने
कह्यो जो या बेटाकी बहूके पांय खोटे जो आवतही भैस खोयगई
आगे न जाने कहा करेगी । सो यह बात वा बहूकुं बहोत
ही अनखनी लागी, तब वा बहूने देवदमनकी मानता करी हे
देवदमन हमारी भैस पावेगी तो तोकों दस सेर मांखन आरोगाऊंगी
मानता करतेही वाकी भैस पाई तब वाके घरके सब प्रसन्न भये
और वा बहूकों बिलोमनको काम सोंप्यो । पांच सात सेर मांखन
नित्यप्रति होतो तामेसुं वो बहु आध सेर मांखन नित्यप्रति चोराय
राखति । ऐसे जब दस सेर मांखन भयो तब वह तो बिलोवनामे
मेल्यो और सद बिलोमनामेको दस सेर मांखन लैके श्रीदेवदमन
सो बिनति कीनी जो तुम आपनो मांखन लैजाओ सासके
और घरकेनके आगे मेरो आवनो न होयगो । वाकी आरती
जानिके श्रीदेवदमन आप पधारे वाके घरसुं मांखनकी कमोरी
लेयके फेरि श्रीगिरिराज पधारे मांखन आरोगे सब सखा
मंडलीकुं खवायें बनच कुं दीने कुंभनदासको मुख चुपड्यो
और शेष श्रीगिरिराजपे उडाये । वा दिना जन्माष्टमी हती ताते

भावात्मक उत्सव आपने मान्यो और कुभनदासिमें यह पद गायो—
राग सोरठ ॥ आंगन दधिको उडधि भयो हो इल्यादि ॥

॥ टोडके घनेको चतुरानागा नामक एक भगवद् भज्ज ॥

एक चतुरानागा नामक भगवद् भक्त हतो सो टोडके घनमें
तपश्चर्या करतो श्रीगिरिराजके ऊपर कबूँ पावि देतो नहीं वाको
दर्शन देवेके लिये श्रीनाथजी भैसा पै चाढिके टोडके घनमें पधारे
रामदासजी और सहू पांडे आदि सब संग हते । तब वा महा
पुरुषने दर्शन करिके बडो उत्सव मान्यो बनमेंसु क्कोडा बीनलायो
ताको साग कियो और सीरा कियो श्रीनाथजीको भोग समर्पयो
आसोगतमें श्रीनाथजीने आज्ञा करी कुभनदास कछु कीर्तन गाय
तब कुभनदासने यह कीर्तन गायो—

॥ राग सारंग ॥

भावति त्तोहि टोडको घनी ॥
कांटा लगे गोखरू छूटे फाल्यो हैं सब तन्यो ॥ १ ॥

सिंह कहां लोखरीको डर यह कहा बानक बन्यो ॥
कुभनदास तुम गोवर्धनधर वह कोन सँडडेडनीको जन्यो ॥ २ ॥

संवत् १५५२ श्रावण सुदी १३ बुधवारके दिन वा चतुरा-
नागको मनोरथ मिछ करिके श्रीनाथजी श्रीगिरिराज ऊपर पधारे ।
या प्रकार अनेक रीति सब ब्रजकासीनसों क्रीडा करत भये ॥

पूर्णमल कन्त्रीको मंदिर बनवायवेकी स्वप्नमें आज्ञा ॥

और संवत् १५५६ चैत्र सुदि २ के दिन श्रीनाथजी पूर्ण-
मल कन्त्रीकूँ स्वप्नमें आज्ञा किये जो तू मेरो एक बडो मंदिर ब्रजमें
आयके बनवाय ॥

॥ पूर्णमङ्ग लक्ष्मीको ब्रज आवास ॥

तब पूर्णमङ्ग अंवालयते द्रव्यसंग्रह करिके तत्यो सो ब्रजमें
श्रीगोविर्धन आयो । तहाँ आयके बाने पूर्णी जो यहाँ श्रीदेवदेवत
ठाकुर सुने हैं सो कहाँ विराजत हैं । तब एक ब्रजवासीने बताये
सो श्रीगोविर्धननाथजीके दर्शन करिके बहोत प्रसन्न भयो ता पहुँचे
श्रीआचार्यजीके पास गयो और साठांम दंडवत कर विनती कीजी
जो महाराज । श्रीगोविर्धननाथजीकी इच्छा एक बड़ी मंदिर बन
वायरेकीसी दीसत है मोक्ष स्वस्थमें आज्ञा आप करे हैं तामुँ के
द्रव्यसंग्रह करके ले आयो हूँ तब आप श्रीमुखसों श्रीआचार्यजी
महाप्रभु आज्ञा किए जो हाँ हाँ शीघ्र मंदिर बनवाओ और श्रीगिरि-
राजसुँ पूछे आपके ऊपर मंदिर बनेगो टांकी बाजेगी ताकी केसी
आज्ञा । तब श्रीगिरिराज आज्ञा किये श्रीनाथजी मेरे हृदयमें विर-
जेगे मोक्ष टांकी लगिवेको परिश्रम न होयगो आप मंदिर मुखते
सिद्धि करवाओ ॥

॥ हीरानणि उस्ताहृं मंदिर बनायवे आयेकी स्वस्थमें आज्ञा ॥

तब एक उरता हीरानणि आगरेको वासी ताको श्रीजीनि स्वस्थ-
हीमें आज्ञा करी जो तू सेरो मंदिर निर्माण करिवे आव । तब
बाने श्रीगोविर्धन आयके श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों आज्ञा सांगी
मोक्षे श्रीनाथजी आज्ञा किये हैं सो आप जो आज्ञा ढैं तो मंदिर
सिद्धि होय और नमिलगे तब श्रीआचार्यजी श्रीमुखसों आज्ञा किये
जो तुम मंदिरको चित्र कलादमें लिख लाओ तब वह सब मंदिरकी
अनुकूलति बड़े कलादमें उतार लायो ताहुँ श्रीआचार्यजी आप

१ कोई मुक्तकर्त्ता यह काही संकेपमूँ है ।

देखे तामें शिखर देख्यो तब आज्ञा दिये दूसरो उतार लाव । तब वह दूसरो उतार लायो तामें हूँ शिखर देख फेर अज्ञा किये तीसरो उतार लाव, तब वह तीसरो उतार लायो ताहुमें शिखर देखके श्रीआचार्यजी महाप्रभु दासोदरदास सुं आज्ञा किये जो श्रीनाथजीकी आज्ञा शिखर मंदिरपै है, तातें कोईक काठ या मंदिरमें बिराजेंगे तापाछे यवनको उपद्रव होयगे, तब और देशमें श्रीजीं पधारेंगे और कोई काल तहाँ बिराजेंगे पाछें वृजमें फेर पधारेंगे तब पूंछरीकी और पृथ्वीपै मंदिर बनेगे श्रीगिरिराजके तीन शिखर हैं आदि शिखर, ब्रह्मशिखर, और देव शिखर, । तामेंसुं पहिले श्रीकृष्णावतारमें आदिशिखरपै की डाकरी, मध्यमें देवशिखर पर कीडा अब करत हैं और कीडाके अवसान समयमें ब्रह्मशिखर पर कीडा करेंगे । आदि शिखर और देवशिखर तो पृथ्वीमें गुप्त हैं ब्रह्मशिखर प्रगट दर्शन देतहै । आप श्रीगोवर्धननाथजी हैं तातें सदा श्रीगोवर्धननाथजी श्रीगोवर्धन ऊपर कीडा करत हैं ॥

॥ श्रीजीके नवीन मंदिरको आरंभ ॥

ऐसें आज्ञा करिके संवत् १५५६ वैश ख शुद्धी ३ आदित्यवार के दिन रोहिणी नक्षत्रमें श्रीनाथजीके नवीन मन्दिरकी नीम दिनाई । पूर्णमस्तके पस एक लक्ष मुद्रा कछुक सहस्र ऊपर हती सो एक लक्षमुद्रा तो मन्दिरमें लगि गई कछुक रही, ताकुलैके पूर्णमस्तकके गये । तहाँ ते रत्न लायके विक्रय किये तामें तीन लक्ष मुद्रा पैदा भई, तिनही मुद्रानसों बीस वर्ष पीछे आयके फेरि मंदिर संपूर्ण बनवायो । तहाँ तर्हि यह मंदिर आधोड़ी रह्ये पीछे तहाँ तर्हि वाई मंदिरमें बिराजे । और वृजवासिनमें कीडा करिवेकी इच्छा हती

तासों प्रतिवंध बीस दरस कीने तहाँ ताँड़ि रामदास चोहांन राजपूत सेवा किये । और संवत् १५४५ सूँ आरंभ लैके संवत् १५७६ तक याही ब्रकार अनेक कीड़ा करे ॥

॥ श्रीजीजे नवीन मन्दिरमें पाठेत्सव ॥

जब बड़ो मंदिर बनके सिंह भयो ताही समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु पृथ्वी परिक्रमा करिके ब्रजमें पधारे । और जो बड़ो मंदिर सिंह भयो हतो तोमें श्रीनाथजीकूँ श्रीआचार्यजी महाप्रभुने संवत् १५७६ वैशाख शुद्धि ३ अद्यवदतीयाके दिन पाट बैठाये । तब पूर्णमष्ट ता दिन श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन करके बहोत प्रसन्न भयो और अपने परम भार्य मानत भयो जो धन्य श्रीगोवर्धननाथजी मौकों अनुग्रह करिके यह सुन दिखाये । तो ता समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु पूर्णमष्टके ऊपर बहोत प्रसन्न भये, और श्रीमुखतें कहे जो पूर्णमष्ट कछू भांग में तैरेऊपर बहोत प्रसन्न भयोहूँ । तब पूर्णमष्टने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन्मौं विनती कीनी जो महाराज ! मैं अति उत्तम सुनायित असंजा अपनै हाथनमाँ श्रीगोवर्धननाथजीके श्रीअंगको समयों तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आका किये जो तू आज कोई वातको मनोरथ अपनै मनमें मत राखे सुखेन समर्पि और जो तैरें मनोरथ होय सोऊ तू सुखेन कर तब तो पूर्णमष्ट अति प्रसन्न होय अस्युत्तम अतर असंजा संहित कठोर सरिके और फुरेल सिंहि करके श्रीगोवर्धननाथजीको समर्पि श्रीअंगमें ल्यावत भये और अत्यन्त स्नेह प्रीति वात्सल्य किये और अपनो परम भार्य मान्यो । पांछे दङ्ग आभूषण आदि तब सुनार श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीगोवर्धननाथजीको किए । तादिन

अनिर्वचनीय सुख भयो और उत्सव बड़ोहाँ भयो तब पूर्णमळने बहोत प्रसन्न होयके श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी सेवा भली भांति सों कीर्ना । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु बहोत प्रसन्न भये और अपने श्रीअंगको प्रसादी उपना पूर्णमळको उढायो । तब पूर्णमल्ल साटांग दंडवत् करके और आज्ञा मांगिके अरने स्वदेश अंचालय-को गये ।

॥ श्रीजीकी सेवाको मठान् ॥

ता पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने सहू पांडेको बुलाये और आज्ञा किये जो श्रीगोवर्धननाथजीको मंदिर तो बडो सिद्ध भयो, तासुं ऐसे मंदिरमें तो सेवक बहोत चाहिए सो तुम ब्राह्मण हो और शास्त्रकी मर्यादा है और भगवद्‌मेवा ब्राह्मण करें तो आओ ॥ तब सहू पांडेने कही महाराज्ञ हमारी जातके तो कछु आचार विचारमें समझें नहीं और जो कोई सेवामें समझते होय तिनको राखने ताते श्रीकूँडपे ब्राह्मण वैष्णव श्रीकृष्णचैतन्यके सेवकहैं तिनको राखेंतो आओ । तब श्रीआचार्यजीने श्रीनाथजीकी सेवामें बंगाली ब्राह्मण हते तिनको राखे और सेवाकी रीत बताई माधवेन्द्रपुरीकूँ सुखिया किये और उनके शिष्यनकूँ सेवामें राख दिये कृष्णदासजीकूँ अधिकारकी सेवा दिये, कुंभनदासकूँ कीर्तनकी सेवा दिये और श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने निलको नेग बांधयो, जो इतनी सामग्री तो श्रीजी नित्य आरोगेगे, सो इतनो नेग तो सहू पांडे पहोंचावेगे और अधिक आवे तो अधिक उठाइयो और या महाप्रसादतें तुम तुहारो निर्वाह करियो और श्रीनाथजीको समय कोउ मत चूकियो और जो भगवद्‌इच्छातें आय प्राप्त होय सो

धरियो, परंतु श्रीगोवर्धननाथजीको अबार न होय और समय समय प्रति पहोंचियो सो या प्रकार श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीमुख से आज्ञा कर आप पृथ्वी परिक्रमा को पधारे ॥

श्रीनाथजीके लिये श्रीआचार्यजी अपनी सुवर्णकी बीटी बेचवाये और एक गाय मंगवाये

श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके पृथ्वी परिक्रमाको पधारवे पहिले एकदिन श्रीगोवर्धननाथजी श्रीआचार्यजीसे कहे जो मोक्षे गाय लाय देउ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुने कही जो हां हां सिद्ध है तब लाही समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु सहू पांडेसों कहे जो श्रीगोवर्धननाथजीकी इच्छा गाय लेवेकी भई है से हमारे पास यह सोनेकी बीटी है ताकी गाव जो आवे सो आंनि देउ । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों सहू पांडेने विनती करी जो महाराज घरमें इतनो गोधन है सो केतको है और ये गाय भैस हैं सो सब आपकी है और हमारो रह्यो कहा ताते आप आज्ञा करो तितनी गाय लाऊं तब आचार्यजी महाप्रभु कहे जो तुम दोगे ताकी तो हम नाहीं करत नाहीं तुमारी इच्छा, पर मोक्षे श्रीगोवर्धननाथजीने आज्ञा दीनी है सो तासों या सुवर्णकी गाय लाय देउ । तब सहू पांडे सुवर्ण बेचिके गाय ले आये । सो श्रीनाथजीके आगे लायके ठाड़ी कीनी सो आप देखिके श्रीनाथजी बहोत प्रसन्न भये केर संगरेवज वासीनने सुनी जो श्रीगोवर्धननाथजीको गाय बहोत प्रिय है सो कोई चार गाय, कोई दो गाय, कोई एक गाय सो सबनने लायके श्रीनाथजीके भेट कीनी सो ऐसे करत सहस्रावधि गाय भेट आई । सो तब श्रीनाथजीके नाम श्रीआचार्यजी महाप्रभुने गोपाल धन्यो सो भगवद्वीय श्रीतस्वामि गाये हैं सो पद—

॥ राग पूर्वी ॥

आमें गाय पाँच गाय इत गाय उत गाय गाविंदाकों गायनमें बसिबोई भावे ॥
गयनके संग धावे गायनमें सुखपावे गायनकी खुररेणु तन अंग लपटावे ॥१॥
गायनसो ब्रजछायो बैकुंठ विसरायो गायनके हेत गिरि करले जठावे ॥
छीतस्वामि गिरधारी विष्वलेश घपुधारी ज्वालियाको भेसकिये गायनमें आवे २

॥ श्रीजीको गोविन्दकुण्डपे पधारनो ॥

एक दिन चतुरा नामाने गोविंद कुण्डके ऊपर आयके रोटी
और बड़ी सिद्धि करके श्रीनाथजीको भोग धन्यो ताही समय
माधवेन्द्रपुरीने श्रीजीकूं पर्वत ऊपर राजभोग धन्यो ताकों छोड़िके
श्रीनाथजी गोविंदकुण्डके ऊपर चतुरा नामाके यहां पधारे परंतु
सामग्री थोड़ीसी हती तातें तृप्त न भये माधवेन्द्रपुरीसों आज्ञा किये
में भूखोहुं राजभोग फेरि करो तब राजभोग फेरि कन्यो ॥

॥ श्रीनाथजी बंगालीनकी सेवासों अप्रसन्न भये और तिनकूं
निकासवेकी आज्ञा किये ॥

माधवेन्द्रपुरी श्रीजीकों नित्य मुकुट काढनको शृंगार
करते और उत्सवके दिना पागको शृंगार करते और नित्य चंदन
समर्पते परंतु वह श्रीजीकूं आछो नहीं लागतो यद्यपि श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभुनके राखे हते तातें आज्ञा कछू नहीं करते ऐसे वर्ष
१४ चौदह पर्यंत बंगालीनतें सेवा कीनी कभीक एक देवी वृद्धाके
स्वरूप श्रीजीके पास बेठाये हे सो यह हूं श्रीजीकों अप्रिय लगे
तब अवधूतदामकों आज्ञा दीने कृष्णदाससुं कहो ये बंगाली
मेरो द्रव्य चुराय ले जात हैं बंगालीनकूं निकासो ।

॥ श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको स्वधाम पधारनो ॥

तहां ताँई संवत् १५८७ आषाढ सुदी २ उपरांत ३ तीजके दिना

सध्यान्ह समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीकाशीमें हनुमान् धाटपे
श्रीगंगाजीके मध्य प्रवाहमें पधारे और पद्मासन करवे स्वधामको पधारे ॥

॥ श्रीआचार्यजीके प्रथम पुत्र श्रीगोपीनाथजीको गाढ़ी विराजवो ॥

तदनन्तर श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके प्रथम पुत्र श्रीगोपी-
नाथजी गाढ़ी विराजे और तीन वर्षपर्यंत श्रीजीकी सेवा करे तहाँ
ताँई बंगालो सेवामें रहे और श्रीगोपीनाथजीने लक्ष रूपैयाके पात्र
तथा आभरण श्रीजीको बनवाये

श्रीपुरुषोत्तमजी स्वधाम पंधारे ॥

श्रीगोपीनाथजीके पुत्र श्रीपुरुषोत्तमजीनो श्रीगिरिराजकी कंदरामें
पधारे श्रीजीने अपने हाथसों पकड़के सदेहसों लीलामें अंगोंकारकिये ॥

॥ श्रीगोपीनाथजी स्वधाम पंधारे ॥

सो पुत्र वियोग करिके श्रीगोपीनाथजीको चित्त बहोत उदास
भयो; तब आप श्रीजगन्नाथ देवकूँ पधारे तहाँ श्रीबिलदेवजीके
स्वरूपमें समाय गये लीनवहै गये, और पूर्व स्वरूपको प्राप्त भये ॥

॥ श्रीगुसाँईजीको शाढ़ी विराजनो और बंगालीनकूँ ॥

॥ काढ़े दूजे सेवक सेवामें राखनो ॥

श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके पुत्र दोय, प्रथम श्रीगोपीनाथजी-
सो तो श्रीजगन्नाथदेवकूँ समर्पे और द्वितीय पुत्र श्रीगुसाँईजी अर्थात्
श्रीमद्बिलनाथजीको राज्य भयो । तब बंगालीनकूँ काढ़ दिये
श्रीजीकी इच्छा जानिके और गुर्जर ब्राह्मण सेवामें रखें; रामदासकूँ
मुखिया किये सब ब्राह्मण सेवामें रखें ॥

श्रीजीकी आज्ञासार माधवेन्द्रपुरी मलयागर चंदन-

लायवेकूँ दक्षिण चले ॥

माधवेन्द्रपुरीकों श्रीजी आज्ञा किये जो असल मलयागर-

चंदन लायके मोकुं समर्पो मोकुं चंदन लगायवे को प्रेम हे सो
यह आज्ञा सुनिके माधवेन्द्रपुरी दक्षिण दिशाकुं चंदन लेवे चले ॥

॥ पेंडेमें माधवेन्द्रपुरीकुं श्रीगोपीनाथजीके दर्शन भये ॥

पेंडेमें माधवेन्द्रपुरीकुं श्रीगोपीनाथजीके दर्शन भये ।
दर्शन करिके एक धर्मशाला हतो तामें जायके सोये और
चित्तमें विचार करे जो श्रीगोपीनाथजीके खीरके अटका बहोत
भोग आवे हें ऐसे खीरके अटका मैंने श्रीजीकुं कबहुं भोग
धरे नाहीं ऐसो पश्चात्ताप चित्तमें करे । तासमय श्रीगोपीनाथ-
जीके सैन भोग आयो ताते खीरके अटका बहोत भये तामेसै
एक खीरको अटका श्रीगोपीनाथजीने चुरायके सिंहासनके नीचे
दुबकाय राख्यो । जब भोग सरे तब एक घट्यो तब पंड्या
लड़न लगे तब श्रीगोपीनाथजी आज्ञा किये यह अटका
तुमने काहुने नहीं चुरायो मैंने चुरायो हे सिंहासनके नीचे
हे ताकुं लेके एक पंड्या जाओ जो श्रीनाथजीको सुखिया
आयो हें माधवेन्द्रपुरी ताक्षे दे आओ तब एक पंड्या लेके सब
गावमें पुकारत किन्यो कोई माधवेन्द्रपुरी श्रीनाथजीको सुखिया
आयो हे यह बात सुनिके माधवेन्द्रपुरी बोले एक माधवे-
न्द्रपुरी तो मैं हूं तब पंड्याने वह खीरको अटका दीनो और कह्यो
जो श्रीगोपीनाथजीने तुमकूं प्रसाद पठवायो हे ताकुं लेके माधवे-
न्द्रपुरी बहोत प्रसन्न भये । ता दिनासूं श्रीगोपीनाथजीको नाम
खीर चोरा गोपीनाथ धन्यो यासूं लोक प्रसिद्ध यह नाम हे ॥

॥ माधवेन्द्रपुरी और तैलिंग देशको राजा चंदनके भारा लेकं
श्रीनाथजीको समर्पिवे चले ॥

तहांसूं आगें माधवेन्द्रपुरी दक्षिणमें गये तहां तैलिंगदेशको

राज्य उनको शिष्य होतो ताके धर गये। राजाने वहांते समाधान कियो और किनती कीनी जो महाराज क्वेनसी दिशाकुं पधारोगे। तब माधवेन्द्रपुरी आज्ञा किये श्रीनाथजीने मोक्षो आज्ञा कीनी है, जो मोक्षो मरमी लगे हैं तासुं मोक्षं अस्तल सल्यागर चंद्रन् लाय के सप्तपौ। तासुं से सल्याचल पवित्र जाऊगो तहांते सल्यागर चंद्रन् लायके श्रीनाथजीकुं समर्पणो। तब राजाने किनती करी जो महाराज मेरे बरमे दों सल्यागर चंद्रनके मृठा हैं सो ऐसे हैं जो सबासन तेल ओटायके एक तोलसर वामे डारों तो तेल सब शीतल होय जाय ताते ये आप ले पधारिये श्रीजीको समर्पिये और मोक्षं श्रीनाथजीको दर्शन करवाइये तो मैंहूं आपके संग जल्लुगो तब माधवेन्द्रपुरीने आज्ञा करी जो तू पुत्रकुं राज देके अकेले चले तो तोकों श्रीनाथजीको दर्शन होय तब वाने ऐसेहो कियो एक चंद्रनके सारा माधवेन्द्रपुरीने लियो और एक राजाने सत्तकमें लियो दोऊं गुरु शिष्य श्रीनाथजीके दर्शनको चले ॥

॥ माधवेन्द्रपुरीकुं श्रीनाथजीके साज्ञात् दर्शन भये और श्रीहिम-
गुप्तवर्षी सह सेवा करवेको परलोक भये ॥

तहां ते श्रिपैति से आये तहां पुष्टकरिणी नदीमें रुक्ष चरिके एक उपचन्तमें बैठे और श्रीनाथजीको व्यान करे हैं। ता समय श्रीनाथजीने जान्यो जो सेरे लिये माधवेन्द्रपुरी सल्यागर चंद्रन लेके आवत हैं ताते बाही स्थल उपचन्तमें जो श्रीनाथजीने दर्शन दिले सो ग्राम ऋतुको घुंगार है और माधवेन्द्रपुरीसों कहे जो तू मोक्षं चंद्रन लगाय मरमी होत है तब चंद्रन विस्तके माधवेन्द्रपुरीने श्रीनाथजीकुं समर्पयों हो जारियलकी गिरी तथा केला

श्रीनाथजीको भोग धरेसो श्रीनाथजी आरोगे । ता पाढे माधवेन्द्रपुरी सों श्रीनाथजी आज्ञा किये जो ब्रजमें हिमाचल निकट है ताते बारे ही सास चंदन रुचत नहीं श्रीष्मकृतुमें सुखद होय है और उंहारी इच्छा तो बारे ही मास लगायवेकी है ताते दक्षिणमें सदां गर्भी रहत है सो मलयाचल पर्वतके ऊपर एक मेरी बैठक है तहाँ तुम सदां रहो और नित्य मोकों चंदन समर्प्यो करो और या तुमारे शिष्य सजा हूँ कूँ संग लिये जाओ परचारकी करेगो तुम्हं गुरुशिष्य मलयाचलपे सदा मेरी सेवा कर्यो करो तहाँ मरो एक स्वरूप विराजत है तिनसों सब कोई श्रीहिमगुपाल कहत हैं सदां चंदनको बागो पहिरे रहत हैं आसपास चंदनको बन है तहाँ इन्द्र नित्य दर्शनको आवत है तहाँ तुम जाओ और ब्रजमेतो सदाही मेरी सेवा श्रीगुसांईजी करत हैं सो वे समय समय ऋतु ऋतुके वस्त्र आभूषण सामग्री और अनेक प्रकारकी सुगंधी समर्पिके और अनेक प्रकार करके लाड लड़ावत हैं इतनी आज्ञा करके श्रीनाथजी अंतर्ध्यानि भये सो श्रीगिरिराज पर्वत ऊपर पधारे और माधवेन्द्रपुरीहूँ जैसे आज्ञा भई तैसे ही करत भये अर्थात् श्रीहिमगुपालजीकी सदां सर्वदां सेवा करते कूँ परलोक गये ॥

॥ माधवेन्द्रपुरीके परलोक भयेकर्त्ता वार्ता षट्मास पीछे सुनके ॥
॥ श्रीगुसांईजी खेद किये ॥

माधवेन्द्रपुरीके परलोक होयवेकीं वार्ता षट्मास पीछे श्रीगुसांईजीने सुनी तब चितकूँ बड़ो खेद किये और आज्ञा किये जो माधवेन्द्रपुरी चंदन लेकर आवत हते सो मारगमें परलोक भये ऐसे प्रेमलक्षणके हमें सेवक कहाँ मिलेंगे यह माधवेन्द्रपुरी

संपूर्ण शास्त्राभ्यास करके और तत्सारभृत सेवा मारण को ग्रहण कियो और श्रीनाथजीकी कृपा उनपे बहुत हती ऐसे आज्ञा करके श्रीगुरुसाईंजी आप चित्तमें बड़ो खेद किये । तब श्रीनाथजीने समाधान कियो सब वृत्तान्त आज्ञा किये तब श्रीगुरुसाईंजी प्रसन्न भये ॥

॥ माधवेन्द्रपुरीको जीवन चरित्र ॥

माधवेन्द्रपुरी तैलंग देशके ब्राह्मण हते । माधवेन्द्रपुरीके आचार्य उनके शिष्य कृष्णचैतन्य भये सो उनकुं कहे तुम गौड देशको उद्धार करो ताते गौडिया सब उनके शिष्य और सेवक भये और माधवेन्द्रपुरी तो पहिले संन्यास ग्रहण करके काशी रहत हते श्रीलक्ष्मणभट्टजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुको यज्ञोपवति काशीमें किये तब माधवेन्द्रपुरीसों विनती कीनी तुम या लक्षिकाका विद्या पठन करवाओ । तब चारों वेद षट् शास्त्र महिना चारमें सब श्रीआचार्यजी महाप्रभु पढ़े । ता समय माधवेन्द्रपुरीको आज्ञा किये जो कछु तुम गुरु दक्षिणामें वरदान मांगो ऐसे आज्ञा किये ता समय उनको श्रीआचार्यजी महाप्रभुको स्वरूप परब्रह्म स्वरूप दृश्यमान भयो तब विनती करी जो आप श्रीनाथजीको प्रगट करेंगे सो मोक्ष आप के चरित्र दिव्य दृष्टिसों आपकी कृपासे दीसत हैं तहां सेवाके लेश कछू मोक्ष हूं प्राप्त होय यही दक्षिणा में मांगत हूं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आज्ञा किये जब में जाऊंगो और श्रीनाथजीकूं पाठ बेठाऊंगो ता समय आप ब्रजमें आवे तुमकुं हम श्रीनाथजीकी सेवा सोंपेंगे जहां ताँई श्रीजीकी हूच्छा तू मोक्ष ताँई सेवा करोगे ता पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु समय पुरीने श्रीनाथारे श्रीजीकूं पाठ बेठाये तब माधवेन्द्रपुरी हूं ब्रज-

मैं आथे तब उनकों आपने सेवा सौंपी सौ श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के वरदानते श्रीनाथजी १४ वर्ष पर्यंत माधवेन्द्रपुरीपै सेवा करवाये और उनके संबन्धसों और हृष्णलिनसों सेवा करवाये परंतु महारस सेवाको अधिकार देख्यो नहीं ताते आज्ञा किये मेरो नाम स्मरण करो ताते तुहारो उद्घार होयगो मेरी सेवा श्रीगुसाईजी करेंगे ।

॥ अष्टसखा वर्णन ॥

तब श्रीगोवर्धननाथजी श्रीगिरिराज ऊपर विराजे श्रीगुसाईजी सेवाकरे ओर जब श्रीगोवर्धननाथजी प्रगट भये तब अष्ट सखा हृष्णभूमिपे प्रगट भये अष्ट छापरूप होय के सब लीलाको गान्त करत भये तिनके नाम कृष्ण १ तौक २ क्रिष्ण ३ सुब्रल ४ अर्जुन ५ विशाल ६ भौज ७ श्रीदामालये अष्ट सखा अष्टछाप रूप भये तिनके नामकी छुप्पय श्रीद्वारकानाथजी महाराज छुत—

॥ छुप्पय ॥

सद्वदास सो तौ कृष्ण तौक परमानंद जानी ।

कृष्णदास सो क्रिष्ण व्रीतस्वामी सुब्रल बखानो ॥

अर्जुन कुंभनदास चतुर्षुजदास विशाला ।

विष्णुदास सो भेजस्वामी गोविंद श्रीदामाला ॥

अष्टछाप आठों सखा श्रीद्वारकेश परमान ।

जिनके कुन्त गुन गान करि निजजन होत सुथान ॥ १ ॥

और श्रीगुसाईजीके प्रागट्यके समय श्रीनाथजी अनेकप्रकारके चरित्र ब्रजमें करे ॥

॥ काशीके एक नागर ब्राह्मणकी वार्ता ॥

एक काशीको नागर ब्राह्मण हतो सो स्मार्त हतो वाको विवाह बडनगरमें भयो सो वह ब्राह्मण अपनी बहुकूलैके काशी जात

हतो सो यह स्त्री श्रीगुसांईजी की सेवक हती तब पेड़में श्रीमथु-
राजी आये तब स्त्रीने कहा यहां श्रीगौवधीन पर्वत के ऊपर श्रीना-
थजी विराजत हैं हमारे कुट्टदेवता हैं ताते उनके दर्शन करत-
चलो यह सुनिके यद्यपि वह सेवक न हतो परंतु भगवद् इच्छा
ते याके सन में आईसो दर्शन कूं गयो सो सैण ने दर्शन किये
ता समय वा स्त्रीने श्रीनाथजी सो विनती कीनी जो महाराज
मेरो हस्त श्रीगुसांईजी आपकी कान ते ग्रहण कियो हे ताते
मो सेवकको यह दुःसंग छुड़ाओ और अपने निकट राखो।
यह विनती सुनके श्रीनाथजी आपके श्रीहस्तसों गहिके बाकों
सदेहसों नित्यलीलामें अंगीकार किये तब वह व्राह्मण सरिके पड़चो-
तब श्रीगुसांईजी आप बाकों नित्यलीलाको दर्शन करवाये जब
गोपिकासंडलमें वा स्त्रीकों देखी तब वा नागरको संदेह मिठ्यो फिर
वह श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और नित्य लीलामें प्राप्त भयो
फिर बाको गांठ्योलीमें जन्म भयो और श्याम पखावजी नाम कर
प्रसिद्ध भयो बाकी एक बेटी ललिता नामक भई सो बीन बहुत
आछी बजावे और श्याम मृदंग बहुत सुन्दर बजावे ताके सुनवेके
लिये श्रीनाथजी एक दिनां चार प्रहर रात्रि जामे प्रातः कालं शांख-
नाद भयो तब निज मांदिर में पंधरे तब जगावती बिरियां श्रीगुसां-
ईजी लाल नेत्र देखके श्रीजीसूं पूछे बाबा आजरात्रि जागरण कहां
भयो तब श्रीनाथजी आज्ञा किये आज गांठ्योलीमें ललिताने बीन
बजाई और श्यामने मृदंग बजाये तब बड़ो रंग भयो यह सुनिके
श्रीगुसांईजी श्याम पखावजी और ललिताकूं बुलायके नाम सु-
नायो और श्रीजीकी सेवामें तत्पर कीने जहां जहां श्रीनाथजी

कीड़ा करे तहाँ तहाँ अष्टब्दाप गावें और ललिता और श्याम बजावे
॥ सब ब्रजवासीनने मिल श्रीजीकूं गाय भेट कीनी ॥

जब सब ब्रजवासीनने सुनी जो श्रीदेवदमनकूं गाय बहुत प्रिय हैं तब सचनने मिलके यह विचार कियो जो जाके गाय होय सो सब एक एक तथा दोय दोय भेट करो । और श्रीगिरिराजके आस पास जो चोर्बास गाम हते तिनके पाससुं सब ब्रजवासी मिलके एक एक दोय दोय गाय भेट करवाई और यह ठहरी जो बीस गाममें जाके प्रथम गाय ब्यावे सो बछिया तो श्रीदेवदमनकी भेट करे । ऐसें सहस्रावधि गाय श्रीजीके भेट भई तब दूध दही मांखन और मठा सब घरकी गायनको आरोगे ॥

॥ श्रीगुरुसाईंजीने श्रीनाथजीके खरच आदि प्रमाण बांध्यो ॥

फेर श्रीगुरुसाईंजीने श्रीनाथजीके खरचको प्रमाण बांध्यो सो वर्ष दिनके एक लक्ष १,००,००० रुपैयामें सब ठोड़ लडुवा और सामग्री आदि आरोगनलागे और उत्सवके प्रकार सब श्रीगुरुसाईंजीने बांधे । एक दहेंडी ब्रजवासीनके घरते राजभोगमें आवे और दूध दही सब घरकी गायनको आरोगे ॥

॥ ब्रजवासीनकी दहेंडी बंद तथा चल्लू करवो ॥

एक दिना राजभोग आरती पाँछे प्रसाद लेतमें एक सेवकने ब्रजवासीनकी दहेंडी मेंते रोटीको टूक देख्यो तब श्रीगुरुसाईंजीसों विनती कीनी तब श्रीगुरुसाईंजीने केरिके राजभोग धन्यो और ब्रजवासीनकी दहेंडी मने करी और दूधेघरमेंते एक दहेंडी राजभोगमें चल्लू कीनी । जब दूसरे दिन राजभोग आयो तब श्रीनाथजी रामदास भीतरियासों आज्ञा करी जो एक दहेंडी ब्रजवासीन्

की यहाँ धन्यो करो और तुम सावधान होय देखके लियो करो परन्तु राजभोगमें धन्यो करो । पाछे यह विनती रामदासजीके मुखते सुनिके श्रीगुसाईंजीनि ब्रंजबासीनकी ढहेड़ी राजभोगमें धराई तब श्रीनाथजी राजभोग आरोगे ॥

॥ श्रीगुसाईंजीनि गायनके खिरक चनवार्य और चार च्वाल राखे ॥

और श्रीगुसाईंजीनि बडे बडे खिरक गायनके लिये गुलाल कुंडके मारगमें बनवार्य तिनमें सब गाय विराजे और १ च्वाल गायनकी सेवामें राखे तिनके नाम कुमनदासके वेटा कृष्णदास १ गोपीनाथदास २ गोपाल च्वाल ३ और गंगा च्वाल ४ और दिवसमें जब गायन को चरायवेकों जाय तब श्रीजीके संग सब च्वाल मंडलीं जाय ॥

॥ श्रीजीनि गोपीविलभेत्ते आठ लड्डुवा चुरायें च्वालनकूं बाटे ॥

एक दिन व्याऊके ढाके तेरे श्रीजी खेलत हते सब च्वाल मंडलीं संग हत्ती ता समय गोपीनाथदास च्वालने कही जो श्रीदेवदमन अब तोकों श्रीगुसाईंजी लड्डुवा आरोगावत हैं तामें तूं हमकूं भी लड्डुवा लायो करि तब श्रीनाथजी कहे काल लाऊंगो । तापाछे गोपविलभेत्ते दूसरे दिन लड्डुवा आठ श्रीजी चुरायके लाये सो बनमें च्वाल मंडलीमें सब च्वालनकूं एक एक कर बांट दिये और दों लड्डुवा गोपीनाथदास च्वालकूं दिये तामेत्ते एक लड्डुवा तो गोपीनाथदास च्वालने खायो और एक बांध राख्यो । जब सामंकूं घर आये तब सब च्वालनने श्रीगुसाईंजीके आगे ढंडवत करी तात्समय श्रीगुसाईंजीके आगे सब भीतरिया ठाडे हते और आठ लड्डुवा घटे ताकी चर्चा करतहते । तब गोपीनाथदास च्वाल

ने लड़ुवा खोलिके बताये और कह्यो महाराज यह लड़ुवा तो नहीं है तब श्रीगुसाँईजीने और सबनने कही यह लड़ुवा उन आठनमेंको है तब श्रीगोपीनाथदास ग्वालने कही श्रीदेवदमन आज आठ लड़ुवा लायो तब एक एक सबनकूं बांट दिये और मोकूं दो लड़ुवा दिये । तब वा लड़ुवामेंते श्रीगुसाँईजीने एक कणि लीनी ओर सब वैष्णवनकूं कनिका कनिका बांट दियो फेर श्रीगुसाँईजी आज्ञा किये जो गोपीनाथदास ग्वालकूं दो लड़ुवा नित्य दियो करो । यह श्रीजीको इलेऊ हे इनको नेग हे और सब सेवकन- के सेवा अनुसार नेग बांध दिये ॥

॥ श्रीनाथजी चांवलके खेतके रखवारेकूं दो लड़ुवा दिये ॥

श्रीगिरिराजकी तरहटीमें एक श्रीजीको चांवलको खेत हतो ताकी दो छोरा रखवारी करते से एक दिन एक छोरा रोटी खायवेकूं गयो तब अवार लगी तब वो दूसरो छोरा श्रीनाथजीकी ध्वजाके साह्यी हाथ करिके पुकान्धो और कह्यो भैया श्रीदेवदमन में तेरे चोखाके खेतको रखवारो हूं और चोकी देत हूं मोहि खायवेकों पठाइयो । यह सुनिके परम कृपालु श्रीजी दो लड़ुवा बंटामेंते लेके वाकूं दे आये । फिरके बामेंते दो लड़ुवा घटे तब आपसमें चर्चा भई तब श्रीनाथजी आज्ञा किये मैंने चांवलके खेतके रखवारेकूं दिये हैं । तब वा छोराकूं श्रीगुसाँईजी आप बुलायके सेवामें राखे वाको नाम हरजी ग्वाल हो जाकी हरजी की पोखर करके प्रसिद्ध हे और तहां नित्य गाय जल पीवें हैं ॥

॥ श्रीनाथजीके राजभौगमें ब्रजवासीनकी दहेंडी नहीं आई ॥

॥ तासुं आप सुवर्ण को कटोरा गूजरीके घर धरके दही आरोगे ॥

ता पाढ़े केरि ब्रजवासीनके यहांकी दहेंडी एक नित्य

राजभोगमें आवती सो एक दिन अबेरी आई माला घोले पाछे सो राजभोग तो उसरि गयो ताते वह दहेड़ी भोग न धरी तब मध्यान्ह कालकूं अनोसर भये तब श्रीनाथजी कहे जो मैंने आज ब्रजवासीन को दही नहीं आरोग्यो तब एक कटोरा सुवर्णको मंदिरमें लेके बरोलीमें जो एक शोभा गूजरी रहती हती ताके घर पधारे तासुं कहे तूं मौकूं दही दे तब घाने सुन्दर दही जमायके धन्यो हतो वामेसुं दियो सो वा सुवर्णके कटोरामें सुं जितनी इच्छा हती तितनो आरोगे और सुवर्णको कटोरा वाकेही घर डारके श्रीजी श्यामघाट पधारे । तहाँ जलघरीमें जल अरोगे और गोपीनाथ-दास खाल कुंभनदास गोविन्दस्वामि प्रभृति सब मंडली देखो और गायहुं चरत देखी तहाँ सब खाल मंडलीसुं मिलके श्रीजी आंख मिचोनीको खेल खेले इतनेमें शंख नाद भये तब निज मंदिर में पधारे सब गाय हुं खिरकमें आई । जब मंदिरमें सेवकनने सुवर्णकी कटोरी न देखी तब आपसमें परपर वडी चर्चा भई इतनेहीमें बरोलीसुं शोभा गूजरी कटोरा लेके आई श्रीगुरुसाईजीकूं दियो और कही महाराज श्रीदेवदमन हमारे घर दही पायवेकूं आये सो बेला वहाँही डार आये सो में लाई हुं । यह सुनके श्रीगुरुसाईजी अपने मनमें बडो पश्चात्ताप करे जो हमने तो ब्रजवासीनको दही नहीं धन्यो परंतु श्रीनाथजी आरोगे बिना कैसे रहें वहाँ जायके आरोगे हें । ता दिना तें दहेड़ी बेगही मंगायके राजभोगमें धरते ॥

॥ श्रीनाथजी रूपके कटोरामें दहीभात आरोगे ॥

और एक दिन श्रीगोविन्दकुंडकी बाटमें श्रीनाथजी ठाड़े हते तहाँ एक ब्रजवासीनी दहीभात सांनिकें अपने छोरानकूं

छाक ले जात हती तापेसुं श्रीजी दहीभात मांगे तब बाने कही
बासन लाव तब रूपेको कटोरा मंदिरमेसो लेगये सो तामें
बाने दहीभात कर दियो तब निज मंदिरमें आय ता पदुंपहरीमें
अनोसरमें अरोगके कटोरा वंहांही डारादियो । जब उत्थापन पीछे
भीतरिया निज मंदिर में आये तहां देखेतो सखरो कटोरा पड़यो हे
तब पात्रमांजानसो पूछे तब उनने कह्यो हमने तो मांजके धन्यो
हे पछेकी हमकुं खबर नहीं । तब श्रीनाथजी श्रीगुसाँईजीसों
आज्ञा किये लब्धो गृजती पेट्यो की तापेसुं दहीभात लायके
हमनें आरोग्यो हे कटोरा मांजडारो । तब श्रीगुसाँईजी आप विचारे
जो आज काल श्रीष्म काल हे तासुं आपकुं दहीभात प्रिय हे सो
नित्य राजभोगमें करवे लगे एसे सब भोगनमें सब नेग बधि
श्रीजीकी इच्छाके अनुसार ऋदु ऋदु और समय समयके नेगकिये ॥

॥ श्रीनाथजीश्यामढाकपे छाक आरोगे ॥

और एक दिन श्रीजी गोपालदासको आज्ञा दिये जो हम
अपसरा कुँड ऊपर हें तूं श्रीगुसाँईजी सों जायके कहियो जो तुम
दहीभातकी छाक लेकै बेग पधारो हम श्याम ढाक तेरे हें तुम
दहीभात सिद्ध कर छाक लेकै पवारो हमकुं भूख लगीहें । तब
गोपालदासने जायके बिनती करी सो सुनके हीं श्रीगुसाँईजी अप-
रसमें छाक सिद्धि करके श्यामढाक पधारे तहां श्रीजी श्रीबलदेवजी
सहित और सब सखामेडली सहित छाक आरोगे । या लीलाको
अनुभव करिके श्रीगुसाँईजी आप बेठकमें पधारे ॥

॥ श्रीजी श्रीगुसाँईजीके घर मथुरा पधारे श्रीगुसाँईजी सर्वस्व
अर्पण किये श्रीजी तहां होरी खेज पछें गिरिसाज पधारे ॥

ए रु समय श्रीगुसाँईजी गुजरातकों पवारे हते और श्रीनाथजी

श्रीगिरिधरजीसुं आज्ञा किये में तुहारे घर देखवेकूं श्रीमथुरा चलूंगो
यह आशय जानके श्रीगिरिधरजी रथसिद्धि करवाये खरासके बैल
जोतके रथ दंडोती शिलापे ठाडो कियो । तब श्रीगोवर्धननाथजी श्री
गिरिधरजीके कंधापे चटिके दंडोती शिलापेसुं रथमें विराजे । श्रीगि-
रिधरजी रथकूं हाँकके श्रीमथुराजी अपने घर पधारे तहां सतघरा
में श्रीगुसाईजके घर पधराये संवत् १६२३ फालगुन बढ़ी ७ गुरुवार
के दिन पाट बेठाये । पाटोत्सव सातों घरनमें प्रसिद्ध और मानेहे ।
जादिना श्रीनाथजी श्रीगुसाईजके घर पधारे तादिना श्रीगिरिधरजी
ने सर्वत्व समर्पण कीनो एक परदनी पहरिके आप बाहर निकस
ठडे भये और बहु बेटी एक एक साडी पहरिके ठाडी रही द्रव्य आभू-
षण अमोल वस्त्र पात्र रथ अश्वादिक सब अर्पण कीने परंतु कमला
ब्रेटजीने एक नथ राखी और सब भेटकियो तब श्रीनाथजी आज्ञा किये
हमारी नथ लाओ ऐसी समाल लीनी यह अंगीकारको लक्षण हे ॥

॥ श्रीजीको होरी खेलवो ॥

फिर श्रीगिरिधरजी आदिक सब श्रीनाथजीकूं होरी खिलाये।
तापाछे श्रीजीने सब बहु बेटीनकूं आज्ञां दीनीं तुम मोकूं होरी खिलाये
औ तब प्रत्येक प्रत्येक सब बहु बेटीनने श्रीनाथजीकूं होरी खिलाये
चोवाकी चोली पहिराई मोहनीं शुंगार वियो परपर अनिर्वचनीय सुख
भयो और फगुआमें मुरली छिडायलई मन मानतो फगुवा दियो तबदीनी

॥ श्रीजीको श्रीगिरिराज पधारवो तथा श्रीगुसाईजीसुं मिलवो ॥

यह समाचार सब श्रीगुसाईजी सुनकै आप घर पधारे तब
श्रीगुसाईजीकूं पधारे जानके श्रीजी श्रीगिरिराजसुं आज्ञा किये
जो श्रीगुसाईजी मोकूं श्रीगिरिराजपे नहीं देखेंगे तो बड़ो खेद

करेंगे ताते सोकूं आजको आज श्रीगिरिराज ले चलो । तब श्रीगोपी-
बलभ आरोगके श्रीजी रथमें सवार भये और श्रीगिरिधरजीसूं
यह आज्ञा किये तुम रथ बेग हाँको आज राजभोग और सेनभोग
दोनो इकट्ठे श्रीगिरिराजमें आरोग्यगो ऐसें कही चार घण्टी दिन पा-
छिलो रहे तब श्रीगिरिराज पधारे दंडोती शिलापे रथमेसूं उतरिकें
और श्रीगिरिधरजीके कंधापे चढ़िके निज मंदिरमें पधारे तहाँ
कूदिके चरण चोकीपे जायं विराजे । यह लीला अत्यंत अल्पाकिक
हे तर्कागोचर हे तादिन नृसिंह चतुर्दशी हती सो उत्सव सब
श्रीगिरिराजपे पधारिके कीनो राजभोग और सेन भोग एकट्ठे कीने
तासों नृसिंह चतुर्दशीके दिनां सेनभोग और राजभोग, भेलोही
आवेहे । और दूसरे दिना पूर्णमासी ता दिना श्रीगुसाईजी गुजरात
तें पाछे श्रीगिरिराज पधारे जब यह सब वृत्तान्त सुने तब आज्ञा
किये श्रीगोवर्धननाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने श्रीगिरिराज
ऊपर पाट बेठाये तासूं हमकूं कृपा करि श्रीगिरिराज ऊपर दर्शन
देत हे यही हमारी अभिलाषा हे श्रीगुसाईजी श्रीनाथजीके कपोल
स्पर्श करि पूछे बाबा श्रीमथुरा कोन कारणसों पधारे तब श्रीनाथजी
आज्ञा किये सब बहू बेटीनकों देखवे गयो हतो ऐसें परस्पर आज्ञा
करि मिलके बडे आनन्दित भये ॥

॥ श्रीजीके कवायको टूक डारमें उराजि रहो ॥

एक दिना श्रीनाथजी गोविन्दस्वामीके संग श्याम ढाक ऊपर
खेलत हते ता समय मंदिरमें शंख नाद भये तब श्रीजी उतावले
पधारेसो कवायको टूक डारमें उराजि रहो तब श्रीगुसाईजी
भोग समय दर्शन करिके खेद करे जो न जानिये यह कहा कारण

हे ताही समय गोविंदस्वामी वहांसों आयके वह कवायको दृक् श्रीगुसाईजीको दीनों और कही तुमारो लड़िका बहोत चपल हे तब वह दृक् लेके श्रीगुसाईजी वा कवायमें लगाये दिये और राम-दास को आज्ञा करी जो शंखनाद भये पीछे थोड़ीसी बेर रहिके जब श्रीजी मंदिरमें पधारे तब टेरा खोलयो करो ॥

॥ श्रीजी छोटे बागाकूँ छोटे स्वरूप धरि अंगीकार किये ॥

एक समय श्रीगुसाईजी श्याम बागा करवाये सो वा मेलको वस्त्र थोड़ो भयो तासुं बागा कंछूक छोटो भयो जब श्रीगुसाईजी श्रीजीकूँ बागा पहिराये तब वाही बागाके अनुसार छोटो स्वरूप धरिके अंगीकार किये तब श्रीगुसाईजी बहोत प्रसन्न भये ता समय श्रीगिरिधरजीके और श्रीगोकुलनाथजीके आगे एक श्लोक ता समयकी लीलाको प्रसन्न होयके आज्ञा करे सो श्लोकः—

इयामकञ्चुकनिदर्शनेन मन्मानसेऽप्यणुतेरेऽपि महान् सः ॥

गोकुलैकजनजीवनमूर्तिर्पस्यति स्वकृपयैव दयालुः ॥ १ ॥

॥ श्रीजी रूपमंजरीके संग चोपड खेले ॥

एक दिनां श्रीनाथजी गवालियाकी बेटी रूपमंजरी हती ताके संग चोपड खेलवे पधारे चार प्रहर रात्रि चोपड खेले और बीन सुने वह बीन आँखी बजावत हती चार प्रहर रात्रि वहां ही बिराजे नंददासजीको बाकों संग हतो गुणगान आँखे करत हती ताके लिये नंददासजीने रूपमंजरी ग्रंथ कियो हे तामें चोपाई धरी हे—

“रूपमंजरी त्रियाको हीयो । सो गिरिधर आपनो आलय कीयो” पाँचे प्रातःकाल निजमंदिरमें पधारे तब मंगलाके समय श्रीजीके नेत्र कमल आरत्त देखे तब श्रीगुसाईजीने पूछ्यो बाबा आज

रात्रि कहाँ जागरण भयो तब श्रीनाथजी सब वृत्तान्त कहे रूप
संजारीसो चौपड़ खेलवेको गयो हतो तब श्रीगुसाईजी मने किये
लौकिक शरीरके लिये इतनी दूर परीश्रम न करिये यहाँ ब्रजभ-
क्षेनके संग सुखेन चौपड खेलो ताही दिनासुं मंदिरमें चौपड मँडी ॥

॥ अकबर पात्शाहकी बेगम बीबी ताज ॥

एक अर्लीखाँपठानकी बेटी बीबी ताज जाकी धमार हे । —
“निरखन आवत ताजको प्रभु गावत होरी गीत” सो अकबर पात्शाहकी
बेगम हती और श्रीगुसाईजीकी सेवक हती तासों श्रीनाथजी आगरेमें
सतरंज खेलते सो श्रीगुसाईजी जान पाये तब मने किये तो दिना
तें सतरंजहू श्रीगुसाईजीकी आज्ञा तें मंदिरमें बिछन लगी । और
एक दिनां देशाधिपतिने श्रीगिरिराजकी तरहटीमें डेरा किये तब
वाकी बेगम ताज श्रीजीके दर्शनकू आई वाकुं श्रीनाथजी सज्जात्र
दर्शन दिये और सेन दीने तब वाकों अल्यंत आर्ति बँडी सो श्रीना-
थजीसों मिलबेकों दोडी और ऐसें बोली में श्रीनाथजीसुं मिलूंगी
तब वृदावनदास जवेरी हते तिनकी बेटी ताजके संग सतरंज
खेलती सो राय वृदावनदासकी बेटीने थाम रखी और बांह पक-
डिके नचे ले आई तब तरहटीमें आयके वाको लौकिक देह छूटि
गयो और अलौकिक देहसों श्रीजीकी लिलामें प्राप्त भई तब संब-
नकूं भय भयो न जानिये पात्शाह अब कहा कहेंगे परंतु श्रीना-
थजीके प्रतापसुं बाने कछू न कह्यो पर सुनिकें यह कही जहाँकी
वरतु तहाँ पोहाँची ऐसे कहिके दिल्लीकूं चल्यो गयो । ऐसेंही कृष्ण-
दास अधिकारीने वेश्याकूं मिलाई । और चरित्र तो शेष महानाग
गणना करें तोहू पर न आवे ॥

॥ श्रीनाथजी अटारी ढवायदेकी आद्वा किये ॥

और विलङ्घके सामने एक बारी श्रीआचार्यजी महाप्रभुने रम्भवाई हती तामें तें श्रीआचार्यजी महाप्रभु ग्वाल मंडलीकों देखते सो एक दिना श्रीगोकुलनाथजी चूंगार करत हते तब बारीमें तें धूप आई ग्रीष्म क्रुतु हतो सो धूप असेली लगी तब बाके अहे एक अटारी करवाई सो बनवायके श्रीगोकुलनाथजी श्रीगोकुलकुं पधारे । तब श्रीजीने सोहना भंगीसों आज्ञा करी तुं श्रीगोकुलनाथजीसों कहियो यह अटारी ढवाय डारो मोकों विलङ्घ नहीं दीखे हे । यह सुनके वह भाज्यो सो अडींगके यहां आयके श्रीगोकुलनाथजीसों कही महाराज छोटे म्होडे बड़ी बात हे श्रीनाथजी आज्ञा किये हें जो यह अटारी ढवाय डारो मोकों विलङ्घ नहीं दीसे हे । तब श्रीगोकुलनाथजी पूछे श्रीनाथजी मेरो नाम जानत हें गदगद कंठ होयके दो चार वेर बाके म्होडेसों कहवाई और कही श्रीजी केसे आज्ञा किये वहांहींसूं आप पाछे श्रीजीद्वार पधारे श्रीनाथजीकों सामग्री ओरोगवाये क्षमा करवाये और अटारी ढवाय डारी तब श्रीनाथजी बहुत प्रसन्न भये ॥

॥ कल्याण जोतिषीकी कथा तथा श्रीगिरिधरजीको

श्रीमथुरेशजीके स्वरूपमें लीन छेदो ॥

एक श्रीगिरिधरजीको सेवक कल्याण जोतिषी वैष्णव हतो कीर्तन श्रीजीके आगे गावतो सो एक दिन श्रीगिरिधरजी श्रीनाथजीकूं बीडी आरोगावते और कल्याण जोतिषी यह कीर्तन करतो “ मेरेतो कान्ह हें री प्राणसखी आनन्द्यान नाहिन मेरे दुःखके हरण सुखके करण ” इत्यादि यह कीर्तन गावत चित्तमें यह विचार करो जो श्रीगुंसाईजीके अष्टव्यापके वैष्णव कीर्तन करते तब श्रीजी

हंसते अब हँसे बोलें नहीं हैं इतनो मनमें संदेह कीनो यह मनकी बात श्रीजी अंतरजामी जानकें बीड़ी आरोगत में हंसि हंसिके श्री गिरिधरजीसूं आज्ञा किये यह वैष्णव कीर्तन आँछे करतहे यह मुक्तिस्थानको दर्शन कल्याण जोतिषीकूं भयो । तब श्रीगिरिधरजी आज्ञा किये यह घटा किन पे बरसी पाछे कारण जानके श्रीगोकुलनाथजोसौं आज्ञा किये । श्रीनाथजी सदां एक रस बिराजत हैं आदि मध्य और अवसानमें । श्रीगुमाँईजीके आगे शुद्ध पुष्टि-सृष्टि हती ताते सबन तें संभाषण करते बोलते और खेलते हते अब मिश्रित पुष्टिसृष्टि है ताते सबनकी सेवा तो अंगकार करें हैं परंतु संभाषण शुद्ध पुष्टिसृष्टिसौं करत हैं ॥ ऐसें आज्ञा करत श्री गिरिधरजी तब श्रीमथुरानाथजीके मुखारविंदमें लीन वहे भये । सो केसें । जब माला को प्रसंग भयो हतो तब श्रीगोकुलनाथजी तो धर्मकी रक्षा कीने और श्रीगिरिधरजी श्रीमथुरेशजीको शृगार करत हते और श्रीदामोदरजी श्रीजीके पास रहते जब श्रीमथुरेशजी उबासी लीनें ताहीमें श्रीगिरिधरजी लीन भये । जब दोऊ भाई यह देख शोच करत भये तब श्रीनाथजीकी यह आज्ञा भई जो शोच मति करो या उपर्णीसौं लौकिक कार्य करवाओ ॥

॥ श्रीदामोदरजी गादी बिराजे ॥

तब श्रीदामोदरजी गादी तकिया बिराजे और ता समय तीन लक्ष रूपैया श्रीजीकी गोलकमें भेटके हते सो भंडारीनें श्री दामोदरजीसौं छिपाये पाछें श्रीनाथजीने आज्ञा करी जो जान अजान वृक्षके नीचे तीन लक्ष मुद्रा धरी हैं भंडारीनें चुरायके राखीं हैं ताकूं तुम मँगाय लेउ । तब श्रीदामोदरजी मँगाय लिये ॥ ऐसे श्रीनाथजी दैवी द्रव्य अंगीकार किये ॥

मं कटार वांधिवको झूँगार ॥

एक समय श्रीसुरलीधरजीको मनोरथ कटार वांधिवको हतो सो दीकित श्रीगुरुसाईजीसों आज्ञा विये जो विजया दशमीके दिनामें धर्मगो तब वैसोई झूँगार भयो ॥

॥ भैया बंधुनके झगडेमें श्रीविष्णुलरायजीको आगरे पधारनो श्रीजीसुं विनती दरवो श्रीजीकी आज्ञा तथा पात्शाह-
कोभी श्रीजीकी आज्ञा प्रमाण झगडो चुकायवो ॥

ओर एक दिन श्रीदासोदरजीके युव श्रीविष्णुलरायजी आ-
गरे पधारे भैया बंधुनको झगडो हतो सो नित्य उपद्रव देखिके
चित्तको बडो खेद भयो तब श्रीजीसों विनती कीनी उनकी ओर
तो पात्शाह बोले हैं। मेरी ओर कौन। तब श्रीजी आपदर्शन दृन्जे
लाल छरी हाथमें है और श्रीविष्णुलरायजीके पास आप विराजे
मरतकपे श्रीहरत धरे ओर समाधान कर्यो और यह आज्ञा ५ किये
जब श्रीगुरुसाईजी श्रीगिरिधरजीमें पधारे तब सतों बालकनकुं भेरे
आगें लायके ठाडे किये और मोसों कही जापे आप प्रसन्न होय
तापे सेवा करवावे तब मैंने श्रीगिरिधरजीको हरत ग्रहण कीनो और
जो सब बालक करेंगे वोह उठायबे लायक सामर्थ्य श्रीगिरिधर-
जीमें है मोकुं आपने घर श्रीमथुरामें पधराये सर्वरव समर्पण किये
ओर दंडोती शिलापेते कंधापे चढायके निजमंदिर पर्यंत पधारे तथा
अडेलते ब्रजकुं पधारत मैं श्रीनवनीतप्रियजीको संपुट श्रीगुरुसाईजी
छहों बालक ऊपर धरे परंतु काहूपे उठ्यो नहीं तब श्रीगिरिधरजीने
उठायो ताते सुख्य सेवा तुमहीकुं है और वरस दिनके तीनसों
साठ दिन हैं तामें साठ दिन उत्सवके सुख्य झूँगार हैं सो तुम

+ यह आज्ञा क. पु. में—कहुं और अद्वरनसें हैं, अर्थ एकही है।

करो और तीनसो दिनके शुंगार सब श्रीगुसाँईजीके बालक करें
यह आज्ञा करके श्रीनाथजी श्रीगिरिराजपे पधारे और पीछे दूसरे
दिन पातशहनेहूँ जैसे श्रीनाथजी आज्ञा करे हते ताही प्रकार
लिखि दीनो ओर एक लिखतम श्रीविठ्ठलरायजीनेहूँ लिख दीनी
तब इण्डो सब मिट गयो श्रीविठ्ठलरायजी आप घर पवारे ॥

॥ श्रीविठ्ठलरायजी श्रीजीको टिपारेको शुंगार किये ॥

ओर श्रीविठ्ठलरायजी टिपारेको शुंगार श्रीजीको बहोत
आछो करते सो श्रीनाथजीको बहोत भ्रिय लगतो महिनामें दो चार
बेर आज्ञा करिके टिपारेको शुंगार करवाते दर्पनमें स्वरूप देखिके
श्रीनाथजी बहोत प्रसन्न होते । पछे एक बेर श्रीविठ्ठलरायजी
बडे शहरको पधारे तब श्रीगुसाँईजीके कोई बालकने टिपारेको
शुंगार करवेको मनोरथ कीनो तब श्रीनाथजीने नहीं करी जब
श्रीविठ्ठलरायजी पधारेंगे तब टिपारेको शुंगार करेंगे पाछे श्रीविठ्ठ-
लरायजी पधारें तब टिपारेको शुंगार किये एसे श्रीनाथजी स्वकीय
के पक्षपाती हैं ॥

॥ श्रीजीकूँ श्रीगिरिधरजी बसन्त खिलायें ओर डौल झुलायें ॥

श्रीविठ्ठलरायजीके लालजी श्रीगिरिधरजी सो एक बेर लाहोर
पधारे जब डोल उत्सवके सोरह दिन बाकी रहे तब श्रीजीने
आज्ञा करी “जब तुम मोक्ष बसंत खिलाओगे तब खेलूंगो और
एक वैष्णव लक्ष मुद्रा भेट करेगो सो लेकें बैग आइयो पाछे दूसरे
दिन वितनी भेट आई ताकूँ लेकें बाहारा दिनमें श्रीगिरिगज पधारे
तब श्रीजीकूँ बसंत खिलाये ता पाछे डोल झुलाये तब श्रीजी बहोत
प्रसन्न भये । ऐसे श्रीनाथजी श्रीगिरिधरजीकी कानतें टीकेतनको

पक्षपात करे और श्रीगुरुसाईंजी की कानें सब वल्लभकुलकी सेवाकी अपेक्षा रखत हैं परंतु मुख्य सेवा टीकेतनपे करवावें हैं । ॥ श्रीगोकुलनाथजी श्रीजीकूँ फाग तथा वसंत खिलाये ॥

ऐसेही श्रीगोकुलनाथजी काशमीर पधारे जब माला प्रसंगकूँ दिविजय करि पाछे पधारे तितने फालगुन व्यतीत होय गयो तात श्रीगोकुलनाथजी तो फाग न खिलाये तब श्रीजीने एक दूधघरिया ग्वाल हतो तासूँ आज्ञा करेः, तू श्रीवल्लभसूँ कहियो मोकुँ वसंत खिलावे तब वाने श्रीगोकुलनाथजीकूँ चैत्र वंदि ११ दिन कही ता दिन वसंत खिलाये और गुलाबके फूलनकी मंडली भई आसपास केरा माधुरीकी लतानकी कुंज भई मुकटको शृंगार भयो यह धमार गाई “सदा बसंत रहे वृन्दावन लता लुम डोले” ऐसे श्रीजी वल्लभकुलकी अपेक्षा रखत हैं ॥

ओर एक दिना श्रीलक्ष्मणजी महाराज श्रीरघुनाथजीके वंशमें हते वे गानकलामें बडे कुशल हते सांझकूँ शृंगार बडे भये पीछे यह पद गावत हते “दुहिवो दुहायवो भूलगयो” सो ओर एक दिन फालगुनमें धमार गाये सो जब हथियापेर आगे संपूर्न भई तब घडी ४ अनोसर पाछे ताई गायो करे तब श्रीगोकुलनाथजीने पूछ्यो के या बेर कीर्तन क्यों तब काहूने कहिके लक्ष्मणजी गावें हैं फेर नाहीं रखाये तब रात्रिकूँ श्रीनाथजीने आज्ञा दीनी स्वासमें श्रीगोकुलनाथजीकूँ कहै के ये जेसे गावें तैसे इनकूँ गायबेदो इनकी यही सेवा है ॥

॥ श्रीगुरुसाईंजीकी मेवाडके रस्ता होयके द्वारका पधारनो और सीहाड नामक स्थलमें श्रीजीके पधारन्वकी भविष्य बाणी आज्ञा करी और राणाजी तथा राणीजी आदिकों सेवक करने ॥

और एक समय श्रीगुरुसाईंजी श्रीद्वारका पधारे सो मेवाडके

रस्ता होयके पत्रारै तहाँ एक सिंहाड नामक स्थल बहोत रमणीय देखके श्रीगुसाँईजी बाबा ह रिवंशजीसों आज्ञा किये “ या स्थलमें कोई काल पछिं श्रीनाथजी बिराजेगे और हमारे आगे तो श्रीगिरिराजकों छोड़िकें न पधारेंगे ” तब श्रीगुसाँईजीने दोयदिन वहाँ डेरा रखे पाछे राणा श्रीउदयसिंह नी दर्शनकों आये सोमोहर और एक गाम भेट किये तब श्रीगुसाँईजी प्रसादी वस्त्र और समाधान दिये ताकों ग्रहणकर देखोत करी और अपने घर गये । ता पाछे उनकी राणी दर्शनकूँ आई सो विनमें मीरांबाई राणीजीकी बेटों सुख्य सोऊँ दर्शनकूँ आई और राणीजीके कुवरकी राणी अजब कुवर हती तानें श्रीगुसाँईजीके पाससे बह्संबंध कीनों सो वाकों श्रीगुसाँईजीके दर्शन स्वरूपासकि भई । जब श्रीगुसाँईजी द्वारकाजी पधारवेकी इच्छा करें तब वाकूँ मूर्छ्ही आय जाय तब श्रीगुसाँईजी आज्ञा किये जो “ हमारो यहाँ रहेनो न बनेगो श्रीजी तोकों नित्य दर्शन देंगे ” ऐसें आज्ञा करके श्रीगुसाँईजी द्वारका पधारेतोकों नित्य दर्शन देंगे ॥ श्रीजीको नित्य मेवाड पधारवो और अजब कुँवरीसों चौपड खेलवो तथा मेवाड पधारवेको नियम करवो ॥

ता पाछे श्रीजी श्रीगिरिराजसों मेवाड पधारके अजब कुवरिकों नित्य दर्शन दें और तासों चौपड खेलके पाछे श्रीगिरिराजरिकों नित्य दर्शन हैं और तासों चौपड खेलके पाछे श्रीगिरिराजरिकों नित्य दर्शन होय ” तब श्रीजी आज्ञा किये जहाँ तर्फ श्रीगुसाँईजी नित्य दर्शन होय ” तब श्रीजी आज्ञा किये जहाँ तर्फ श्रीगुसाँईजी भूतलपे बिराजे हैं तहाँ तर्फ तो में श्रीगिरिराजकूँ छोड़िकें न आऊंगो पाछे मेवाडमें अवश्य आऊंगो और बहोत वर्ष पर्यंत बिराजूंगो

* जहाँ तेरे महल हैं तहाँ मंदिर बनेगो । लिखित पुस्तकमें ये पाठ अधिक है ।

जब फिर श्रीगुरुसाईंजी अपने कुलमेंसों प्रगट होय ब्रजमें पधरा, वेंगे तब ब्रजमें पधार्णगो और फिर बहोत वर्ष पर्यंत श्रीगिरिराजपे कीड़ा कर्णगो यह श्रीनाथजी आज्ञा करके श्रीगिरिराज पधारे ॥

॥ श्रीनाथजीने मेवाड पधारवेकी सुधि कर एक * असुरकों श्रीगिरिराजते उठाय देवेकी प्रेरणा कीनी ॥

कोईक कालांतर करिके श्रीजीकूँ मेवाड पधारवेकी सुध आई तब आप चिचारे “ जो मेवाडमें तो अवश्य पधारनो और श्रीआचार्यजी तो श्रीगिरिराजपे पाट बेठाये हें तातें श्रीवल्लभकुल बहुधा न उठावेंगे बलात्कारसों उठानो कोईक छ असुरकों प्रेरणा करनी जो मोक्षे उठाय देय ” तब एक समय श्रीवल्लभजी महाराजको स्वप्न भयो जो श्रीजी श्रीगिरिराजपेते उठिके ओर कोई एक देशकों पधारे । जब सेन आरती भये परिषे सब सेवक घरकूँ जाय तब एक म्लेच्छ आवे सो डाढ़ीसों जगमोहन तथा कमलचौक झाड़े ऐसे वहारा वर्ष पर्यंत बाने डाढ़ीसों मंदिर भाड्यो परंतु काहूँकूँ खबर न पड़ी योग बलते आकाश मारग होयके आवे ओर वाही मारग होयके जाय सो एक दिन श्रीगोवर्धननाथजी वपे प्रसन्न भये अपने वंटामेंते लेके दो प्रसादी बीड़ा वाकों दिये ओर आज्ञा किये “ बावन वर्ष पर्यंत मैंने तोकूँ राज्य दीनो तूँ मोक्षे श्रीगिरिराजते उठाय दे ओर आज पछिं मेरे मंदिर तूँ मति आइयो मेरो मंदिर तो श्रीगिरिराजमें गुस होय जायगो तब तूँ तहाँ महजित बनायके देङ्डवत कन्यो करियो आगे भीतर मत आइयो “ यह आज्ञा सुनके यवन आगरेको गयो सो श्रीजीकी आज्ञाते बाने प्रबल राज्य कियो ॥

* असुर म्लेच्छ और यदन अर्थात् बादशाह और गजेव,

॥ श्री देशाधिपतिने एक हलकारा श्रीजीद्वार पठायो ॥

तब वा देशाधिपतिने एक दिन एक हलकारो श्रीजीद्वार पठायो सो वा हलकाराने आर्थके श्रीविठ्ठलरायजीके पुत्र श्रीगोविंदजी हते तिनसों कही और टीकेत तो श्रीगिरिधारीजीके पुत्र श्रीदाऊजी हते सो वर्ष पंद्रहके बालक हते श्रीगिरिधारीजीके छोटे भाई श्रीगोविंदजी हते सो श्रीजीके यहांको अधिकार करते ताते हलकारने उनसों कही “देशाधिपतिने* कही है जो श्रीगोकुलके फकीरोंसे कहो जो हमको कछू करामात दिखाओ नहीं तो हमारे देशमेंते उठजाओ” तब श्रीगोविंदजी श्रीजीसों पूछे “जो देशाधिपतिने करामात मांगी है या मारगमें तो आपकी कृपाही करामात है जो आज्ञा आप करो तो हम वाकों करामात दिखावें” तब श्रीजीने कछू उत्तर नहीं दिनो तब श्रीगोविंदजीकों बड़ी चिंता भई और विचार किये जो श्रीजीकी आज्ञा बिनातो कछू चमत्कार दिखायो न जाय और नहीं दिखावेंतो यहांस्थिति नहीं तासु अब कहा उपाय करनो ॥

॥ श्रीगिरिधारीजीके लीलामें पधारवे अदिको संक्षेप वृत्तान्त ॥

श्रीगोविंदजीके बड़े भाई श्रीगिरिधारीजी लीलामें पधारे हते उनके ऊपर श्रीजीकी बड़ी कृपा हती सो श्रीगिरिधारीजी देशाधिपतिके आज्ञापन परवाना ऊपर सही न करी और आज्ञा किये “जहां ताई हम निराजे हैं तहां ताई तुझसे गदीसें कछू न होयगो”, ऐसें कहिके आप श्रीजीद्वार पधारे इन श्रीगिरिधारीजीके और गोवर्धनके ब्राह्मनसों तथा गोरवानसों असमंजस पड़यो तब दानघाटीको मारग छोड़ दियो और श्रीगोविन्दकुंडपे टांकीनसुं

* अर्थात् बादशाह और गजेव.

१ प्राचीन परवानाके ऊपर सही करिवेकुं दिल्ली पंधारे हते तब बादशाहने क.पु.पाठः

गोविंदधारी बनाई ताते वह प्रायश्चित्त दूर करवेके लिये आपकूँ
बरछी लगी हती ताते ललिमें पधारे सो ललिमें सजा सर्वदां
श्रीगोवर्धननाथजीकी सेवा करत हैं ॥

॥ लीलमें पधारे श्रीगिरिधारीजी श्रीगोविन्दजीकों श्रीजीकी आज्ञानुसार
मेवाड पधारवेको सविस्तर वृत्तान्त आज्ञा किये ॥

तिन श्रीगिरिधारीजीसों श्रीनाथजी आज्ञा किये जो श्रीगो-
विंदजी चिंता करत हैं तुमकूँ सुधि करत हैं तिनकूँ तुम दर्शन देकें-
हमारे मेवाड पधारवेको वृत्तान्त उनसों कहो तब श्रीगिरिधारीजी
अर्धरात्रिके समय श्रीगोविंदजीके पास आयके दर्शन दीने तब
श्रीगोविंदजीने एक पट्टा बिछाय दीनो तापर आप विराजे सो पहिले
तो एक श्लोक नवरत्नको कहे ॥

चिंता कापि न कार्या निवेदितात्मभिः कदापीति ॥

भगवानपि पुष्टिस्थो न करिष्यति लैकिकां च गतिष् ॥ १ ॥

पाछे यह आज्ञा किये जो श्रीजीकी ऐसी इच्छा है यहां
गुप्त कीड़ा करेंगे और श्रीआचार्यजीने श्रीजीकी जन्मपत्रिका बनाई
ओर श्रीगोपाल यह नाम धन्यो ताते गायनकी रक्षा करनको पधा-
रेंगे यह मैलेच्छ तो मिष अर्थात् निमित्त मात्र है आगेके वैष्ण-
वनको मनोरथ नहीं भयो हे जहां तहां तिनको मनोरथ सिद्ध
करिवे कों श्रीजी पधारेंगे ताते रथसिद्धि करो काल सर्वसिद्धा
त्रयोदशी है ताते एक घड़ी दिन पाछलो रहे ता समय श्रीजी
विजय करेंगे ताते ओर चमत्कार कछु दिखावनो नहीं जेसे इच्छा
होय तेसे करनो जहां जहां आप इच्छा करें पधारें ताही अनुसार

१ और गोरवानने तो बरछी दीनी और ब्राह्मणने सोमल धन्यो “ख० पु० पाठः
२ मैलेच्छ अर्थात् बादशाह औरंगजेब.

चले चलो और बूढ़े बाबू महादेव मसाल लेके आपके रथके आगे चलेंगे सो रात्रिकूं तो आगे ताँई केर आगे दिवसमें पधारेंगे ढंहरे डेरा मारजने चहियें वह आवें और जो इच्छा होयगी सो गंगाबाई सों आज्ञा करेंगे सो तुम उन्हाँकों पूछलियो करियो और ब्रजवासी स्पर्श करेंगे और गारी देंगे तब रथ चलेगो ऐसेही जब ब्रजवासी गारी देंगे तब श्रीजी उठेंगे ऐसे आज्ञा करिके श्रीगिरिधारीजी श्रीजी पास शम्भा मंदिरमें पधारे ॥

॥ श्रीगिरिराजहुं श्रीनाथजी मेवाड पश्चात्येकों पहिले आगे पधारे ॥

सबारे राज भोग आरती बेग भई रथको अधिवासन करके और शुंगार करके रथ सिद्धि कियो और खरास के बेल रथमें जीतके दंडोती शिलपे लायके ठाड़ो कियो ता पाँड़े उस्ताकों बुलायके सब उपचार करवाये और श्रीगोविंदजी तथा श्रीबालकृष्णजी और श्रीवल्लभजी तीनों भाईन मिलके साष्टांग दंडोत कर चिनती कीनी और सब श्रीगोस्वामी और सब सेवक मिलके रथ पधराये तो हुआप उठे नहीं तब ब्रजवासीनकुं बुलाये जब ब्रजवासी आयके और गारी देके कहो उठेगोके नहीं एसे तेसे कहा यहां हीं सबनके खुंड कटाविगो यह बात सुनके श्रीजी बहुत हंसे और यह सुनके कमलते प्रसन्न भये तुरंत उठे और रथमें आयके बिराजे। मिती आसोज प्रसन्न भये तुरंत उठे और रथमें आयके बिराजे। मिती आसोज सुकी १५ शुक्रवार संवत् १७२६ के पांचिली प्रहर रात्रिकों श्रीवल्लभजी महाराज पना सिद्धि कराये और आरोग्य पाँड़े रथ हाँके सो चले नहीं तब सब श्रीगोस्वामी चिनती किये तब श्रीजी आज्ञा किये “ जो गंगाबाईकों गाड़ीमें बेठायके संग ले चलो रथके पाँड़े गाड़ी चली आवे ” तब गंगाबाईकूं तत्काल लाये गाड़ी श्रीजीके

रथके पाछें पाछें चले जहाँ रथ अटके तहाँ सब भेले होयके गंगा-
बाईकों पूछे तब सब बृत्तान्तों गंगाबाई कहें। ऐसें एक रात्रिमें आगरे
पधारे दूड़े बाबू महादेव आगे प्रकाश करत पधराये आगरेमें
आपकी हवेली हती तहाँ पधारे ॥

॥ दो जलधरिया सेधा ओर सभाको अल्पाकिक पराक्रम ॥

ओर दो जलधरिया श्रीजीके सेवक जल भरते सो जा-
बिरियाँ देशाधिपतिको उस्ता मंदिर ढायवेकों आयो ता समय वाके
संग ८०० दोसो म्लेच्छ हते सो विन जलधारियानने सिंहपोर
भीतर न छुसिवे दिये लंडे सो सगरे म्लेच्छनकों मार और उस्ताकों
छोड़ दियो जो जायके खबर करेगो औरहू म्लेच्छ लावेगो तो
मारेगे। ऐसो उनकूं आदेश आयो हतो जो हाथमें तरवार लिये सिंह
पोर पेछः महिना तक ढाडे रहे परंतु उनकूं क्षुधा और प्यास बाधा
न करे विनने ढेढ महिना ताँई मंदिर ढायवं न दियो। फिर दूसरे
उस्ता १७ सतरे बिरियाँ ५०० पांचसो ७०० सातसो म्लेच्छ लंके
आयो परंतु उन दोऊ भाईनने सबनकूं मार डारे तब देशाधिपतिने
वजीरकों हुकुम दीनो सो बहुत म्लेच्छ संग लेके वजीर चल्यो।
तब श्रीजी किचारे जो इन दोऊ भाईनमें ऐसो आदेश भयो हे जो
सब म्लेच्छनकूं मारेंग ताते इनकूं दर्शन दीनो तब आगरेते पधारके
सिंहपोर पे उन दोउनकों दर्शन दीने और आज्ञा किये। “ जो
तुममें तो श्रीगिरिधारजीनें ऐसो आदेश घन्यो हे जो सब म्लेच्छनकों
मारो परंतु मेरी इच्छा नहीं हे अभी मैंने जहाँ तहाँ भक्तनकूं वचन
दीने से पहिले तिन तिन रथलनमें पधारुंगो तिन भक्तनके मनो-
रथसिद्धि काले कोईक कालांतर करके ब्रजमें पधारुंगो तब सर्व

कार्य होयगो तुम मेरी लीलामें आओ युद्ध मत करो । ऐसें कहिके श्रीनाथजी आगरे पधारे ॥ पाछे श्रीजीकी इच्छातें उनकी दिव्य हृषि भई तब दोउननें सब श्रीगिरिराज रत्नमय देख्यो और श्रीगिरिराजमें अनेक मंदिर रत्नमय देखे तिनमें बेहु मंदिरलमय देख्यो और श्रीगिरिराजमें लीन देख्यो और बहिरको दूरवा जो जहाँ नगारखाना बाजे हे तहाँ एक महेजित देखी तहाँ म्लेच्छ देख्यो सो अपनी डाढ़ीसुं मंदिर झाड्यो करे जब उन दोऊ भाईनकुं श्रीजीकी हच्छाको संपूर्ण ज्ञान भयो तब शश डार दिये और लैकिक शरीरको छोड़के श्रीजीकी लीलामें प्रात भये । इन दोऊ भाईनके नाम एकको तो सेवा और दूसरेको समा करके हते ॥

॥ २ ॥ अठारमी वेर पत्त्यहकी फोन श्रीगिरिराज आई महेजित बन्नाई ॥

ता पाछे अठारमी बेर सुतार और उस्ता पात्त्याहको सो नबाबकी फोज संग लेके श्रीगिरिराजमें आये और देखेतो श्रीजीको मंदिर तो कहुं दीसे नहीं तब वहाँ महेजीत बन्नायके चले गये ॥

॥ श्रीजी आगरे पथारे ताको सविस्तर बतात ॥

श्रीनाथजी जब श्रीगिरिराजसुं आगरेमें पथारे तब पाछिली रात्रि घडी छः रही हती दरवाजे सब खुले पाये चौकीदार सब निदानश हते काहूनें कहुं कछु रोक करी नहीं सूझेही श्रीनाथजी आपकी हवेलीमें पधारे आप रथमेंसे उतर हवेलीमें एक स्थल हतो तहाँ विराजे आज्ञा किये जो यहाँ अमरुद उत्सव करके आगे चलेंगे जाँ समय श्रीजी आगरेमें पथारे तां समय देशधिपति कांकरनके बिछोनामें अपनी महेजीतमें सोचत हतो तहाँ श्रीनाथजी ने जायके वाके एक लात मारी पीठमें और स्त्रीमें आज्ञा करी जो

“आजमें आगरेमें आयो हूं तूं हमारो कहा कर सके हैं मेही मेरी इच्छासों उठ्यो हूं ” दब म्लैच्छं जाग पड्यो पर श्रीजीकुं देखे नहीं षट्ठमें लाल मारी ताते चरण कमलको चिन्ह उघड आयो सो देवयो जहाँ ताँई जीयो तहाँ ताँई चिन्ह रहो आयो परंतु काहूसों कह्यो नहीं मनको मनहीमि राखतो श्रीजीको आगंधन सदा रुस करतो दो रोटी जोकी ओर चाराकी भाजी खातो पाथरन ऊपर सोवतो ऐसी तपत्या श्रीजीके दर्शनके लिये करतो ॥

॥ श्रीनवनीतप्रियाजीको आगरे पधराये ताको साविस्तर हृचांत ॥

ओर श्रीगोविंदजी दोऊ भाई सहित श्रीजीके संग पधरे तब श्रीनवनीतप्रियाजी श्रीगोकुलसे विराजते हुतेसो उनको पंधारवनकों मनुष्य भेजे और आज्ञा किये जो “ श्रीदाऊजी महाराजकों तथा बहु बेटीनकों पधरायके आगरे लेआओ और मुखिया भीतरिया विठ्ठल दुवेजीसों कहि आओ तुम श्रीनवनीतप्रियाजीकों पधरायके आगरे आओ , पाछे विठ्ठल दुवेजी सन.न करके शांखनाद करिके श्रीनवनीतप्रियाजीकों जगाये ता समय रात्रि प्रहर राहि हती सो श्रीनवनीतप्रियाजीआप निद्रामें हते ता समय दुवेजीनें श्रीनवनीतप्रियाजीसों बहोत विज्ञप्ति करी परन्तु जागे नहीं तब हाथसों पकड़के पधरायवे लगे तो उठे श्रीनवनीतप्रियाजी न उठे तब दुवेजीनें जानी जो आपकी इच्छा उठेकी नहीं है अबतो प्रातःकालकी बात सो ऐसे कहिके चोक्से रात्रिकुं सोय रहे जब घड़ी चार रात्रि रही ता समय फेर शुद्धनान कर अग्रसमें बछु सामग्री सिंह करी ता पाले श्रीनवनीतप्रियाजीकुं लगाये तब जागे कछू मंगल भोग भरके फेर शुंगार भोग धर म्यानासे पधराये तब दो चार भीतरिया ओर

जलवरिया संग हते तिननें तथा दुबेजीने स्यानो उठायो आगे कुपधार्ये पेड़ेमें प्रहर दिन चढ़े गौवाट पहुंचे । केर श्रीगुसाँईजीके तृतीय पुत्र बालकृष्णजी तिनके नाती श्रीनवरायजी उनको श्रीनवनीतप्रियाजीको आगे वरदान भयो हतो ॥ जो एक दिन राजभेग तेरे हाथसो आरोग्यगो ॥ ऐसें आज्ञा भई हतीताको प्रकार लिवतहें

श्रीगुसाँईजीके आगे यह रीत हती जब श्रीनवनीतप्रियाजी पोड़े तब सब श्रीगोस्वामी तथा भीतिरिया बाहर आवै ता पाँच सातों बालकनके घरकी बहू बेटी चरण स्पर्श करें सो श्रीबालकृष्ण जीके पुत्र श्रीषीतास्वरजी तिनकी बहूजी विननें सबतें पीछे चरण स्पर्श किये तब श्रीनवनीतप्रियजी उनसों आज्ञा किये “ मैं घर चलूंगो ” तब चोलीमें दुपकायके श्रीनवनीतप्रियजीको अपने घर पधरायके लेगई सो चार प्रहर रात्रि उनके घर विराजे जब शेष रात्रि रही तब बहूजीसों श्रीनवनीतप्रियजी आज्ञा किये जो अब सोकों श्रीगुसाँईजीके घरमें पधराय आओ जो श्रीगिरिधारीजी सोकों मंदिरमें न देखेंगे तो खेद करेंगे । यहां श्रीगिरिधारीजी तथा श्रीगोकुलनाथजी श्रीनवनीतप्रियजीकुं जगावेकों पधारे तब शर्याये श्रीनवनीतप्रियजीकों न देखे तब दोऊ भाई आपसमें बतराये जो यह कहा तब श्रीगिरिधारीजी आज्ञा किये कछू कारण है श्रीगुसाँईजीने हमारे ऊपर श्रीनवनीतप्रियजीकों पधराये हैं सो कहू न पधारेंगे ऐसें कहिं के दोनों भाई आपकी डोलतिबारीमें विराजे और श्रीगुसाँईजीको ध्यान हूँ हृदयमें करें हैं । अब यहां श्रीनवनीतप्रियजीने श्रीबहुजीसों केर आज्ञा करी हमकों शीघ्र ले जली तब श्रीबहुजीने केर श्रीनवनीतप्रियजीसों विनती कीनी जो महाराज हमारे घर राजभोग

आरोगिके पधारे तब श्रीनवनीतप्रियजीनें नाहीं करी और श्रीमुखसों आज्ञा करी “ जो आगे कोई काल पाँछे भाजडमें तेरे लालजी ब्रजरायजीके हाथ से राजभोग दूर दिन। आरोग्यगो अथ नोकों शरण्यापे पधरायके तं चली आव तोकूं कोई देखेगो नहीं, तब श्रीबहुजीनें वेसेही कियो श्रीनवनीतप्रियजीको मंदिरमें जाय शरण्यापे पधरायके आप अपने घरको गये ता पाँछे श्रीधिरधरजी मंदिरमें जायके श्रीनवनीतप्रियजीको जगाये ता पाँछे श्रीनवनीतप्रियजीको मंगल भोग धन्यो ॥

सो वरदान श्रीब्रजरायजीको सुधि हतो सो आगे श्रीनवनीतप्रियजीकूं पधारते जानिके सध्यमें गङ्गावाटके ऊपर रसोई राजभोग सिद्ध कर रखी और आप मारगके बीच ढाडे भये सो श्रीनवनीतप्रियजीको म्यानो देख्यो तब विश्वल दुबेजीसों कही श्रीनवनीतप्रियजी भूखे हैं सो राजभोग मेंने कर रख्यो हे सो अबतो श्रीनवनीतप्रियजी राजभोग आरोगिके पधरेंगे पाँछे वा स्थलपे श्रीनवनीतप्रियजीको पधराय लाए और तहां राजभोग लाय धन्यो श्रीनवनीतप्रियजी भोग आर्द्धा तरेसों आरोगे जब राजभोग सरायवेको समय भयो तब श्रीब्रजरायजी लै कही जोमें यमुनाजीके ऊपर संध्यावंदन करिआं दुबेजी तुम श्रीनवनीतप्रियजीके पास सावधान रहियो ऐसें कहिके श्रीब्रजरायजी तो श्रीयमुनाजीपे अपने मनुज्यनको लेके पधारे । ता पाँछे दुबेजीनें श्रीनवनीतप्रियजीको बीडा अरोगायके ओर आचमन करवायके श्रीनवनीतप्रियजी म्यानेमें पश्चाये और श्रीम सवारी आगे को चली सो प्रहर रात्रि गये श्रीनाथजी जा हैरेलीमें दिरा जंत हते तहां जाय एहुंके सो श्रीगोविंदजी, श्रीबालचूषणजी,

श्रीवल्लभजी, श्रीदालजी, आर समस्त बहु वेदीनके रेवद युक्ति हते सो श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन करके बहुतही प्रसन्न भये श्रीनवनीतप्रियाजीको उत्थापन भोग ओर सेन करिके शाय्योपे पोढाये ता पाछे श्रीगोविंदजीने दुवेजीको बुलायके आज्ञा कीनी तुम्हारे सर्वस्व श्रीनवनीतप्रियाजीको पधराय लाये ताते तुम कछू वरदान मांगो तब दुवजीने विनती कीनी “ जो महाराज हमारे वंशमें श्रीनाथजी ओर श्रीनवनीतप्रियाजीकी सेवा न छूटे ”, आपने आज्ञा करी एसेही होयगो हमारे वंशको जो होयगो सो तुम्हारे वंशको पठि न देयगा ॥

॥ श्रीगोविंदजी देशाधिपतिके हँलकारानकुं आज्ञा किये और गुप्त अन्नकूटको उत्सव आगरेमें कर आगे पधारे ॥

ओर अब श्रीगोविंदजी देशाधिपतिके हलकारेनसों आज्ञा कीने “ जो जहां तांडि हम अन्नकूटको उत्सव आगरेमें करें तहां तांडि तुम पांदशाहको खबर मत करियो,, वे हलकारे सब आपके सेवक हते जहां तांडि अन्नकूटको उत्सव भयो तहां तांडि खबर न सेवक हते जहां तांडि अन्नकूट भयो भातके ठिकाने खील करिके धरी ओर करी पाछे गुप्त अन्नकूट भयो भातके ठिकाने खील करिके धरी ओर समयानुसार यतकिंचित् पक्वान तथा सामग्री सब भई ओर गुप्त श्रीगोवर्धनपूजा किये या प्रकार विधि पूर्वक अन्नकूट भयो ॥

॥ श्रीनाथजीको दंडोत्थाटमें पधारनो ॥

अन्नकूट भये पीछे श्रीनाथजी गंगाबाईसों आज्ञा किये “ अब हम दंडोत्थाटकुं चलेंगे सो गंगाबाई आजही त्यारी करियो, तब गंगाबाईने श्रीगोविंदजी महाराजसुं कष्टो श्रीजीकुं रथमें पध-

रा औ तब श्रीगोविंदजीने श्रीनाथजीको रथमें पधराये तब दंडोतीवा-
टीको चले सो गजभोग आरती करके विजय किये तब दरवाजेके
ऊपर म्लेच्छ द्वारपाल बेठे हते सो उन्नेकल्प देख्यो नहीं अंधे
होय गये ऐसे करत मजलपे घडी छः दिन रहो तब तहाँ डैर
किये हे सो तहाँ उत्थापनसो लगाय सेन पर्यंत सब सेवा भई।
श्रीजी सुखसों पांढे।

॥ हलकारान ने श्रीजीके आगरे पधरावे आदि की लबर दीनी ॥

तब दूसरे दिन हलकारानने पादशाहकुं स्वबर दीनो “जो
साहब गिरिराजसुं जो बंदेव उठेथे सो रात्रिकुं एक हवेलीमें उनके
डेरा भये सबेरे फिर क्या जाने किधरकुं गये सो कल्प मालूम नहीं
होती,, यह सुनके पादशाहने कह्यो जो वाही हवेलीमें तुमकुं मा-
लूम किनतरह भई तब उन हलकारानने कह्यो जो साहिन उस
हवेलीके आसपास पातर दाना बहुतही बिखरे पड़े हे और पना
लेको पानी बहोत चल्यो हे ताते मालूम होती हे जो गोकुलिया
बिना इतना पानीका ओर दोना पातरका खरच और में नहीं होता
हे यह सुनके पादशाह अपने मनमें हंस्यो और उन हलकारानसों
कह्यो जो उनको आगरेमें आये बहोत दिन भये ओर आज उनकुं
चलेहूं तीन दिन भये जासमय आगरेमें आये हते तबहीं मेंने
जान्यो पर में क्या उनका दुश्मन हूं मुझे तो हुक्म किया सो
मैने कर दिया अब उनका शोक होय तहाँ खेले और किसके
आगे कहियो भति जो मुझा सुनेगा तो पीछे जायगा ॥

॥ म्लेच्छ + बहुतसे म्लेच्छ संगले श्रीजीके पाछे गयो ॥

जो जब बादशाह देवतान पे करामात मांगतो सो जब न

मिलती करामात तब वह मुल्ला आप जायके देवतानकों खंडित करतो। पांच सो म्लेच्छ वाके संग रहते और जब बाने यह बात सुनी जो गिरिराजके देव दंडोतीघाटकों गये। तब वह ब्रह्मोत म्लेच्छ संग लेके पछि चल्यो। तब पदशाहने नाहीं करी जो फकरि साहिब तुम मत जाओ वे देव करामाती हैं अपने शोकसों उठे हैं मैंने नहीं उठाये हैं यह सुनके वा म्लेच्छने पदशाहको कह्यो न मान्यो ता उपरांत वह तुरक गयो सो ता दिन श्रीजीको रथ चंबलके पार उत्त्यो और एक प्रहर रात रहे तहां रथ अटकयो तब श्रीगोविंदजीकी प्रेरणासों गंगाबाईने श्रीजीसों पूछी जो बाबा कहा इच्छा है? तब श्रीजीने कह्यो जो उत्थापन करो आज हम चंबलके तीरपर रहेंगे। इतनेहीमें वह तुरक चंबलके पहिले तर आय ठाड़ो भयो और श्रीगोविंदजी तो उत्थापनकी त्यारी करात वंत हते सो उनकों देखिके चित्तकुं उद्घेग भयो तब गंगाबाईसों कह्यो जो श्रीनाथजीसों पूछो जो पार म्लेच्छ आये हैं उत्थापनकी कहा आज्ञा हे। तब गंगाबाईने श्रीनाथजीसों ऐसें पूछ्यों तब श्रीनाथजी कहे जो उत्थापन शीघ्र करो तुमकों म्लेच्छसों कहा पड़ी हे जो आवेगो तासों हम समझ लेंगे तब शंखनाद भये सब निरंशंक ठौके सेवा करन लागे और यवन पार ठाडे हते तिनने श्रीगोविंदननाथजीको रथ देख्यो सो बडे पर्वतके प्रमाण देख्यो और श्रीनाथजीके संग मनुष्य हते सो बडे बडे सिंह देखे मनुष्याकृति काहूकी न देखी तब सिंहादिक सबकों देखिके वे म्लेच्छ आपसमें बतरान लागे जो यह तो सब शेरही दीखत हैं इनमें कोऊ आदमी

तो नजर नहीं आवत हैं। और ब्रजवासी आपसमें बोलें सो उन म्लेच्छनकों सिंहकीसी गरजना मालूम पड़े तब आपसमें कहन लगे जो इस जगहसे जल्दी भाजो नहीं तो ये सिंह हुंकारते हैं सो आपनकूं खानेके लिये चले आवेगे। इतनेमें जलधरिया चंबल नदी-पै जल भरवेकों आये तथा पात्रमाँजबेवारे पात्र माँजबेकों आये सो तिनकों देखके उन म्लेच्छननें कही जो यह सिंह अपनकूं खानेकूं आवत हैं ताते अब यहांते बेगही भजिके चलो नहीं तो सबनकों खाय जायगें। ऐसें कहिके वहांते सब वे भगे सो ऐसें भयके मारे भाजे जो काहूके बख गिरिपडे कोईके ऊपर कोई गिरत पड़त जैसें तैसें करके एक रात्रिमें आगरे आये। तब उन मूलाने पादशाहसों कही जो वंह देव बड़ो करामाती है हम अपनी जान बचायके नीठ भंजिके आये हैं आज पछि उस देवका नाम न लेउँगो तब पादशाहनें कही मैंने तो तुमकों पहिलेही मने कियाथा जो यह देव बंडा करामाती है तुम उनपे क्यों चढ़के गये ॥

॥ कृष्णपुर पधरायबेके लिये गंगाबाईके प्रति श्रीनाथजीकी आज्ञा ॥

दूसरे दिन श्रीनाथजी गंगाबाईसों यह आज्ञा करे जो श्रीगोविंदजी सों कहो सोकों फिर पीछे चंबल उत्तरके दंडोतीधाट ऊपर लैके चलो। सो तहां कृष्णपुर गाम है सो तहां श्रीजी विराजे ॥

॥ श्रीगुसाईजी श्रीबालकृष्णजीकूं वरदान दिये ॥

एक समय श्रीगुसाईजी आगे जन्माष्टमीके दिना श्रीबालकृष्णजी तृतीय पुत्र सो श्रीयशोदाजीको वेष किये हते सो श्रीगोकुल में श्रीनवनीतप्रियजीके मंदिरमें सो नंदमहोत्सवके दिना बहुत भाव-वृद्ध होयके श्रीबालकृष्णजी श्रीनवनीतप्रियजीको पालना भुलाये

श्रौर यह कीर्तनकी तुक गाई “ बहुर लए जननी गोद स्तन चले चुचाई । तुम ब्रजरानीके लाला ” और तासमय श्रीबालकृष्णजीके स्तनमेंसौं दूधकी धारा चली सो श्रीनवनीतप्रियजीको पलनामेंसूं गोदमें ले लिये । तब श्रीगुसाईंजी हाथ पकड़के श्रीनवनीतप्रियजीको पाछें पालना में पधराये और यह जानी जो श्रीबालकृष्णजी भाववृद्ध बहोत भये हैं इनमें श्रीमातृचरणको आवेश आयो हे सो श्रीगुसाईंजी बहोत प्रसन्न होयके कहे “ जो कछु वरदान मांगो ” तब श्रीबालकृष्णजी वरदान माँगे जो महाराज मोकों प्रति जन्माष्टमी ऐसोई आवेश रहे कछुक दिन श्रीनाथजीकी सेवाकी प्रार्थना हैं तब श्रीगुसाईंजी आज्ञा करे जो “ प्रति जन्माष्टमी तुमको ऐसोही आवेश रहेगो ओर श्रीनाथजीकी सेवामेंतो श्रीगिरिधरजीको अधिकार रहेगो क्यों जो श्रीनाथजीने श्रीगिरिधरजीको हाथ पकड़यो हे ओर आगे कोई काल पीछे श्रीनाथजी देशान्तरकों पधारेंगे तब तुहारे नाती ब्रजरायजी सत्ताईस दिन श्रीनाथजीकी सेवा करेंगे पाछें अड्डाईसमें दिन श्रीगिरिधरजीके वंशमें श्रीगोविंदजी होयेंगे सो पीछे छिडाय लेंगे ” यह वरदान श्रीबालकृष्णजीको श्रीगुसाईंजीने दीनो हतो ।

गुसाईंजीके वरदानसूं ब्रजरायजी श्रीजीकी सेवा सत्ताईस दिन किये

सो श्रीबालकृष्णजीके पुत्र श्रीपीताम्बरजी भये तिनके श्रीश्यामलालजी भये तिनके श्रीब्रजरायजी भये सो ब्रजरायजी पादशाहके संग बहुत रहते सो एक दिन पादशाह प्रसन्न भयो तब कह्यो “ जो श्रीब्रजराय तू कछु मांग तुमने मेरी खिड़मत बहुत

करीं हे चार बरस भये तुमकों मेरे पास रहते ” तब श्रीव्रजरायजी ने कही जो श्रीगिरिराजसों देव उठे हें तिनकी सेवा में कर्ण तब पादशाहने नाही कही जो हमेससे चले आवते हें सोई करेगे और तुमने मोकों नहुंत रिभायो हे ताते तेरोहू वचन खाली न गयो चाहिये तातं संग जाबता लेके तुम जाओ जहां वे होय तहां जाओ सो जाय कर एक महिना रहियो और आगे न रह सकोगे सो पादशाहको जाबता लेके श्रीव्रजरायजी दंडोतीघाट आये तब कृष्ण-पुरीमें श्रीनाथजी विराजे हते सो तहां श्रीव्रजरायजी आये ॥

॥ श्रीव्रजरायजीकूँ आये जान श्रीजी गंगावाईकों आज्ञा किये ॥

सो उनकूँ आये जान श्रीनाथजीने गंगावाईसों आज्ञा करी “ जो तुम श्रीगोविंदजीसों कहो जो तुम सब कुटुम्ब तथा सब मनुष्य हमारे परिकरके संबंधकों लेके यहांसों कोस दशके ऊपर एक गाम हे सो तहां एक बडो घर हे तहां तुम जायके एक महिनाभर विराजो सबनं सहित यहां श्रीव्रजरायजी आये हें सो इनकों पादशाहको हुंकुम भयो हे ताते वे सत्ताईस दिनां सेवा करेंगे और प्राचीन श्रीगुसाईजी को हू वरदान हे और अष्टाईसवें दिना तुम आयके श्रीव्रजरायजीकों सीक दीजो और मेरी सेवा तुम करोगे ” ॥

॥ श्रीजीकी आज्ञा गंगावाईने श्रीगोविंदजीसों कही ॥

सो यह बात गंगावाईने श्रीगोविंदजीसों कही जो श्रीदेव-दमन कर्तुमकर्तु अन्यथा कर्तु समर्थ हें ताते उनकी इच्छा होयसो आपनकों करनों आगे श्रीगुसाईजीनेहू आषाढ मासको विषयोगको अनुभव कियो हे सो आपनकों तो सत्ताईसही दिनाकों वियोग दीनो हे याते जो श्रीनाथजीकी आज्ञा हे सोई आपनकों कर्तव्य हे ।

॥ श्रीगोविन्दजीको सत्ताईसं दिनको विप्रयोग भयो ताको वृत्तान्त ॥

यह बात सुनके श्रीगोविन्दजी विचार किये जो श्रीआचार्य-
जीको यह वाक्य हे—

विवेकस्तु हरिः सर्वं निजेच्छातः करिष्यति ।

प्रार्थितो वा ततः किं स्यात् स्वाम्यभिप्रायसंशयात् ॥

ताते अब श्रीनाथजीसों प्रार्थना न करनी ओर ब्रजराय-
जीकी सामर्थ्य कहा हे जो हमारे आगे आयके श्रीजीकी सेवा करें
पर श्रीगुंसाईंजीको प्राचीन वरदान हे ताते सत्ताईसं दिन सेवा
करेंगे ताते अट्ठाईंसवें दिनां हम आयके श्रीब्रजरायजीकों निकासेंगे
ओर हम सेवा करेंगे ता पाल्के श्रीगोविन्दजी कुटुंब ओर सब मनुष्य-
कों संग लेके एक घरमें जाय विराजे तब गंगाधाईकों श्रीजी वहां
नित्य दर्शन देते ओर जब जैसे ब्रज भक्तनकों अंतर्धान लीला
विषे विप्रयोग भयो तब अन्वेषण करके श्रीभगवान्‌कों बनवेली सों
पूछे तेसे ही श्रीगोविन्दजीने श्रीनाथजीकों ग्राम ग्राममें पूछे एक देही
जलघरियां तथा पात्रमांजा तो श्रीजीके संग रहे ओर परिकर सब
श्रीगोविन्दजीके पास हतो जहाँ ताई श्रीगोविन्दजीने श्रीनाथजीकी सेवा
करी तहाँ ताई श्रीगोविन्दजीने फलाहार लीनो अन्न लाग कर दीने
ओर प्रातःकाल होय तब आप जोगीको मेष धारन करे मृग-
छाला वाधांकर ओढ़े ओर अवधूत वेश धरे शरीरमें भन्म लगायके
एक रोडा दरजी श्रीनाथजीको हतो वह सारंगी आँछी बजावतो
ताकों चैला बनायो ओर अवधूतको वेष कियो ओर आप गुरु
बनें वाकों संग लेके सारंगी बजावते ओर सब मिलके गावे ॥

॥ राग आसावरी ॥

बसे बनपाली आँली किसंविधि पाइये ।

ऐसी जिय आवे जैसे जोगी हे के जाइये ॥ १ ॥

यह पद्मकुं दोऊ मिलके सारंगके साथ गावें ऐसे जान
वृद्धके अजान होयके घर घरमें पूछते डोलें सबनमों ऐसे कहे
हमारे एक लडका खोय गयो हे ताकों तुमनें कहूँ देख्यो होय तो
बताओ ऐसे विरह विकल दशमें श्रीगोविंदजी श्रीनाथजीकों
सत्ताईम दिनांतांई ढूढते फिरे परंतु काहनें यह भेद लख्यो नहीं ॥

॥ अठाईसवें दिन श्रीगोविंदजीने श्रीविष्णुरायजीकुं निकासे ॥

जब अठाईसवों दिन आयो तब श्रीगोविंदजी और रोड़ा दरजी
दोनों कृष्णपुरके तलाव ऊपर आयके बेठे तासमय श्रीजीको
राजभोग आयो हतो तासों जलघरिया दोऊ सखरीके हांडा माँज-
वेको तलावपे आये हते सो उनने श्रीगोविंदजीकों देखे पर
जोगीको भेष हतो तहते पहचाने नहीं जो पात्र माँजवे लगे
इतने उनमेसु एक ब्रजवासीने दूसरे ब्रजवासीसों कही सुन भैया
श्रीविष्णुरायजीके वंशमें कोई ऐसो मर्द नाहीं जो या ब्रजरायकुं
निकासे और अपनों घर सहारे श्रीविष्णुरायजीके चार बेटा भए
तामें श्रीगिरधरजी तो बडेही मर्द भये और श्रीगोविंदजी हूँ बडे
मर्द हैं पर या विरियां कहा जानें कहां गये नाहीं तो अब या
विरियां आवें तो श्रीब्रजरायजी के पास फौज तो हे नहीं जो
लडेगो पकड हाथ तुरंत काढि दें यह बात सुनके श्रीगोविंदजी
वा जलघरियाके पास आयके पूछे जो हमकुं तू श्रीनाथजी बताय
कहां विराजें हैं मेरो नाम श्रीगोविंदजी हे सो ऐसे कहिके अपनो
जोगीको वेश तो दूर कियो और धोती उपरना पहरि अपरसमें
अनुभवि किटारी कमरमें छिपाय उपरनमें ढांय लीनी और संग
दीनो हे यातें लीनो पीछे पीछे चले गये इतनेमें माला बोली सो

श्रीब्रजरायजी शारी भर आचमन करवाये ता पाँडे सब सेवालों
पहुंचके राजभोग आरती सिद्धि करिवेको उद्युक्त भये तितनेमें अक
स्मात् श्रीगोविंदजीने आयके एक हाथसों कमरमेसों कटारी
काढके और श्रीब्रजरायजीको दिखाई और यह आङ्गा किये हमारी
और तुम्हारी दोनों जनेनकी यादघरथली श्रीनाथजीके आगें
होयगी तब तीसरो कोऊ आरती करेगो तुमने बहुत दिना ताँई
आरती करी अब तुम यहाँते अपनी जान लेके निकस जाओ
नातर या कटारीसों तुष्टारो पेट चाक कर्णगो पाँडे अपने पेटमें
मार्णगो तुमकों सेवा करन न दर्जगो सेघातो श्रीदाऊजी करेंगो सो
श्रीगोविंदजी बडे प्रबल हते सो श्रीब्रजरायजीको ऐसी दक्षिणा दीनी
सो सुनके श्रीब्रजरायजी तो बहुत डरपे थरथर काँपवे लगे और हाथ
जोड़ लिये आंखनमें आंसू आय गये और बिनती करवे लग गये
जो मोकों मारो भत में याही समय निकस जाऊंगो तुम श्रीनाथजीकों
सहार लेओ ऐसे कहिके श्रीब्रजरायजी वहाँसे चले सो आगरे आये
सो पादशाहसों मिले सब बात कही तब पदशाहने कही जो आज
पीछे केर भत जैयो अब श्रीगोविंदजीने अपनों कुदुंब श्रीदाऊजी
तथा बहू बेटी सब परिकर बुलाय लीनी और श्रीनाथजीके चरणस्पर्श
करके सबनको चित्त बहुत प्रसन्न भयो और श्रीनाथजी अपने परि
करकूं देखके बहुत प्रसन्न भये इतने दिन श्रीब्रजरायजीने सेवा करी
परंतु श्रीनाथजीने मुख न मान्यो और जा दिना श्रीगोविंदजी श्रीबा
लकृष्णजी तथा श्रीविष्णुभजी तथा श्रीदाऊजी इन सबने मिलके
शृंगार कियो ता दिना श्रीनाथजीने बहुत अलौकिकतासों दर्शन दीने ।

॥ श्रीनाथजी मेंबाड़ तक प्रवासमें केसे पधारे ताको वर्णन ॥

तब ऐसे श्रीनाथजी प्रथम चतुर्मास दंडोत्थाटमें किये । बडे बडे धरनकूं देखके श्रीजी बहुत प्रसन्नभये और कही जो यह देरा बहुत आठो हे पर अब यहांते चलें सो ऐसे गंगाचाईसों आज्ञा किये तब रथमें विराजके वहांते चले सो श्रीगोविंदजी तीन भाई हते सो भैया तो डेरा लेके आगे चले सो श्रीगोविंदजी तीन भाई हते सो रसोइया बालभोगियान और जलघरियानकों संग लेजाय सो वहां आगे जायके सब उत्थापनकी तयारी करवाय रखें श्रीनाथजी राजभोग आरती करके चलें सो जब घडी छः दिन रहे तब डेरानमें दाखल होय जाय वहां सब तयारी पावे सो बेगही उत्थापन भोग संध्या और शयन होय जाय तब तुरत श्रीजी पोढ़े और सबैरे बेगही संगला शृंगार ग्वाल और राजभोग पर्यंत सेवा करके सब परिकर महाप्रसाद लेके दूसरे दिन दूसरे डेरापे चलते और एक भाई श्रीवल्लभजी डेराके संग चलते और दो भाई श्रीजीके संग चलते श्रीगोविंदजी तो श्रीजीके रथके आगे घोड़ापे चढ़के चलते और श्रीबालकण्ठजी रथके पाई घोड़ापे चढ़के चलते पांच हाथियार बांधे कवच पहिरे अलमस्त रूपमूं चलें पेंडेमें कोई राजा प्रजा श्रीजीके दर्शनकी बिनती करें ताकूं श्रीगोविंदजी आज्ञा करे जो श्रीनाथजी तो श्रीगिरिराजकी कंदरामें विराजतहे या रथमें तो हमारी वस्तु भाव हे सो ऐसे कहे पर दर्शन काहूकूं न करावें और संवत् १७२६ आश्विन सुदी १५ पूर्णमासी शुक्रवार आश्विनी नक्षत्रके दिना श्रीनाथजी श्रीगिरिराजसुं उठे सो संवत् १७२८ फाल्गुन वदी ७ शनिश्चर वार स्वाति नक्षत्रमें सिंहाडमें पहुंचे पाट बेढे

तहाँ ताँई बीचमें अढाई वर्ष पर्यंत मार्गमें जहाँ रथमेही बिराजे। तहाँ ताँई रसोई करबेकी सेवा तथा सामग्री और शाककी सेवा श्रीबल्लभजी महाराजने अपने हाथसों कीनी। और मेदा पीसबेकी हूँ सेवा श्रीबल्लभजी महाराजने कीनी। और अनसखरी बालभोगकी तथा दूधघरकी सेवा अपने हाथसों श्रीबालकृष्णजी तथा सब बहु बेटी मिलकें करते। सो गाय संग रहती सो दूध दही और माखन सब संगही होतो ॥

॥ दंडोतीघाटसुं श्रीनाथजी कोटा तथा बूँदी पधारे ॥

ओर दंडोतीघाटते श्रीगोविंदननाथजी कोटा बूँदी पधारे। तहाँ अनिहदसिंह हाड़ा बूँदीके राजा हते। सो दर्शनकूँ अये वैष्णवजानके श्रीगोविंदजी महाराजने उनकों दर्शन करवाये। तब उन राजाने बिनती कीनी जो श्रीनाथजीसों बिनती करो। मेरे मुलकमें बिराजे। या कोटा बूँदीके मुलकमें आँछी जगह हैं सो श्रीजीकी। और पांच हजार तरवार हाडानकी हैं जो महाम्लेच्छ आवेगो तो हमलडेंगे। तब श्रीगोविंदजी आज्ञा किये जो तुम्हारी तो ऐसी वैष्णवता है तो यहाँही कलुक दिन आँछी जगह देखकें विराजेंगे। पाँछे इच्छा होयगी तहाँ बधारेंगे। सदा विराजवेको तो यहाँ नहीं क्यों जो तुम्हारी जमीयत थोड़ी है तब एक कृष्णविलास करकें कोटाके मुलकमें स्थल है। तहाँ पश्चिमा सो तहाँ श्रीनाथजी चतुर्मास विराजे ॥

॥ श्रीनाथजी जोधपुर पधारवेहुँ कोटा बूँदीसुं पुष्करजी पधारे ॥

ओर श्रीजी चतुर्मास बीते पीछे पुष्करजी होयकें जोधपुरकों पधारे। पेंडेमें जब पुष्करजीके नजीक होयकें रथ निकस्यो तब वह तहाँ अटक्यो। तब श्रीगोविंदजीने गंगाबाईसों कह्यो तुम श्रीजीसों

पूछो रथ क्यों अटकयो आपकी क़हा इच्छा हे । तब गंगाबाईने भीतर जायके श्रीनाथजीसों पूछयो जो बलाई लऊं, यह रथ क्यों अटकाय राख्यो हे? । तब श्रीजी आज्ञा किये जो यहांते निकट काई सरोवर हे सो तासें कमल फूले हें सो ताकी मौकों सुगंध आवेहे । सो कमल तहां बैग जायके ले आओ । मेरे रथमें धरो तब उन कमल-नकी सुगंध लेके में आगे चलूंगो । जहां मेरी इच्छा होयगी तहां पधारूंगो । तब दो चार ब्रजवासी तहां तें चले सो पुष्करजी आये । सो तहां आयके कमल बहुतसे फूले हे सो फूले कमलनमें सू आरक्त तथा ओर श्वेत तथा ओर सब प्रफुल्लित हते सो सब लेके ओर कमलनके पत्रनमें धरके शीघ्रही श्रीगोविंदननाथजीके रथके पास आयके ठाडे भये । तब वे कमल लेके श्रीगोविंदजी महाराजने श्री-नाथजीकूं अंगीकार करवाये । श्रीजीकी आज्ञासों वे कमल आये हते तातें श्रीजीकों वे कमल बहुत प्रिय हे तातें श्रीबालकृष्णजी ओर श्रीवल्लभजीने हुं श्रीनाथजीकों कमल अंगीकार करवाये । ओर तब श्रीदाऊजी महाराज तो बालक हते सो उनहुंकूं श्रीगोविंदजी महाराजने बुलायके श्रीजीकों कमलके फूल अंगीकार करवाये । ओर बहूजी तथा बेटीजी आदी सब जो गोस्वामी हते तिनकेहुं कमल श्रीनाथजीने अंगीकार किये ॥

॥ श्रीनाथजी जोधपुर पधारवेहुं पुष्करजीनि कृष्णगढ पधारे ॥

ओर कृष्णढके राजा रूपसिंहजी भले भंगवदीय हते सो वे श्रीदीक्षितजी (अर्थात् विठ्ठलेश्वरजी दीक्षित) के सेवक हते सो वे तो देशाधिपतिकी लडाईमें युद्ध करके देह छोडे । सो ता समय एक धुकधुकी हीरा जटित हती । सो एक नाऊ खवास पास हते ताकी दूनी ओर कही जो यह धुकधुकी तूं लेजायके श्रीगिरिराजपे

श्रीनाथजी विराजे हैं तिनकूँ भेट कर आव। तब वानें श्रीनाथजी-
के पास जायके वह हीराकी धुकधुकी भेट करी और राज भोग
आरतीके दर्शन करके वह नीले उत्त्यो। सो दंडोतीशिला के ऊपर
राजा रूपसिंहजी को स्वरूप देख्यो सो पीतांबर पीरो पहरे हैं, केसरी
उपरना ओढ़े हैं, तिलक मुद्रा दिये हैं और भगवत् तेज सहित
स्वरूप हैं। और लौकिक शरीर तो रणमें छूट्ये और अलौकिक
शरीर धरके श्रीजोके मंदिरमें पढ़ाए। सो जात तो मंदिरमें सबने
देखे परंतु निकसत काहूने न देखे। तब सबने कही जो राजा
रूपसिंहजी श्रीजीकी लीला में प्रवेश किये। तिन राजा रूपसिंहजी
के बेटा मानसिंहजी कृष्णगढ़के राजा हते जा समय श्रीजी रथमें
विराजके कृष्णगढ़के मुलकमें पधारे। सो उनने सुनी जो वृजके
श्रीनाथजी मेरे देशने पधारे हैं सो वे हमारे परम इष्ट देव हैं सो उनके
दर्शन किये बिना हमकूँ जलपान करनो भी उचित नहीं। तब वह
श्रीजीके दर्शनको आयो सो उजाडमें जहां बहुत ढाकको वन्ह हो
सो तहां एक अजमीती नामक गाम ऊजड हो सो तहां सरोवर
बहुत ही सुंदर हो। और नदी तथा झारना पर्वतके बहुत हते सो
तहां श्रीजीको रथ ठाड़ो रह्यो हो। सो तहां आयके राजा मानसि-
हजीने श्रीजीके दर्शन किये वाकों वैष्णव ज्ञानके श्रीगोविंदजीने
हजीने श्रीजीके दर्शन किये वाकों वैष्णव ज्ञानके श्रीगोविंदजीने
दर्शन करवाये। तब वाने त्रिनती करी जो महाराज प्रगट तो स्लेष्ठ
जानेगो पर गुप्त आप मेरे मुलकमें विराजो तो में सेवा में तत्पर हूँ।
श्रीगोविंदजीने श्रीजी सों पुछवाये सो श्रीजी आज्ञा किये। यह पर्वत
बहुत रमणीक हे ढाकके वृक्ष बहुत ही हैं और केसुं फूले हैं। ताते
वसंत ऋतु यहां करेंगे। तापाछे आगे चलेंगे। यहां हूँ हम न रहेंगे।

ता पाछे डोलंडत्सव वहाँहीं कियो और बसंत ऋतु तथा श्रीप्म
ऋतु कहूक तहाँ विराजे ता पाछे आगे मारवाड़को पधारे ॥

॥ श्रीजी मारवाड़ पधारत देहमें चीसलयुके वेरागीकुं दर्शन कीने ।

जोधपुरस्ते उरे द्रजेके मारगमें एक चीसलयुर गम है रहाँ
एक वेरागी गुरु केला रहते। सो जब पहिले श्रीजी गिरिराज ऊपर
विराजत हते। सो तब तहाँसुं गंगाजी रहायदेकों वे दोनों गुरु
केला गए हते। सो श्रीगंगाजी रहायके जब श्रीगिरिराज आए। तब
वाके गुरुमें तो श्रीगिरिराज ये जायके श्रीजीके दर्शन कीने और
वा केलाने श्रीभागवत ग्रंथ पढ़ो हतो ताते यह श्लोक पढ़के—

कृष्णस्त्वन्यतम् रूपं गोपदित्यं भणं गतः ।

शैलोरमीति ब्रुवन् सूरि वलिमादद् बृहद्युः ॥

मा. नं १० अ. २४ लो. ३३

वो ऐसें विचार करवे लख्यो जो श्रीभागवतमें श्रीगिरिराजहृ
भगवद्युप दर्शन क्यो हे। सो ताके ऊपर में कैसे पांच द्रजे। इतनेमें
दर्शन वरके वाक्ये गुरु आयो सो वाने वहुत श्रीजीके दर्शनकी
दण्डाई करी। और कही जो श्रीनाथजी वहुत ही सुंदर है। तब वह
केला यह गुरुके दर्शनकों गयो सो श्रीगिरिराज ताँई तो गयो
दर ऊपर पांच द्रजमें वाक्ये कड़ी त्वानी आवे। और श्रीजीके दर्शन
ह मन दसें। और वहुत ओसेर आवे। सो ऐसें तीन दिन लौ खुकड़
खुकड़ करत वे गुरु केला गिरिराजमें रहे। और श्रीगिरिराजकी परि-
क्रमा किये वा केलाको श्रीजीके दर्शन न मये तासुं वाके चिन्हमें
वहुत खेद रहे सो कोई काल पछि यह गुरु तो हरिशरण मयो
और वह केला चीसलयुरमें महंत मयो। और तहा चीसलयुरमें रहे।
तब या चेरागाक्षे श्रीजीने रथमें जहायो जो जा दर्शनके लिये

तूं स्वेद करे हे सो श्रीठाकुरजी मैंहीं हुं, और काल तेरे गामके ग्वेडे होयके रथ निकसंगो तब तूं रथको आयके पकड़ियो और श्रीगुसाँईजीसो बिनती कीजो 'जो मोको दर्शन करवाओ' जो तोको श्रीगुसाँईजी दर्शनकी नाहीं करे तो तूं मेरे शंगार बतायडीजो। श्रेत पाग पिछोरा श्रेत शंगार हे और श्रीजी या रथमें निश्चय विराजे हें तासुं मोकुं अवश्य दर्शन कराओ। तब तोकुं श्रीगुसाँईजी दर्शन करावेगे और तूं एक पाटिया राजभोगके लियें बनवाइयो ताकुं संग लेके मेरे रथके आगे लाय धरियो। सो ता पाटियापे मेरे नित्य राजभोग आवेगो। या प्रकार स्वप्नमें श्रीजीनैं वा बेरागीको आज्ञा दीनी। तब वह बेरागी प्रातःकाल उठके एक बढ़ीकुं बुलाय लायो। और तासुं कहीं जो मेरे पच्चीस 'मैस हें तामेसुं एक मैस आछी होय सो तू लेलीजो पर अबको अब एक पाटिया बनाय लाव, | तब वा खातीनै एक प्रहरमें बनायके तयार करके वा बेरागी-को लाय दियो। सो वा पाटियाको लेके मारगके ऊपर आयके बेठयो। जब पाछिलो प्रहर दिन रह्यो तब श्रीगोवर्धननाथजीके रथको दर्शन भयो सो रथके आगे जायके मारगके बीच वह बेरागी पड़यो। और कह्यो जो 'मोकों श्रीनाथजीके दर्शन कराओगे तो मैं मारगमें उठूंगो'। तब सबननै यह जानी जो कोई पादशाहको हलकारा हे। सो कषट करके पूछे हे। तब श्रीगोविन्दजी आज्ञा किये 'श्रीनाथजी तो सदा श्रीगोवर्धनकी कन्दरामें विराजत हें और या रथमें तो हमारी वस्तु भाव हे ताकुं हम लिये जात हें'। तब वा बेरागीनै कह्यो जो मोकों रात्रीकों श्रीनाथजीनै स्वप्नमें आज्ञा करके कहीं जो मेरे राजभोगके लियें एक पाटिया बनवायके तूं लाइयो सो मैं बनवायके लायो हुं।

सो लीजिये, और मोक्षे श्रीनाथजीके दर्शन करवाइये। श्वेत पाण और श्वेत पिछोर को शृंगार है। यह बात बेरामी की सुनके श्रीगोविन्दजीने जान्यो जो यह कोई अनुभवी वैष्णव है। या को तो दर्शन करवने। तब सबनसों कह्यो आज यहां उत्थापन होयगे। तब वहां डेरा करवाये और उत्थापन भये। अब तासमय वा बेरामी को दर्शन भये। और दूसरे दिन राजभोग आरती पर्यन्त वा गाममें चिराजे हते। तापछे वहांते जोधपुरको विजय कियो। वा पाटियाके ऊपर एक दिनतो राजभोग आये और जब श्रीजी वहांते विजय किये तब वा पाटियाको सबने वहांहीं डार दीनो। ओर कही जो श्रीजीके पाटियानकी कहा कमतीहे और बेरामीके पाटियासों कहा अटकयो हे और वह मनोरथ करके बनवाय लायो तो एक बेर तो राजभोग आरोगे। अब याको यहांहीं पटक चलो। सो वह बेरामी ले जायगो। ऐसे कहके वा पाटियाको तो डारदीनो और शीघ्र चले। फिर वह बेरामी वा गाममें आयके वा स्थलको देखे तो श्रीजी पधारे हैं और वह पाटिया तहांहीं पड़यो है। तब तो वा बेरामीको चित्त बहुत उदास भयो। जो मोक्षे श्रीनाथजी स्वप्नमें आज्ञा करते हुए पाटिया बनवाय लाव तोहू अंगीकार न करे। सो याको कारन कहा है। सो या प्रकार चित्ताकरत वह बेरामी वैष्णव वा पाटियाको उठायके अपने घर लेके आयो सो लायके एक सुन्दर उत्तम स्थल हते तहां धन्यो और अपने मनमें बेठयो बेठयो खेद करवे लायो। अब कीसल्लपुरसों श्रीनाथजीको रथ चलये सो रथ को सतीनके ऊपर जायके अटकयो। और तहांते आगे चलायबेको बहुत उपाय किये पर श्रीजीको रथ चले नहीं। तब श्रीगोविन्दजी गंगाबाईसों आज्ञा किये जो तुम श्रीनाथजीसों पूछो या उजाडमें

कोस कोस भर ताँई कोई गाम नहीं हे। और जल और द्वायाहू नहीं हैं और यहां जो आप रथ अटकायेहैं ताको कहा कारन हे?। तब गंगाबाईने श्रीनाथजीसे पूछ्यो “जो बलिहारी लल ! यह रथ क्यों अटकयो नहीं चलत हे”। तब श्रीनाथजी यह आज्ञा किये “जो राजभोग धरतमें नित्य पाटियाको दुःख पावत हे ताते मैंने वा बेरागीको स्वप्नमें आज्ञा करके जो पाटिया बनवायो हो सो ताकूं ये वहांही डार आये अब राजभोग काहेपे धरेंगे सो जब पाटिया आवेगो तब चलूंगो और जहां ताँई में एक स्थलपे जाय स्थिर होयके न बेठूंगो तहां ताँई याही पाटियाके ऊपर नित्य राजभोग आवेगो” तब यह बात गंगाबाईने श्रीगोविंदजीसे कही। सो सुनके श्रीगोविंदजी अपने मनमें बड़ोही पश्चात्ताप किये। और तत्काल दो ब्रजवासी घोड़ापे चढ़ा यके पठाये। और कहे जो वह पाटिया वहां पड़ो होय तो बेग लेके आओगे और कोई उठायके लेगयो होय तो जायके वा बेरागीसे कहियो जो तेरे बडे भाग्य हैं जो तेरे पाटिया साक्षात् श्रीनाथ अंगीकार किये अब तूं एक और पाटिया बनवायके हमकूं दे। और जो वह पहिले पाटिया तुमने उठाय धन्यो होय तो वाही कों देउ। यह आज्ञा लेके जो दोनों ब्रजवासी तहांते चले सो घोड़ा दोड़ावत चले सो घडी डेढ़के बीचमें वा स्थलपे पहुंचे। तहां पाटिया न चले सो घडी डेढ़के बीचमें वा बेरागीसे जायके सब चृत्तांत कह्यो। तब वा बेरागी-देख्यो तब वा बेरागीको जायके सब चृत्तांत कह्यो। सो वे लेके तहां तेने वह पाटिया लेके उन ब्रजवासीनकों दीनो। सो वे लेके तहां तेने वह पाटिया लेके सो तुरंत उतनी बेरमें पांचे वहांही आयके वह पाटिया श्रीगोविंदजीकों दीनो। सो वह पाटिया श्रीनाथजीकी आज्ञाते बन्यो विंदजीकों दीनो। सो वह पाटिया श्रीनाथजीके सब बालक वा पाटियाके दर्शन किये हतो। ताते श्रीगुसाँईजीके सब बालक वा पाटियाके दर्शन किये

ओर वा पाटियाके दर्शन करके और हाथ लगायके सबननें आंख-
नसों हाथ लगाये। और बहुन आँखी तरह वाकूं राखवे लगे। और
जब श्रीजीकी असवारी होय ता समय सुधि करके लिखाय चले।
सो जहां ताई मेवाड़के मंदिरमें स्थिर होयके बिराजे तहां ताई वोही
पाटिया राख्यो। और श्रीनाथजीको नित्य राजभोग वाहीपे आवतो।
जब वह पाटिया आयो तब श्रीजीको रथ तहांते तुरंत ही चल्यो ॥

॥ श्रीजी जोधपुर पधार चापासेनीमें चतुर्मास विराजे ॥

तहांते चले सो जोधपुर पधारे। सो जोधपुरके राजा जसवं-
तसिंहजी सो कमाऊंके पहाड़में अपनी ननसार हती सो तहां गये
हते सो उनके प्रधानादिक सब हते। सो वे सब श्रीनाथजीके दर्शन
को आये और बिनती करी। जो महाराज दिना आठ यहां विराज-
ते तो हम राजाजीकों बधाई लिखावें। तब जोधपुरसों कोस तीनपे
चापासेनी गाम है। तहां एक कदंबखंडी ही। और चारेबां गाम
हो सो तहां श्रीजी चतुर्मास विराजे। श्रीजी श्रीगिरिराजसों उठे
पीछे तीन चतुर्मास मारगमें किये। तामें एक चतुर्मास तो दंडोती-
घाटके कृष्णपुरमें किये। दूसरो चतुर्मास कोटाके कृष्णबिलासमें
किये। तीसरो चतुर्मास जोधपुरके चापासेनीमें किये। और चोथो
चतुर्मास तो मेवाड़में अपने मंदिरमें किये और संवत् १७२६
आश्विन सुदी १५ को लेके संवत् १७२८ के फाल्गुन वदि ७
पर्यंत श्रीजी ब्रजके ओर मेवाड़के बीचमें अमण किये। तामें इतने
देश कृतार्थ भये हिंदमुलतांन, दंडोतीघाट, बूँझी कोटाको देश, ढूँढार
तथा मारदाड बांसवाडो झुंगरपुर तथा शाहपुरा इतनेके बीच २
वर्ष ४ महिना दिन ७ पर्यंत श्रीजी आप रथमें विराजेही फिरे ॥

॥ श्रीगोविंदजी उदयपुर पधार राणाजी श्रीराजसिंहजीसुं श्रीजीके
मेवाडमें विराजवेको निश्चय किये ॥

और जहाँ ताँई आप श्रीनाथजी चतुर्मास चांपासेनीमें
विराजे तहाँ ताँई श्रीगोविंदजी उदयपुर पधार राणा श्रीराजसिंहजी
सो मिले । सो श्रीजीके मेवाडमें विराजवेको सब वृत्तांत कह्यो । तब
राणा श्रीराजसिंहजीने अपनी माता वृद्ध हती तासुं पूछ्यो जो
'ब्रजके ठाकुर श्रीनाथजी म्लेच्छके उपद्रवसों उठे हैं सो यहाँ
अपने देशमें विराजवेकी इच्छा है । सो तुम कहो तो पधरावें । और
यह बात सुनकें जो हमारे ऊपर म्लेच्छ चढ़ि आवेगो तब हमकुं
कहा कर्तव्य है? । तब राणजीने कही 'सुन पुत्र । आगें भीराबाई और
अजबकुंवरिबाईके भास्यनसों श्रीजी आप अपने देश पधारे हैं ।
अपने ऐसे भास्य कहाँ हैं । ताते तुम बेग श्रीनाथजीकों पधराओ ।
अब विलंब मत करो । और जो पादशाह म्लेच्छ चढ़ि आवेगो तो
तुम रजपूत हो जमनिके लिये जीव देत हो तो श्रीठाकुरजीके
लिये जीव देतें का विशेष है । अब श्रीठाकुरजीकुं बेग पधराओ । तब यह
बात सुनकें वे राणा श्रीराजसिंहजी प्रसन्न भये । और श्रीगोविंदजीकुं
विनती कीनी जो 'महाराज ! श्रीनाथजीकुं बेग पधराओ' । तब श्रीगोविं
दजी पाल्टे चापासेनी गये । वहाँ जायके श्रीनाथजीकों विनती करवाये ।
तब श्रीनाथजीकी आज्ञा भई । जो 'मेवाड देशकुं चलूंगो चतुर्मास तो
यहीं पूर्ण भयो हे अब अन्नकूट करके में मेवाडकुं चलूंगो' ॥

॥ श्रीजी मेवाडमें पधारे ताको सविस्तर वृत्तांत ॥

ता पाल्टे कार्तिक सुदी १५ पूर्णमासी संवत् १७२८कों श्रीजी
मेवाडकों विजय किये । मारगमें एक गाम आयो तहाँ उत्थापन भये ।

यहाँ शायने पर्यंत सब सेवा भई। और वहाँ एक तलाव हतो तामें जल बहुत पुष्कल हतो सो श्रीजी वा दिना बा तलावकोही जल आरोगे। ता पछे रात्रिको समय भयो तब ता तलावके आसपास जयजयकार होयवे लग्यो। सो जयजयकारको शब्द श्रीजीके संगके सब लोग सुनें परंतु जयजयकार करवैवारे दीखें नहीं। तब सबनने मिलके ओर तलावके पास जायके जहाँ जयजयकारकी धुनि होय रहीही तहाँ अटकरसौं पूछयो जो तुम कौनहो जो जयजयकार करो हो। तब काहूने आकाश मारगसूं जुबाब दियो जो हम या तलावमें एक लक्ष खूत रहत हैं सो हजार वर्षसूं हमारी गति मुक्ति होत नाहीं। सो आज श्रीनाथजी या तलावको जल आरोगे ताके प्रभाव करिके वैकुंठसौं विमान आये हैं सो ऐसें कहें हैं जो तुम या तलावमें जितने पिशाच हो सो सब दिव्य देह धरिके ओर विमानमें बेठके वैकुंठकूं चलो। ऐसे श्रीवैकुंठनाथजीने कही है ओर हमकूं विमान लेके पठाये हैं। सो या तलावको जल श्रीनाथजी आरोगे हैं तासूं हम सबरे एक लक्ष पिशाच या तलावमें रहत हैं हजारन वर्षन तैं सो आज हमारी मुक्ति होय गई। सो हम सब श्रीनाथजीकी जय जय बौलत जाय हैं ताको यह जयजय शब्द है। सो यह बात सुनके श्रीगोविंदजी और उनके सब संगके आश्र्य किये। सो ऐसे अर्धरात्रिसौं लगायके प्रातःकाल ताँई जयजयकार भयो। ता पछे श्रीनाथजी वहाँ राजभोग आरोगके विजय किये। सो ऐसे ही गाममें मजल कर तेईस दिनमें सिंहाडमें पांव धरे। सो मार्गमें जितने देशनमें जहाँ जहाँ फिरे तहाँ तहाँ चारित्र तो आपने

१ कोई पुस्तकमें तेईस कोईमें सत्ताईस पाठ है,

बहुत करे पर यहां तो मुख्य चरित्र लिखे हैं ग्रंथको विस्तार बहुत होय ताके लिये । ताके पाँचें अब सिंहाडमें एक पीपरके वृक्ष के नीचे रथ अटकयो । जब श्रीजीसों पूछयो तब श्रीजी यह आशा किये जो “ अजबकुंवरि बाईके रहनेको स्थल यह हतो । ताते यहां मेरो मंदिर बनेगो और मैं यहांहीं रहूँगो और राणाजीको मनोरथते उदयपुरमें पधरायवेको हे पर कोई काल पीछे सिद्धि करूँगो । और अभी तो यहां अजबकुंवरि बाईके स्थलमें मंदिर बनवाओ मैं यहां कोई काल ताईं विराजूँगो । यह देश मोक्षे ब्रजकी उन्हार पडे हे । यह पर्वत मोक्षे बहुत सुहावने लगत हैं । और सब श्रीगु-सांईजीके बालक अपनी अपनी बेठक बनवाय लेउ । ” तब श्रीगो-विंदजीने तत्काल मंदिरकी तैयारी करवाई । और गोपालदास उस्तकों आज्ञा दीनी “ जो बेग श्रीजीको मंदिर सिद्ध करो बहुत मनुष्य लगायके और शीघ्र तैयार होय ” । और पाषाण तो आसपा-सके पर्वतनके बहुत हते और चूनो सिद्ध करवायके मंदिरकी नीम-लगी । सो मंदिर बनके लग्यो कारखाना रत्निदिन चलवे लगे कारीगर सहस्रावधि लगायके मंदिर थोड़ेही महीनानमें सिद्ध कियो । तब संवत् १७२८ फाल्गुन वदि ७ शनिवारके दिन श्रीदामो-दरजी महाराज (श्रीदाऊजी) ने वेदोक्तरीतसुं पुण्याहवाचन और वास्तुप्रतिष्ठा करवायके श्रीनाथजीकूं पाट बेठाये । तादिनासों श्रीजी मेवाडमें सुखसों विराजे । और राज श्रीदामोदरजी (श्रीदाऊजी), आप मेवाडमें सुखसों विराजे । और राज श्रीदामोदरजी (श्रीदाऊजी), माहाराजको और नेगरीत और सब प्राणालिका पूर्वकी हत्ती सो बंध गई । और गम्यनके खिरक सब सिद्ध भये तिनमें सब भय स्थित भई । और श्रीदाऊजी महाराज श्रीजीकों आछी तरह लाड लड़ावे उत्सव महोत्सवके शृंगार सब आपही करें ॥

॥ पादशाह श्रीजीके मेवाड़ बिराजवेके समाचार सुनके महाराणानों
श्रीरायसिंहजीपे चढाई कीनी ॥

सो एसे बरस चार + जब व्यतीत भये तब महामलेच्छने
हल्कारेनसों पूछी “ वे देव जो गिरिराजते उठे थे सो किसके मुल-
कमें जायके बसे । मेरेही अमलमें हैं के कोऊ राजाके अमलमें हैं ” ।
तब हल्कारा मारवाड तथा ढुंगार तथा मेवाडमें जहाँ जहाँ श्रीजी
बिराजे तिनतिन मुलकनमें फिरे ओर निश्चय करिके आये सो आयके
देशाधिपतिसों कहे जो राणाजीके देशमें बिराजें हैं । और राणाजी
हाथ जोडे रहते हैं ओर बहुत बंदगीमें रहते हैं । यह सुनके पादशाह
ने कहा जो मैने तो जानाथा जो ‘ मेरेही मुलकमें रहेंगे जहाँ जायगे
तहाँ मुलक तो मेरेही हैं दरियावके किनारे ताँई । और वे तो मेरे
मुलक छोड़के राणाजीके मुलकमें जायके बसे हैं । ताते में राणाजीकुं
जायके देखूंगो , । सो यह कहके पादशाहने तयारी करी सो कोईक
दिनमें मेवाडमें आय पहुंचे । तब राणाजी श्रीरायसिंहजीने आपनों
सब कुदंब सो मेवाडमें पठायदिनो । ओर आप चालीस हजार फोज-
सों नाहर मगरे आयके डेरा किये । ओर वाही दिना पादशाहने
आयके रायसागरपे डेरा किये ॥

॥ जब पादशाह और राणाजीकी फोजनके डेरा रायसागर
नाहरमगरपे भये तब श्रीजी ग्राम बाटरा पधारे ॥

सो ता दिना श्रीजीने गंगाबाईसों आङ्गा कीनी जो “ श्रीदा-
उर्जीसों कहो एक बाटरा गाम हे सो वहाँ बाटराकी नालमें एक
बहुत रमणीक स्थल हे तहाँ अनेक जातकी बूक्कावली सहजही होय
हे । केवड़ा, केतकी, चंबेली, रायबेलहू सब सहजही होय हैं सो मगरा

मोक्षे अवश्य ही देखना हे । और वा पर्वतमें एक गुफा हे सो वा गुफामें एक ऋषीश्वर सहस्रावधि वर्षसों तपस्या करे हे सो वाके चित्तमें यह आकांक्षा हे जो श्रीकृष्ण मोक्षे याही पर्वतमें पधारके दर्शन देंगे तब में या देहको त्याग करूँगो सो तहां ताँई प्राण कपालमें चढ़ाय लेय जहां कालकी गम्य नाहीं हे ऐसे सहस्रावधि वर्ष सों वह ऋषीश्वर बेठ्यो हे सो ताकों दर्शन देवेकों वा मारगपे मोक्षे लेकें चलो सो तीन दिन वहां रहूँगो । ता पाँचे फेर याही मंदिरमें आय रहूँगो । तहां ताँई बादशाह राजसागरके ऊपर रहेगो । ता पाँचे में या पादशाहको उठाय दऊँगो ” । यह बात गंगाबाई ने श्रीदाऊजी महाराजसों सब कही । सो श्रीदाऊजी महाराज बड़े प्रतापी हते सो रथ तुरंत सिद्ध करवाये । तामें श्रीजी बिराजे सो बाटरा पधारे और मगरानमें जहां विषम मारग हतो तहां तहां श्रीजीकी इच्छाते सूधो मारग होय गयो । और जहां आखड़ी आवें तहां रुद्धके गदला श्रीदाऊजी महाराज बिछवाय दें जो श्रीजीके रथकों हाल न आवे याके लिये । सो ऐसे वा पर्वत पर श्रीजी आप बिराजे । और वा पर्वतकों देखके बहुत प्रसन्न भये सो तीन दिन ताँई वहां बिराजे । भोग सेनभोग सब वहांही भयो । और एक दिन भोगके किवाड़ खुले सो त समय वा गुफामें तें वह बेरागी निक- सकें दर्शनकुं आयो सो वानें श्रीजीके दर्शन कर दंडवत करी और एक नील कमलकी माला ग्रथिके लेआयो जो पृथ्वीमंडलमें नीलकमल कहुं नहीं होय हें ये देवलोकमें होय हें सो वा योगेश्वरकी देवलोक ताँई गम्य हती सो वहांते नीलकमल लायके ताकी माला ग्रथिके सिद्ध कर राखी हती जो श्रीजी पधारेंगे तब पहिराऊँगो । सो ता

बेरागीकों देखके श्रीनाथजी अपने निकट बुलायके कहे । जो तुम माला पहिराय देउ । तब वानें माला पहिराई और एक चंदनको मूठा सवासेरको हतो सो भेट कियो । और वह चंदन असङ्ग मलयागर हतो । एक रत्तीभर तोलिके सवामन तेल तातो करके वामे डारो तो तेल शीतल होय जाय ऐसो वह चंदन हतो सो मूठा भेट कियो । और दंडवत करिके याही पर्वत पर चल्यो गयो । भगवतकृपा भई हती सो इनकों विष्णुके दूत आये सो विमानमें बेठायके वैकुण्ठ ले गए । तब श्रीजी श्रीदाऊजीसों आज्ञा किये ग्राष्मऋतुमें चंदनकी कटोरी होय हैं तिनमें थोडो थोडो या मूठामेंसुं नित्य धिसनो जहां ताँई यह मूठा पहुँचे तहां ताँई तैसेही करो ।

॥ पादशाहको मेवाडसुं द्वारिका जायवेको सविस्तर वृत्तान्त ॥

ता पाछे एक रात्रि तो पादशाहके डेसा रायसागरपे रहे और दूसरे दिन नदी बनासपे खमनोर डेरा किये । और तहां हुक्म दीनो जो एक महिना यहां रहेंगे सो एक बाग तयार कराओ । ता बायकुं तयार देखके हम चलेंगे सो यह बात राणाजीने सुनी सो राणाजी मनमें बहुत डरपे और श्रीजीकी मानता करी । जो ‘महाराज ये स्लेच्छ हमारे देशमें जायगो तो गामकी भेट करूँगो’ । सो रात्रिके समय बाटरामें श्रीजीने गंगाबाईसों आज्ञा करी श्रीदाऊजी महाराज सो कहो जो काल सिंहाडके मंदिरमें जायके उत्थापन होंगे । और वह पादशाह आज खमनोरसुं भाजेगो सो रातोंसात उदयपुर जायगो । तादिना रात्रिके समय एक प्रहर रात्रि गई सो ता समय सिंहाडमें श्रीजीके मंदिरमें जगमोहनमें भ्रमर बडे बडे निकसे सो को ठ्यावधि निकसे सो सूधे खमनोरकी और चले और पादशाहकी कोजमें

गये सो एक एक मनुष्यसों तथा घोड़ा हाथीसों लक्षावधि-
जायके लगे सो ऐसे अकस्मात् सब तहांते भजे। और वाके संग
बारह लक्ष फोज हती सो भ्रमरनके कटिवेके डरके मारे मगरा
मगरामें जायके बिखर गई। और पादशाहके दोय बेगम हती। तिन
मेंते एकको नाम रंगीचंगी हतो सो दश हजार असवार वाके संग
जुदे चलते सो वो मगरामें भूल गई सो राणाजीकी फोज नाहर
मगरे पड़ी हती तामें जाय पड़ी। तब राणाजी श्रीराजसिंहजीने यह
बात जानी जो पादशाहकी बेगम भूल पड़ी हे सो मेरी फोजमें
आईहे सो वे राणाजी आप चलायके बेगम पास आये सो आयके
बेगमसों मुजरा किया और कहो जो 'तुम हमारी बहिनहो तुमको
जहां कहो तहां पादशाहके पास संग चलके पहुंचाय आवे। तब
वा बेगमने कही जो तुम हमारे 'धर्मके भाई हो सो तुम हमकों
पादशाहके अरूबरु पहुंचाय देओ। तब तुम्हारे मुलकमेंते पादशाहकुं
बेगही निकास ले जाऊंगी। तब राणाजीने दश हजार असवार संग
कर दीने और कही जो कोई पादशाहके डेरामें पहुंचाय आओ।
तब राणाजीने बेगम साहबकुं दश गाम कापड़ामें दीने और पादशा-
हनें रातोंरात उदयपुरमें पीछोला तलावके ऊपर जायके डेरा किये।
तब गाम सब ऊजर देख्यो और वस्ती तो भाजके मगरान पर
चढ़ी ही सो दुपहर होय गयो। और पादशाह अच्छ न खाय कहे
जो रंगीचंगी बेगम आवे तब अच्छ खाऊं इतनेमें तो वह रंगी
चंगी आयके ठाड़ी भई। तब उन्हें सब समाचार राणाजीके कहे
जो मोकों अच्छी तरह पहुंचाय गये और मेनेऊ धर्मका उनको
भाई किया हे ताते उनके मुलकमें हजरतकुं रहना सकुन है। तब

पादशाहने कह्यो एक महजत उदयपुरमें बनवावेगे तो पावें चलेंगे । तब बेगमने नाहीं करी काल आपकुं कूंच करना होगा । और मेरे भाई राणाजीकुं कहाय देऊगी सो तुम्हारे नामकी एक महजत बनवाय रखेगे । तब उन बेगमने राणाजीकुं बुलायके पादशाहसों मिलाये तब राणाजीसों पादशाहने कहा जो 'तुमने हमारी बेगमकी बहुत बंदगी करी हे जो तुम उनके धर्मके भाई हो सो तुम कछु मांगो । मैं तुम्हारे ऊपर बहुत खुसी भया । तब राणा श्रीराजसिंहजीने कही जो आप खुश भये हो तो बेग फोजको कूंच करवाओ । मेरा मुलक सब बिंगड़ है । तब पादशाहने राणाजीसों कही एक तुम हमारे नामकी महजत बनवाय रखना और कन्हैयाजी श्रीगिरिराज सों उठें हैं सो तुम्हारे मुलकमें आये हैं जो मैंने अपने मुलकमें विराजवेके लिये बहुत कुछ किया पर उनकी मरजी तुम्हारे मुलकमें विराजबेकी हे । ताते तुम उनके हुकुममें राहियो जहां ताई यह देवता तुम्हारे मुलकमें रहेंगे तहां ताई में सेवाडमें नहीं आवनेका हूं । सो यह कहिके दूसरे दिन फोजको कूंच भयो सो द्वारिकासंभगयो । और सेवाडमें चैन भयो तब राणाजी सब कुटुंब सोहेत उदयपुरकुं आये । और गास तथा मुलकके लोक मगरानपे भाजके चढ़े हते सो सब अपने अपने ठिकानें आयके वसे । सो ता पावे बाटरासुं राजभोग आरती करके श्रीनाथजी पधारे सो सिहाड़में अपने मंदिरमें विराजे ॥

॥ श्रीपुरुषोत्तमजीमहाराज् श्रीजीकुं जडाज् मौजा धारण करवाये ॥

एक समय सूरतवारे श्रीपुरुषोत्तमजी महाराज सो दिन देशकों पधारे । तहां रत्नकी पुष्कलता देखके तहां आपने श्रीनाथजी

के लिये जडावके मोजा बनवाये और वे मोजा बनवायके श्रीजी हारकों शीघ्र पधारे परंतु मारगमें दिन विशेष लग गये ताते मोजा बड़े वहे चुके ता पाँचे पधारे और वर्ष दिन रहवे कोसो कार्य हतो नाहीं काशी दिव्विजय करवेकों पधारनो हतो तासो श्रीदाऊजी महाराजसों घिनती करी “ जो ये मोजा बनवाय लायो हुं और श्रीजी तो मोजा बडे कर चुके आगे रहिवेको सो ऐसो कार्य है जो आपकी आज्ञा होय तो श्रीजी अंगीकार करें ” तब श्रीदाऊजी महाराज आज्ञा किये जो तुमतो श्रीगुसाईंजीके बालक हो सो तुम्हारो कियो श्रीजी अंगकार करे हैं तथापि ऋतुको व्युत्कम है ताते शुंगारके समय धरायके फेर द्वेचार धडी पाँचे बडे कर लीजियो सो यह आज्ञा श्रीदाऊजी महाराजकी पायके श्रीपुरुषोत्तमजी महाराजने दूसरे दिन श्रीजीको शुंगार कन्यो सो वे ता दिन जडावके मोजा श्रीजीकों धराये और श्रीदाऊजी महाराज भोग आवतमें नित्य श्रीजीके दर्शनकों पधारते सो श्रीजीके दर्शन करके यह श्रीपुरुषोत्तमजी महाराजसों आज्ञा करी जो मोजा माला पीछे बडे कर लीजियो इतनी आज्ञा करके श्रीदाऊजी महाराज अपनी बेठकमें पधारे पाँचे माला बोली पाँचे राजभोग आरती भई तब श्रीपुरुषोत्तमजीने टोडा व्यास मुखिया हते सो तिनसों कह्यो जो एक सहस्र मुद्रा तुम गुप्त लेहु और श्रीजी मोजा संध्या आरती ताईं अंगीकार करलें तब मुखियाजीने कही जो महाराज श्रीदाऊजी महाराजको नेम हे जो भोगके दर्शन नित्य करें हैं ताते आप शंखनाद भये पीछे उत्थापनके दर्शनके समय बडे करेंगे ता पाँचे किवाड खोलेंगे ता पाँचे श्रीजीको अनोसर करिके जो श्रीपुरुषोत्तमजी

तो अपनी बेठकमें पधारे और सब सेवकहूँ अपने अपने घरकुं
मये ता पाछे एक मुहर्त ताई श्रीजीने गह देखी अब ये मोजा
बडे करेंगे परंतु काहने करे नहीं तब श्रीनाथजी उद्धताये सो खम-
नोरमें श्रीहरिरायजी भोजन करके अपनी बेठकमें पोढे हते सब
निद्रा लगी तबही श्रीजी स्वप्नमें आज्ञा करी जो तुम शीघ्र आयके
मोजा बडे कर लेड तो मैं बनको जाउं तब ताही समय श्रीहरि-
रायजी चौकके उठे सो श्रीहरिरायजीके सब असवारी सिद्ध रहती
सुखपालकी तथा घुडबेल तथा बेलनको स्थ तथा एक हाथी इतनी
असवारी सदा रहती तामेसूं एक एक असवारी एक एक प्रहर ढोढी
पे आयके ठाढ़ी रहती सो श्रीहरिरायजी आपउठके यहाँ “असवारी
कहा ठाढ़ी हे” तब उद्धव खदासने विनती कीनी जो महाराज
घुडबेल जुती ठाढ़ी हे सो तत्कालही श्रीहरिरायजी घुडबेलमें विराजे
ओर बेगही हांके सो घडी एकमें आयके बनासके ऊपर स्थान किये
ओर अपरसमें श्रीदाउजी महाराजके पास पधारे सो मंदीरकी कूची
नको झूमका मांगयो सो श्रीहरिरायजीके प्रभावकूं तो श्रीदाउजी
महाराज जानत है सो विचरे जो कछु श्रीजीकी आज्ञा भई हे
तासूं तालीको झूमकाहू उनको दिये सो श्रीहरिरायजी निज मंदि-
रमें पधारे सो ताला खोलके शंखनाद करायके और श्रीजीके पास
जायके मोजा बडे कर लिये ओर दंडोत्त करके टेरा देंके बाहरके
किवाड मंगल करके आये ता पाछे तालीनको झूमका श्रीदाउजी
महाराजजी बेठकमें पहुंचायके आप तो श्रीहरिरायजी खमनोर पधारे
ओर श्रीउरुषोत्तमजीको तो या बातको बड़े अपने मनमें पश्चा-
त्ताप भयो जो हमने मोजा काहेकूं रखे श्रीनाथजीको श्रम भयो

ओर श्रीदाऊजी महाराजने व्यासजीसों खीजके कह्यों जो तुमनें
मोजा काहेकों राखे आज पछें तुम संकोचके मारे श्रीगुरुसाईजीके
बालकनसों कहु न कह सको तो हमसों कहियो हम कहेगे हमा-
रो काम है ॥

॥ श्रीगोवर्धननाथजीको शृंगार श्रीवल्लभजीके पुत्र श्रीवजनाथजी किये ॥

बहुर एक बेर श्रीगोवर्धननाथजीको शृंगार श्रीवल्लभजी महा-
राजके पुत्र श्रीननाथजीने कियो सो श्रीजीके हाँ पेंडेकी गादी
बिछे हे तपैं चरणारविंद धरके पीछे पेंडेमें पधारे सो गादी बिछा-
वनो श्रीगुरुसाईजीके बालक तथा भीतरिया सब भूल गये तब
राजभोग आरती पीछे जब अनोसर भयो तब गंगाबाईसों श्रीजी
आज्ञा किये, “ जो आज पेंडेकी गादी बिछावनो भूल गये
हें सो मैं ठाडो होय रह्यो हूँ ” तब गंगाबाईने श्रीनाथजीसों
श्रिनती करी जो यह ब्रह्म भीतरकी हे मेरे बलकीं नहीं हे बलैयाँ
लेहों तुम यह बात श्रीहरिरायजीकों जताओ तब श्रीनाथजी खम-
लोरमें श्रीहरिरायजीकों जताये तुम बेग आयके पेंडेकी गादी बिछ-
वाय जाओ मैं ठाडो होय रह्यो हूँ तब श्रीहरिरायजी खमलोरसों
घुड़बेलमें विराजके श्रीनाथद्वार पधारे सो वे गंगाबाई हूँ नदीके
ऊपर जायके श्रीहरिरायजीकी प्रतीक्षा करत ही सो इतनेमें श्रीह-
रिरायजी पधारे तब गंगाबाईने भगवत्स्मरण कियो और कह्यों जो
तुम यहाँईतें स्नान कर बेग अपरसमें जाओ लाला ठाडो होय रह्यो
हे तब तत्काल स्नान कर अपरसके वस्त्र पहरिके श्रीहरिरायजी
श्रीदाऊजी महाजके पास तें ताली मंगायके और मंदिरको तालो
खोलके श्रीजीकों दंडोत करके और गादी बिछायके ताला मंगल

करके श्रीदाऊजी महाराजकी बैठकमें श्रीहरिरायजी पधारे तब श्रीदा-
ऊजी महाराजने गादी विछाय दीनी तापे श्रीहरिरायजी विशजे तब
श्रीहरिरायजी श्रीदाऊजी महाराजसों कहे आप हमारे श्रीवल्लभ
कुलके मुख्य हो और श्रीजीको अधिकार तो आपके माथे हे तते
हम कोई बात श्रीजीकी सेवामें भूलि जाय तो आपको शिक्षा करनी
उचित है आज पेंडे की गादी विछावनो भूल गये सो श्रीजी दोय
घडी ताई ठाडे रहे सो मोको आयके जताये तब मेरे आयके
गादी विछाई तब श्रीजी बनको पधारे तब श्रीदाऊजी महाराज
श्रीहरिरायजीसों कहे जो पेंडो तो विछयोई हतो पर छोटी गादी
विछे हे सो भूल गये होयगे सो में समझाय दऊंगो एक स्वाभा-
विक प्रश्न तुमसुं सूधे मनसों पूछो हों तुम महानुभाव हो ताते और
गाड़ी विछे बिना श्रीजी पेंडा पर चरणारविंद न दिये ओर अनो-
सरमें जेजे चौरासी कोश ब्रज मंडलमें आप पधारे हे तब सब
रथलनमें भूमीपे श्रीजी श्रीचरणारविंदसुं फिरे हे तहाँ कहाँ सबरे
गादी विछी हे ? तब श्रीहरिरायजीने यह उत्तर दियो जो श्रीगुसां-
ईजीने श्रीनाथजीसों यह आज्ञा करी हे जो अब हम यहाँ गादी
विछावे तापे श्रीचरणारविंद धरिके पीछे पेंडोके उपर पधान्यो करे
ताते श्रीजी गादी विछे बिना पेंडोमें श्रीचरणारविंद नहीं धरे हे सो
आप यह श्रीगुसांईजीकी आज्ञा उल्लंघन न करिके अपनी सेवा
श्रीजी अंगीकार करे हे सो तो आप श्रीगुसांजीकी आज्ञातुं
करे हे और तुमने कही जो ब्रज भूमिमें श्रीजी गादी विछाये
बिना चरणारविंद केसे कर धरे हे ताको उत्तर यह हे जो ब्रजभू-
मितो नवनीत हूसो क्रोमल हे और जहाँ जहाँ आप चरणारविंद

धारें हैं तहाँ सात्विक आविर्भाव भूमिको होय आवे हैं ब्रजभूमी सदा
प्रेसादर होते हैं गुणातीत श्रीनंदलालात्मक भूमि हैं ब्रजकमलाकृत
हैं जहाँ जहाँ श्रीजी चरणारविंद धरत हैं तहाँ तहाँ भूमि कमल-
फूलवत कोमल होय जात हैं कमलके फूलके ऊपर चरणारविंद
धरेसों जेसे सुखद होय हैं ऐसो ब्रजभूमिष्ठ चरणारविंद धरेसों
श्रीजीकों सुख होते हैं ताते श्रीशुकदेवजीने श्रीभागवतमें कह्योहे ॥

शरच्छन्द्रांशुसन्दोहध्वस्तदोपातमम् शिवम् ॥

कृष्णाया हस्ततरलाचितकोपलवालुकम् ॥ स्कं० १० अ ३२ श्लो० १२

ताते श्रीगुरुसार्वजीके मतके अनुसार श्रीजीकी सेवा अपनकूं
करनी सो श्रीगुरुसार्वजीने जो जो समय सेवा साधी है सो ताहीं
समय श्रीजी ताते सेवाकी सुधि करते हैं “दास चत्रभुज प्रभुके
निजसत चलत लाला गिरधर” यह कीर्तनकी तुक कही यह
बात सुनिके श्रीदाऊजी महाराज बहुत प्रसन्न भये ओर आप महा-
शय हो यह श्रीहरिरायजीसों कही तपाछे श्रीहरिरायजी खमनोर
पधारे ओर श्रीदाऊजी महाराज हूँ ता दिनते श्रीजीकी सेवामें बहुत
सावधान रहते ओर कोऊ ब्रह्मकुल शृंगार करते तो हूँ श्रीदाऊजी
सब सेवाकों देखते दो बेर श्रीजीके मंदिरमें दर्शनकूं पधारते कसर
कोर होती सो शिक्षा करते ॥

॥ श्रीजी गोविन्ददास वैष्णवके द्वारा सूरजपोर करवायबेकी आज्ञा किये ॥

बहुर एक दिन एक नंदरवारको वैष्णव हतो सो वाकी
आरूढ़ दशा हती एकाकी वह ब्रजमें फिरतो सो वाको नाम गोविं-
ददास हतो सो एक दिनां कोकिलाबनमें श्यामतमालके नचि-
बेठ्यो हतो सो श्रीहरिरायजीके श्रीचरणारविंदको ध्यान करत हतो

ओर श्रीहरिरायजीको सेवक हतो ताकू देखके सब वैष्णव कहते जो यह सिरी हे ताते विशेष कोई बाते गोष्ठी न करते और वह हूँ काहूँसों संभाषण करता नहीं ता समय श्रीजी कोकिला बनमें अक्षकृष्णपवारे सो ता सभय वाकू दर्शन भये और श्रीजी वा वैष्णव कुं यह आज्ञा किये जो गोविंददास तू मेवाड़कों जायके श्रीगिरिधारीजीसों कहियो जो अक्षकूटलुटतमें मेरे मंदिरमें अनाचार मिलतहे ताते एक सूरजपोर करवाओ ताहां होयके सब जिकसेंगे तब वा वैष्णवनें विनती कीनीजो महाराज मेरो कहो वहां कोई न मानेगो तब श्रीनाथजी आज्ञा किये जो श्रीगिरिधारीजी मानेंगे तू बेग जायके कहियो तब बहु गोविंददास श्रीघर्ही श्रीजीद्वार आयो और श्रीगिरिधारीजी महाराजसों विनती कीनी महाराज श्रीनाथजी ऐसें आज्ञा कीये हैं और आपको नाम लियो हे तब यह बात सुनके श्रीगिरिधारीजीतो वैष्णवके प्रभावको जानतहे तासों गढ़ गद कंठ वहे गये तब वा वैष्णवसों आज्ञा किये जो मेरो नाम श्रीनाथजी श्रीगिरिधारीजी यह जानत हैं सो दोय तीन बार कीगिरिधारीजीने वह बात वैष्णवके मुखते कहवाई ता पाछे श्रीविठ्ठलरायजी महाराजसों श्रीगिरिधारीजीने सब विनती कीना तब श्रीविठ्ठलरायजी आज्ञा किये जो भाई आजकाल कलियुग हे ताते कोई पाखंडसों करके कोई बात कहे तो मानिये नहीं श्रीजी हमसों आज्ञा करेंगे जो बात होयगी ता पाछे श्रीगिरिधारीजी चुप वहे रहे अपना बेठकमें पधारे पाछे जब पंद्रह दिन अक्षकूटके रहे और रात्रि प्रहर पिछली रही तब श्रीविठ्ठलरायजी महाराकों स्वप्नमें श्रीजी आज्ञा किये जो उमनें वा वैष्णवकी बात झूठी मानी सो अब सूरज पोर

निकसेगी तब अन्नकूट आरोग्यगो इतनी आज्ञा करके निज मंदिरमें पधारे श्रीविष्णुलरायजी हूँ जागे तत्क्षण श्रीगिरधारीजीकुं बुलाये और आज्ञा करी जो भाई यह वैष्णव सांचो है आज हमकों श्रीजी स्व-पनमें आज्ञा करी जो ताते अब हमकुं पंद्रह दिनमें सूरजपोर सिद्ध करवानी पाल्छें उस्ताकुं बुलायके पंद्रह दिनमें सूरजपोर सिद्ध करवेकी आज्ञा कीनी जब इतने दिनमें सूरजपोर सिद्ध भइं तब श्रीनाथ-जी अन्नकूट आरोगे सो प्रति वर्ष सूरजपोर अन्नकूटके दिन खुलेहे ॥

॥ श्रीजी गोपालदास भंडारीकों दर्शन देके लीलामें अंगीकार किये ॥

बहुर एक बेर श्रीजीके उत्सवको दिन हतो सो कोईक सामर्थी बालभोगमें पुष्कल धरत हते पहिले दिनसूं सो दूसरे दिन राज-भोगमें आरोगते सो वा दिनां बालभोगीयानकों तो सूधि आई परं तु एक खःसा भंडारी गोपालदास हतो तानें सामर्थीको सामान न पठायो ओर कही जो काल हैयगी तब तुम सामान लीजियो पाछे जब प्रहर रात्रि पाढ़ली रहीं तब श्रीजी एक लाल छड़ी हस्तमें लेके गोपालदास भंडारीके पास पधारे सो ताकों एक छड़ी मारके जगाये ओर श्रीजी आज्ञा किये जो तेनें हमकों सामर्थी आज बाल-भोगमें क्यों न पठाई यह वस्तु करते विलंब बहुत लये हे ताते काल आवेगी तो राजभोगकुं अबेर होय जायगी इतनेमें वह गो-पालदास भंडारी जायके देखे तो आगें श्रीजी आप ठाढ़े हैं तब उठ्यो उठिके यह कही मुझे चरण छुवाताजा सो श्रीजी वहांसूं भाजे पाल्छे वह गोपालदास दोडके चल्यो सो पोर तांड़े आयो सो पोरकेतो किवाड मंगल हते सो श्रीनाथजी तो मंदिरमें पधारे ओर यह तो सिंहपोरके किवाडसूं जायके माथो पटकके यह पुकारे मुझे

चरण छुवाता जा या प्रकार कहे तब एक गोवर्धन कंत्रीसिंह पोरिया हतो सो वाने उठिके और किवाड़ खोलके वासो पूज्यो जो तू क्यों किवाड़सुं माथो पटकत हे तेने कहा देख्यो तब वाने कही जो एक लडिका मंदिरमें भाज गयो हे अबही ताके चरण छुवनकों जाऊंगो तब वा पोरियाने वाकूं पकड़के बेठाय दीनो परंतु वह तो बावरो छ्हे गयो सो बेर बेरमें यह कहे “अब लडके मुझे चरण छुवाता जा” अष्ट प्रहर वारंवार वाकूं यही रटना लगी रहे अन्नजल सब त्याग कर दियो यह बात श्रीशऊजी महाराजने सुनके वाकूं एक कोठरीमें बेठाय दियो और एक मनुष्य वाकी चाकरीमें राख दियो सो यह गोपालदास उन्नीस दिनांताई जीयो श्रीनाथजीके दर्शन भये पीछे तहाँ ताई अन्नजल और निद्रा अंदिकी कछु वाकों बाधा न भई और यह रटना लगी रही “जो लडके मुझे चरण छुवाता जा” सो ऐसे करत वाके प्राण छूटे सो श्रीजीकी लीलामें सद्यः प्रवेश कियो ॥

॥ श्रीनाथजीके सेवक माधवदास देसाई ॥

और एक समय श्रीगोवर्धननाथजीको सेवक माधवदास देसाई सो वह मार्गरोलमें रहत हतो सो वाको नाम पहिले भगवानदास हतो सो फेरिके श्रीगोकुलनाथजीने वाको नाम माधवदास धन्यो सो एक कोड काँचनी मुद्रा द्रव्य वाके पास हतो और श्रीजीके दर्शनकी वाको बहुत आसन्नी हती सो तीसरे वर्ष दश बीस हजार आदमीनकों साथ लेके वह माधवदास श्रीनाथजीके दर्शनकों श्रीजीद्वारा आवंतो और जाके पास खरची घटती ताकुं मारगमें बोही देतो और अधिक महिना भर श्रीजीके दर्शन करतो और जादिनासुं श्रीजीके

दर्शनकूं अपने घरसुं चलतो ताही दिनासों आज्ञ छोड़ देतो और दुग्धपान करतो ता वैष्णवकों श्रीजी स्वप्नमें यह आज्ञा किये तू एक लक्ज मुद्राको खीके पहिरवेको नखसुं लगायके शिखा पर्यंत गहना बनवायके एक बंटामें धरके जो अबके तू मेरे दर्शनकूं आवे तब लेतो अइयो सो लायके मेरी भेट करियो । तब वा वैष्णवनें संवत् १७४२ के साड़ द्वे चैत्र हते सो फाल्गुनमें आयके दर्शन डोलके किये और वह बंटा श्रीजीके आर्मे आयके भेट धन्यो तब श्रीदाऊजी महाराजसों एक सेवकने खबर करी जो महाराज एक वैष्णवने लक्ज मुद्राको गहनो बनवायके भेट कियो हैं तब श्रीदाऊजी महाराजने वह बंटा लक्ज मुद्राके गहनेको अपने पास मगाय लीनों ओर बहुतही यत्नसों करिके धरराखे जान्यो जो यहां कछु कारन हे जब प्रहर एकरात्रि रही ता समय श्रीगोवर्धननाथजी श्रीदाऊजी महाराजकों स्वप्नमें कहे जो वह गहनाको बंटा आयो हे सो नखसुं लगायके शिखा ताई खीके आभरणमें अर्थ आवे हे सो गंगाबाईकों पहराओ सो पहरिके मेरे दर्शनकूं भोगके समय वह आवे श्रीनाथजी ऐसें हीं वा गंगाबाईकूं आज्ञा किये जो तू सब गहना पहरिके भोगके दर्शनकूं अइयो तब गंगाबाईने सब ऐसें हीं कियो एक दिन दर्शन किये और वेसें हीं गहना पहन्यो जब श्रीनाथजी दर्शन दीने तब यह आज्ञा किये जो यह गहना सब शश्या मन्दरमें मूढापे स्थापन करो तब ऐसेंही भयो सो ऐसें ऐसें श्रीगोवर्धननाथजीके अनेक चरित्र हें सो कहां तांड़ लिखवेमें आवे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपातें स्वकीयनकों अनुभवमें आवे हैं ॥

॥ इति श्रीनाथजीकी प्राकृत्य वार्ता संपूर्णा ॥

सोमवार—बज्जन्मासी ता० ३ सितंम्बर-सन् १९१७ में से उद्धृत

दाँकीपुरके सहयोगी “बिहारी”, में निकलता है, “बनार-
सके श्रीमानबाबू मोतीचन्द्र” सी० आई० ई० और श्रीयुक्त रमा-
कान्त मालवीने एक पत्र इल्हाबादके ‘लीडर’, में प्रकाशित करा-
या है जिसमें आप लोगों ने एक आश्र्य जनक दृश्यका उल्लेख
किया है। आपलोगोंका कहना है, कि गत जन्माष्टमीके दिन हम
लोग मेवाड़के श्रीनाथजीके मंदिरमें उत्सवदेखने गये। वहां एक
ऐसे दृश्यका अवलोकन करने का संयोग हम लोगोंको प्राप्त हुवा,
जिसे हम समझते हैं, कि कहुरसे भी कहुर हिन्दू बिना अपनी
आखों देखें विश्वास नहीं कर सकता। कितने ही नर नारियों और
बालबच्चों को इसके देखनेका अन्वसर मिला और जिन्होंने देखा,
वह सब अचंभित हो गये। जिस समय श्रीनाथजीकी सूर्तिको
पञ्चामूल स्नान कराया जा रहाथा उस समय अचानक मंदिरकी
बहारी दिवारसे जिसके निकट लोग खड़ेथे पानी गिरना आरम्भ
हुआ। दिवार मर्मर पत्थरकी थी। कहीं सुराख आदि दिखाई
पड़ते न थे। लगावके चिन्हका सन्देह होना असंभवथा। क्योंकि
हम लोगोंने भलीभाँती जाँच कर देखा। दिवारको वारंवार पौछने
परभी जलका आना जन्द नहीं हुआ। दिवारकी दूसरी ओर अर्थात्
मन्दिरके भीतर सूर्तिके निकट और अधिक पानी बह रहा था।
निकट कोई पानीका खजाना, होज, कूवा, तालाब, या पानीका
जल या किसी प्रकारके जल मार्गका नाम तक न था। हम लोगों
के आश्र्यको कोई सीमा न रही। वहांके लोगोंसे पूछने पर

विदित हुआ, कि प्रतिचर्पदो अवसरोंपर इस प्रकारकी घटना देखने में आती है। एक ज्येष्ठमासकी जलयात्राके दिन और दूसरे जन्माष्टमीके दिन। वृद्धसे वृद्ध अधिवासी वह यही कहा करते हैं कि जब से उन्हे बोध हुआ, तब से आजतक वह इसे देखते चले आते हैं। इस बातकी सत्यता जाननेके लिये वह कहते हैं, कि संसारके जिस मनुष्यको संदेह हो, वह स्वयं आकर अपने भ्रमको दूर करले। जल गिरनेका कारण यह बताया जाता है, कि श्रीकृष्णभगवानके स्नानके लिये उक्त दो दिन यमुना माता अपना जल अदृश्य मार्गसे भेजती है। हम लोगोंका पूर्ण विश्वास इस पर जम गया है। जिन्हे हमारी बातोंपर विश्वास नहो, वह स्वयं अपने नेत्रों द्वारा देखकर भलीभाँति जाक्ले ओर इसका भैद यदि उनकी समझ में कुछ हो, तो बतलावें ॥



श्रीमहालभाचार्यजीका संक्षिप्तजीवनचरित ।

श्रीमद्वेदव्यास विष्णुस्वामियतानुवर्त्यखण्डशूलपठलाचार्य जगद्गुरु
महाप्रभु श्रीश्रीवल्लभाचार्यजीके पूर्वज श्रीयज्ञनारायण भट्टजी सोमयाजी
विमवर भारद्वाज गोत्री तैत्तिरीय शास्त्राध्यायों आपस्तम्ब सूत्री वेङ्ग नार्थी
अप्रतिग्रही पटशास्त्रज्ञ श्रीगौपालोपासक स्तंभादिके समीप काङुंभकर नगरी
के निवासी थे, जिनके निवास मन्दिरमें सदा पञ्चामि विराजमान रही,
जिन्होंने शत सोमयज्ञका संकल्प इस प्रकार किया था, कि मैं या मेरे
वंशज इसकी पूर्ति करेंगे ।

पश्चात् (यज्ञनारायण भट्टजी) ३१ एकर्त्रिंशत् यज्ञ निर्विघ्न समाप्तकर
पूर्ण यज्ञस्वी हो भगवद्वामको पधारे । इनके योग्य पुत्र श्रीगंडगाधर सोमयाजी
बड़ही पवित्रात्मा हुए जिन्होंने अनेक ग्रन्थोंकी रचना तथा २७ सत्ताईस
सोमयज्ञ किये । पश्चात् अपने योग्य पुत्र गणपतिजी सोमयाजीको यज्ञ-भार
समर्पण कर स्वयं गोलोक वासी हुवे ।

अनन्तर सोमयाजी गणपति भट्टजीने, तन्मानिङ्ग्रह आदि विविध ग्रंथ
रचनाके साथ ३२ सोमयज्ञ साङ्गोपाङ्ग समाप्त किये, इनके योग्य पुत्र वल्लभ
भट्टजीने भी कई एक मनोहर ग्रन्थ रचना तथा ५ सोमयज्ञ किये । वल्लभ-
भट्टजीके पुत्र श्रीलक्ष्मणभट्टजी बड़े ही उदारचेता तेजस्वी हुए और बाल्या-
वस्थामें ही कुशाग्रबुद्धि होनेसे जिन्होंने चारों वेद, पूर्व उत्तर मीमांसा, धर्म-
शास्त्र तथा अन्यान्य शास्त्रोंमें भी प्रवीणता-लाभ किया । और ५ पांच सोम-
यज्ञ कर अपने पूज्य वृद्ध पितामहके संकल्पकी पूर्तिकी । आपका पांचवां
सोमयज्ञ संवत् १५३३ चैत्र शुक्ल ५ सोमवार पूज्य नक्षत्रमें प्रारम्भ हुआ ।
यह समाप्ति कालमें आकाशवाणी हुई, कि तुम्हारे वंशमें शत सोमयज्ञ पूर्ण
हुए हैं इसलिये अब तुम्हारे यहां भगवानका अवतार होगा । यज्ञकी समा-
प्तिकर लक्ष्मण भट्टजी सकुद्दम्ब तीर्थराज प्रयागकी यात्रा करते शंकरदीक्षित
नामक एक महात्माको साथले काशी पधारे और कुछ काल निवास
करने पर इनकी धर्मपत्नी “ इलमागारुजी ” गर्भवती हुई । उसी
समय वहां दण्डी और म्लेच्छोंमें उपद्रव शुरू हुआ, जिसमें वहांके रहनेवाले
जहां तहांको भाग निकले, लक्ष्मणभट्टजी वहांसे सत्त्वीक चले और चम्पारण्यमें
पहुंच गये, इस समय “ इलमागारुजी ” को मार्गधर्मसे गर्भ-वेदना हुई और

एक शपीवृक्ष की छाया में बैठ गई, वहीं पर जरायुरे लिपटा हुवा सासमासिक पुत्र उत्पन्न हुआ। मृतक समंज्ञकर उसे उसी वृक्ष के नीचे अपने उत्तरीय वस्त्र एवं शपीपत्रों से आच्छादित कर आगे को पधारी। और पतिसे सब वृत्तान्त सुनाया। और समीपके चतुर्भूषुर [चौरा] ग्राम में विश्राम करने लगी रात्रि में भट्टजी को स्वभव हुवा जिसमें भगवान् ने आज्ञाकी कि मैं तुल्यारे घर में अवृत्तीर्ण हुआ हूँ। द्वितीय दिन ही सुनने में आया कि काशी में शान्ति विराजमान हो रही है। फिर पूर्व आगत मार्ग से ही काशी को लौटे, चम्पारण्थ में आये वहाँ एक शपीवृक्ष के नीचे अनिष्ट लम्हे अपना अत्युष्टामृत पान करता हुआ दिव्य कुमार देखने में आया। उसे देख माताके स्तन से दुग्धधारा बहने लगी। माताको देख अभिदेवने मार्ग छोड़ दिया। 'इल्लमागारुजी' ने अत्यन्त प्रेम से उस अपने मनोगत पुत्रको गोद में उठा लिया और बार २ मुख चुम्बन कर पतिकी गोद में दे दिया। उस दिन वैशाख कृष्ण ११ रविवार सं १५३५ था, लक्ष्मण भट्टजी मन में पूर्ण आनन्दित हो अपने पुत्रको ले काशी पधारे, वहाँ जातकर्म संस्कार के पश्चात पुत्रका नाम 'श्रीवल्लभ' रखा। सातवें वर्ष में यज्ञोपवीत संस्कार करके गुरुकुल में पढ़ने को बैठाये। उस पुत्रने चारही मास में चारों वेद और षट्शास्त्रों को पढ़ लिया। यह देख पिताको विश्वास हुआ, कि यह वालक भगवान् काही अवतार है। कुछ काल बाद लक्ष्मण भट्टजी भगवद्गाम यह वालक भगवान् काही अवतार है। कुछ काल बाद लक्ष्मण भट्टजी भगवद्गाम पधारे। फिर ११ वें वर्ष में श्रीवल्लभाचार्यजी दक्षिण में पधारे वहाँ विद्वानगर में पधारे। फिर ११ वें वर्ष में श्रीवल्लभाचार्यजी दक्षिण में पधारे वहाँ विद्वानगर में कृष्णदेव राजाके यहाँ विद्वानोंमें बड़ा भारी विवाद चल रहा था—जिसमें स्मार्त विषय सुन उस सभामें पधारे आपका अलौलिक तेज देख सभी सभासद गुग्ध हो गये राजाने आपको बहुमानपुरःसर सभामें उच्च आसन पर बैठा। आपने वैष्णवोंके तरफ से 'ब्रह्म सधर्मक' है। इस विषय पर आपने वैष्णवोंके तरफ से 'ब्रह्म सधर्मक' है। इस विषय स्मार्तोंसे अद्वाईस दिन तक शास्त्रार्थ किया। श्रीवल्लभाचार्यजीकी प्रबल श्रुतिसमृतिप्रमणान्वित युक्तियोंसे प्रतिवादिगण निरुत्त हुए। इस वास्ते कृष्णदेव अपने प्रसन्न होकर आपको कनकाभिषेक कराने को चतुरज्ञिणी देना प्रभु राजाने प्रसन्न होकर आपको कनकाभिषेक कराने को चतुरज्ञिणी देना प्रभु 'हरिस्वामी', शेषस्वामी, जीके हाथों से आचार्य साम्राज्य का लिलक करा-

या, राजाने तथा सब आचार्योंने भी तिलक किया। तथा अन्य लोगोंने भी तिलक किया आपको श्रीमद्देवव्यासाविष्णुस्वामी, अचार्य उपाधिसे विभूषित किया। राजाने महुद्वय शिष्य होने की प्रार्थना की उन सर्वों को श्रीवल्लभाचार्यचरण रणने शरणाष्टाचर मन्त्रोपदेश पूर्वक तुलसी माला दी, राजाने आचार्यचरणोंके आगे मोहरोंसे भरा थाल भेट किया — इसमेंसे, ७ मोहर ले आपने कहा मैंने दैवीद्रव्य ले लिया अब शेष द्रव्योंको तुम सबको बांट दो। पथात् आचार्यजी अपने मामाके घर पधारे, वहाँ विष्णुस्वामी सम्प्रदायके आचार्य योगीराज श्रीविल्ममङ्गलाचार्यजी आपके पास पधारे। आपने स्वागत किया। अनन्तर योगिराजने कहा कि आचार्य द्राविड़ विष्णुस्वामीजीसे सात सौ आचार्य होड़ुके थे। उनके बाद जो राजाविष्णुस्वामी हुए। उन्होंने मुझे सम्प्रदायभार देनेके संमय कहा था कि इस सम्प्रदायको तुम चलाओ पथात् श्रीवल्लभाचार्य नामक साक्षात् भगवद्वत्तार होंगे, जो इस सम्प्रदायका उद्धार करेंगे। तुम उन्हें इस सम्प्रदायका उपदेश दे दीक्षित करना सोमें आपके पास आया हूँ आप इस सम्प्रदायको ग्रहण करें। पथात् विल्ममङ्गलजीने मन्त्रदीक्षा दी, दीक्षा देकर अन्तर्द्धान हो गये।

उसके अनन्तर श्रीवल्लभाचार्यजीने तीन बार पृथ्वीपरिक्रमा (तीर्थयात्रा) की। तीर्थयात्रामें आपका अनेक आचार्योंके साथ समागम हुआ उन सर्वोंने आपकी आचार्यसत्कृति की। जहाँ तहाँ अनेक दुर्बिवादियोंको भी पसास्त किये। और अखिलवेदसमत शुद्धाद्वैत-सम्प्रदायका प्रचार किया। आपका विवाह श्रीपाण्डुरङ्गविठ्ठलनाथजीकी आज्ञा से क्रांशीके वासी तैलङ्ग ब्रह्मण मधुमङ्गलजीकी पुत्री श्रीमहालक्ष्मीजीसे हुआ था विवाहके अनन्तर आपने अंग्रेजों ग्रहण किया और सोम यज्ञ किये। कर्ममार्ग तथा भक्तिमार्गका पूर्ण प्रचार किया। पहले आप शरणाष्टाचर तथा गोपालमन्त्रकी दीक्षा देते थे फिर भगवदाज्ञानुसार गद्यमन्त्र [ब्रह्मसम्बन्ध] का भी उपदेश करनेलगे। पृथ्वी-परिक्रमा करते समय आपको संवत् १५४८ में एसी भगवदाज्ञा हुई कि ब्रजमें श्रीगोविर्द्धन पर्वत की कन्दरामें सैं विराजित हूँ। यहाँ शीघ्र आ मुझे प्रकट करो। आप यहाँ पधारे, वहाँके ब्रजवासियोंने कहा कि श्रीगोविर्द्धनपर्वतपर कोई देव है जिनकी ऊर्ध्व झुजा सं० १४६४ में प्रकट हुई थी और मुखारविन्दके दर्शन संवत् १५२५ वैशाख बादि एकादशीको हुए—यह सुन आप पर्वतके ऊपर पधारे वहाँ वही देवदेव श्रीगोविर्धननाथजी कन्दरामेंसे निकलकर प्रकट हुए। आपसे मिलाप हुआ।

श्रीगोविंदनाथजीके प्राकृत्यका प्रमाण गर्गसंहितामें
येनस्वपेण कुण्डोन-इत्यादि१०श्लोक--प्रागृत्यके पूर्वपूष्ट २ में छपे हैं,

॥ इति अमद्भूलभावार्यणांसंक्षिप्तजीवनचरितम् ॥

रात्रि दूरी

॥ परिशिष्टम् ॥

रिवरदीक्षितजीका जन्म १९९७ में हुआ। श्रीगिरिवरजीके पौत्र श्रीविठ्ठल रायजीके मस्तकपर श्रीनाथजीने अपनो श्रीहस्त रखा। उसी समयसे मुख्य-रीत्या निर्विवाद सर्वाधिपत्यपूर्वक भगवत्तेवा आपकेबंशज अद्यापि करते हैं। तिलकायत (टीकेत) यहनापभी उसही समयसे हुआ। श्रीविठ्ठलरायजीके पौत्र श्रीदामोदरजी। [बडे दाऊजी] के समयमें श्रीनाथजीकी इच्छा देशन्तरस्थ भक्तोंके मनोरथपूर्ण करनेकी हुई। इससे उस समय औरज्ञेय बादशाह के उपद्रवके कारण सं० १७२४ में श्रीनाथजी श्रीगोवर्धन परवतसे दण्डात्मधार कोठा जोध पुर आदि अनेक देशोंको पवित्र करते हुए उदयपुराधीश महाराणा राजसिंहजीकी अत्यादरपूर्वक विज्ञासिसे मेवाड़ देशमें पधारे और वहाँ सीहाड़ ग्राममें विराजे। आद्यापि वहाँ ही विराज रहे हैं। आपके विराजनेसे उस ग्रामको श्रीनाथद्वार कहते हैं। पूर्वोक्त श्रीदामोदरजीके पौत्र श्रीगोवर्धनेशजी महाराजने श्रीनाथद्वारमें सातस्वरूप एकत्रितकिए। उसके अनन्तर श्रीगोवर्धनेशजीके पौत्र श्रीदामोदरजी (श्रीदाऊजी) महाराजनेभी सातस्वरूप इकट्ठेकिये। और श्रीनाथजीका वैभव भी अधिक किया। पूर्वोक्त श्रीविठ्ठलभाचार्यजीकी बंशपरम्परामें वर्तमान गोस्वामीतिलक श्रीगोवर्धनलालजी महाराज पन्डहवे हैं। आप भी पूर्वजवत् श्रीनाथजीकी सेवा मीतिपूर्वक करते हैं। तथा स्वमार्गका प्रचार अच्छी रीतिसे कर रहे हैं। आपने भी संवत् १९६६ मे० ५ स्वरूप एकत्रित कर अनेक उत्सव किये हैं। भगवल्लीलाधाम सुप्रसिद्ध श्रीगोकुलमें आपकेही पूर्वजोंको चिरकालसे स्वामित्व था मध्य में उसमें त्रुटि हुई थी उसको दूरकर आपनहीपुनः सर्वांगसे स्वामित्व संपादित किया हे

आपने श्रीनाथद्वारमें विद्याविभाग-संस्कृत पाठशाला हिन्दी अङ्गरेजी स्कूल, प्रेस, स्वदेशीय औषधात्मय, अस्पताल, लायब्रेरी, वगैरह, स्थापित, किए हैं। आप अच्छे २ पण्डितों को आदर पूर्वक रखते हैं। देशविदेशसे आये हुए अनेक वैदिक तथा शास्त्रीय पण्डितोंका आप अच्छा सत्कार करते हैं। बहुत कालसे उचित कारणी सभाका स्थापन आपने किया है, जिसमें अच्छे २ व्याख्यान होते हैं और स्वपार्गीय ग्रन्थोंकी परिक्षा भी होती है परिक्षा देनेवालों को योग्य पारितोषिक मिलता है। आपने श्रीनाथजीके सेवन प्रकारमें भी बहुत कुछ विशेषता की है। आपके चिरंजीव श्रीदामोदरलालजी भी अति सुशील सच्चरित्र शास्त्राभ्यासत्तपर पितृनिदेशपालनपरायण हैं आजकल आप अणुभाष्य तथा निवन्धका अभ्यास कर रहे हैं। सभाओंमें व्याख्यान भी देते हैं। सेवामें आपकी अति आसक्ति है। क० ल०

इति शुभम् ॥

